

मानना तथा वारसंख्या सात से अधिक हो तो उसमें ७ का भाग  
 र लब्ध फलक याग देना और जो अंक शेष रहे, उस अंक को रवि  
 दिक्वार मानना रि.

पल  
अ

३ वर्षसे २५ वर्ष पर्यंतकी सारिणी.

[illegible]

२६ वर्षसे ५० वर्ष पर्यंतकी सारिणी-

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |        |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|--------|
| २६  | २७  | २८  | २९  | ३०  | ३१  | ३२  | ३३  | ३४  | ३५  | ३६  | ३७  | ३८  | ३९  | ४०  | ४१  | ४२  | ४३  | ४४  | ४५  | ४६  | ४७  | ४८  | ४९  | ५०  | गतवर्ष |
| ४९  | ५०  | ५१  | ५२  | ५३  | ५४  | ५५  | ५६  | ५७  | ५८  | ५९  | ६०  | ६१  | ६२  | ६३  | ६४  | ६५  | ६६  | ६७  | ६८  | ६९  | ७०  | ७१  | ७२  | ७३  | ७४     |
| ७५  | ७६  | ७७  | ७८  | ७९  | ८०  | ८१  | ८२  | ८३  | ८४  | ८५  | ८६  | ८७  | ८८  | ८९  | ९०  | ९१  | ९२  | ९३  | ९४  | ९५  | ९६  | ९७  | ९८  | ९९  | वार    |
| ९९  | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | १२२ | १२३ | वटी    |
| १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | पल     |
| १४९ | १५० | १५१ | १५२ | १५३ | १५४ | १५५ | १५६ | १५७ | १५८ | १५९ | १६० | १६१ | १६२ | १६३ | १६४ | १६५ | १६६ | १६७ | १६८ | १६९ | १७० | १७१ | १७२ | १७३ | विपल   |
| १७४ | १७५ | १७६ | १७७ | १७८ | १७९ | १८० | १८१ | १८२ | १८३ | १८४ | १८५ | १८६ | १८७ | १८८ | १८९ | १९० | १९१ | १९२ | १९३ | १९४ | १९५ | १९६ | १९७ | १९८ |        |



## ५१ वर्षसे ७५ वर्षपर्यंतकी सारिणी.

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |        |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------|
| ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | गतवर्ष |
| १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | वार    |
| ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | पल     |
| ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | विपल   |

## ७६ वर्षसे १०० वर्षपर्यंतकी सारिणी.

|    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |        |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|--------|
| ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० | गतवर्ष |
| ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७०  | वार    |
| ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६०  | पल     |
| ०  | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३  | विपल   |



गताऽब्दयोः षट्कांकेषु जन्मवारादियोजनात् ॥

वर्तमानाऽद्वेशे च वारादिः स्यात्सुखान्वितम् ॥ ४ ॥

अर्थ—वर्षसारिणीविषे गत वर्षके कोठे के वार आदि अंकोंमें जन्मवार आदि जोड़ देनेसे वर्तमान वर्षप्रवेश समय सुरुपूर्वक वार आदि ( वार घटी पल विपल ) सिद्ध होतेहैं साठि ६० से अधिक अंक होनेसे पूर्वोक्त रीति अनुसार वारादिक जानना ॥ ४ ॥

### माससाधन.

तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणा स्याद्यतः समः ॥

स एव मासो विज्ञेयो वर्षावेशे बुधैर्ध्रुवम् ॥ ५ ॥

अर्थ—जन्मकालीन सूर्य के समान सूर्य जिस महीनेमें हो वही महीना वर्षप्रवेशका जानना. ऐसा पण्डितोंने निश्चय कियाहै ॥ ५ ॥

### सूर्यांशशुद्धाशुद्धज्ञान.

स्युर्जन्मकालीनदिनाधिपांशैरंशाः समाना यदिवर्षमा-  
नोः ॥ प्रामाण्यमस्मिस्तत एवसिद्धयेन्नोचेदशुद्धाजनि  
भास्करांशाः ॥ ६ ॥

अर्थ—जन्मकालीन सूर्य अंशोंकरके यदि वर्षकालीन सूर्यके अंश समान हों, तो उसी समयको प्रमाणकरके उसी अनुसार सिद्ध करना, यदि समान नहीं तो जन्मकालीन सूर्यांशोंको अशुद्ध जानना, भावार्थ यह कि जब जन्म-कालीन सूर्यांश अशुद्ध जान पड़ें तो प्रथम जन्मसमयके सूर्यांशोंको शुद्धकर लें, तब वर्ष साधन करनेकी इच्छा करै ॥ ६ ॥

### तिथिसाधन.

याताऽब्दवृन्दो गुणवेदरामै ३४३ निर्घ्नः कुरामै ३१  
विहृतो दिनाद्यम् ॥ घसैः सहोत्थैः सहितं खरामै ३०  
भक्तं च शेषात्तिथिरत्र वर्षे ॥ ७ ॥



युक्त करनेपर अंक ४२४।८४ हुये यहां ८४ अंक घट्यात्मक है सो ६० से अधिक है इसकारण ६० से भाग देनेपर लब्ध १ अंक सो तिथ्यात्मक ४२४ में युक्त किया तो ४२५ हुये शेष ३४ रहे, अब ४२५ में ३० का भाग दिया भाग देनेपर शेष अंक ५ शुक्ल प्रतिपदासे पांचमी तिथि पंचमी हुई, वर्षप्रवेश समय पंचमी हुई, यहां उदाहरणमें घट्यात्मक २४ है, सो इष्टकाल घट्यात्मक ३४ अंकसे न्यून है इसकारण गततिथि चतुर्थी हुई अर्थात् शुक्लचतुर्थी मंगलवारको वर्षप्रवेश हुआ ऐसा जानना ॥

## नक्षत्र व योगसाधनोदाहरण.

गतवर्ष ३६ को १० से गुणा किया, तो ३६० हुये, सो दो स्थानमें स्थापित किये, प्रथम स्थानवाले ३६० में २४० का भाग देनेपर लब्धांक १ को दूसरे स्थानवाले ३६० में घटाय दिया तो ३५९ रहे, उनमें जन्मकालीन नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी की अश्विन्यादिसे संख्या १२ संयुक्त करनेपर ३७१ अंक हुये, इनमें सत्ताईसका भाग दिया तो शेष अंक २० अश्विन्यादिसे गणना करनेपर वीसवां पूर्वाषाढ नक्षत्र भयां, तो वर्षप्रवेशसमय पूर्वाषाढ नक्षत्र जानना, योगसाधनार्थ ३५८ में जन्मकालीन वैधृति योग विष्कुंभसे गणना करनेपर संख्या २७ युक्त किये तो ३८६ अंक हुये, इनमें २७ का भाग देनेपर शेष अंक ८ सोविष्कुंभसे गणना करनेपर आठवाँ धृति योग भया, तो वर्षप्रवेश समय धृति योग जानना, उदाहरणमें गणितागत वार, घटी, पल, तिथि, नक्षत्र, योग ये सब जन्मकालीन सूर्याशके दिन ठीक मिलते हैं, इसकारण सूर्याशभी ठीक है और तिथि वार नक्षत्रादिभी ठीक हैं, जन्मकालीन तुलाके सूर्यके अंश २२ हैं, वही तुलागत भानुके २२ अंश, कार्तिक शुदी ४ मंगलवार के दिन ठीक मिलते हैं, अब ग्रह साधन प्रकार आगे वर्णन करेंगे, प्रथम लग्नसारिणी व दशमसारिणी लिखते हैं ॥



(नैमित्त मण्डले लग्नसारिणीयम् पलमा ६ चरखंड ६०४८।२०)

[illegible]







## लग्न सारणीसाधन.

लग्नसारणी बनानेकी रीति वर्णन करता हूँ, सो इस प्रकार कि अपने अपने देशके लग्नप्रमाणसे सारणी बनजातीहै, प्रत्येक साधारण पण्डितभी अपने अपने देशके राशुदयसे विज्ञाहैं, अर्थात् सबको अपने २ देशका लग्न प्रमाण सूचितहै, इस कारण यहां प्रतिस्थानके लग्न प्रमाण लिखनेकी आवश्यकता नहीं, प्रथम पलभा बनाना फिर चरखंड साधनकर लंकोदयसे घटा बढाकर स्वदेशोदय बनाना. इसलिखनेसेभी यहां कुछ प्रयोजन नहीं. हमकोतो केवल राशुदय प्रमाण पुरसे लग्न सारणी साधनकी रीति बतादेनाहै:-

### यथा नैमिषमण्डले लग्नप्रमाण.

वस्विन्दु पक्ष २१८ शशिबाणपक्ष २५१ त्रिशून्यराम  
३०३ त्रि युगाग्रयश्च ३४३॥सप्ताब्धिरामा ३४७ वसुराम  
रामा ३३८ क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥ ९ ॥

### लग्नप्रमाणचक्र.

| मे०  | वृ० | मि० | क० | सि० | क० | तु० | वृ० | ध० | म० | कुं० | मी० | राशि |
|------|-----|-----|----|-----|----|-----|-----|----|----|------|-----|------|
| ३    | ४   | ५   | ५  | ५   | ५  | ५   | ५   | ५  | ५  | ४    | ३   | घटी  |
| ३८११ | ३   | ४३  | ४७ | ३८  | ३८ | ४७  | ४३  | ३  | ११ | ३८   |     | पल   |

अर्थ-मेषका उदय प्रमाण ३१८ पल अर्थात् ३ घटी ३८ पल,



वृषका २५१ पल अर्थात् ४ घटी ११ पल, मिथुन का ३०३ पल अर्थात् ५ घटी ३ पल, कर्कका ३४३ पल अर्थात् ५ घटी ४३ पल, सिंहका ३४७ पल अर्थात् ५ घटी ४७ पल कन्याका ३३८ पल, अर्थात् ५ घटी ३८ पल, अब तुलासे उत्क्रम अर्थात् उलटा जानना; जैसे तुलाका उदय प्रमाण ३३८ पल, वृश्चिकका ३४७, धनुका ३४३, मकरका ३०३ कुंभका २५१ मीनका २१८ पल जानना, जिस राशिका जितने अंशपर सूर्य उदय होता है वही लग्न उतने अंश सूर्योदय समय जानना, जितने पल सूर्योदयसे भुक्त होंगे उतने पल लग्नके भुक्त होंगे, जब लग्नके सम्पूर्ण पल भुक्त होजावेंगे तब दूसरी लग्नका प्रवेश होवेगा, छः लग्न दिनमें और छः लग्न रात्रिमें व्यतीत होती हैं अर्थात् रात्रिदिनमें बारहों लग्न व्यतीत होजाती हैं, एक राशिके तीस ३० अंश होते हैं, सो अपने प्रमाणमें तीसों अंश व्यतीत होजाते हैं, यहां मेषका उदय प्रमाण २१८ पल है इनको ३० अंशोंमें बांट दिया तो एक अंशपर ७ पल १६ विपल मेष लग्न रही, वृष राशिका उदय प्रमाण २५१ पल है तो एक अंशपर ८ पल २२ विपल हुए इसी प्रकार मिथुन आदिके पलात्मक चालनांक जानने. यहां अयनांश २१ मानकर सारणी रची गई है निरयन लग्न सारणी बनानेकी इच्छासे मीनके दशगतांशसे प्रारंभ किया है, सो सारिणीमें स्पष्ट देखलो ७ पल १६ विपलसे स्थापित है आगे तीस अंश अर्थात् मेष राशिके नौ गत दशवें अंश पर्यंत ७ पल १६ विपल संयुक्त करते चले गये हैं, तिस उपरांत वृषराशिके चालनांक ८ पल २२ विपल जोड़ना आरंभ कर दिया है, इसी प्रकार लग्न सारणी बनकर तैयार होगई, सो सारणी की ओर ध्यानदेकर देखनेसे सारणी बनानेकी रीति सुगमतासे समझमें आजाती है॥९



## सारणीपरसे लग्न जाननेकी रीति.

इष्टाऽर्कराश्यंशतले घटीपले स्याभिष्टनाडीपलसंयुतं  
तथा ॥ यद्वाशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च  
कलाऽनुमानतः ॥ १० ॥

अर्थ—इष्ट समय सूर्यराशिके अंशके नीचे घटी पल संख्यामें इष्टकालीन घटी पलको संयुक्त करै, संयुक्त करनेसे जो अंक आवै, वे अंक जिस राशिके अंशके नीचे स्थित होवें वही कलाओंके अनुमानसे लग्न जानना, और उतनेही अंश जानना. यहां कला, अनुमानसे कल्पित करना. यह लग्न अंशसहित जाननेकी साधारण रीतिहै. जैसे—सूर्य तुला राशिके २२ अंशगतहैं, तो सारणीमें तुला राशिके २२ अंशके नीचे घट्यात्मकांक ३८।८२२ हैं, इनमें वर्षप्रवेश समय इष्ट घटी ३४ पल ५९ को संयुक्त किया तो ७३।७।२२ यहां घटी ७३ अंक ६० से अधिक हैं इस कारण ६० से भाग लेनेपर शेष १३ रहे, तो १३।७।२२ अंक मिथुन राशिके १० अंशके नीचे १३।३।२६ हैं यहां ३ पलसे ७ पल अधिकहैं अर्थात् ४ पल अधिक हैं. १० अंशपर सायन कर्कका प्रारंभहै, इस कारण कर्कके ११ पल २६ विपल एक अंशका भोग है तो ४ पलके २१ कला हुये. मिथुन लग्नके १० अंश २१ कला अनुमानसे व्यतीत हुये ॥ १० ॥ विशेष लग्न स्पष्टकी रीति उदाहरणसहित आगे लिखेंगे अब दशम सारणी लिखतेहैं ॥







[illegible]

दशमसर्णी लंकोदयसे बनतीहै, कि जिसप्रकार लग्नसर्णी स्वदेशोदयसे बनतीहै, सो क्रमपूर्वक कहचुं है.



## दशमै सारिणीपरसे दशम लग्नसाधन..

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम् ॥

प्रत्यग्रतेनाढ्यनियान्विशेषो मध्यस्य सिद्धये गणकैः  
प्रदिष्टः ॥ ११ ॥

अर्थ—वर्षप्रवेशकालीन सूर्यराशिके अंशसमान कोठमें जो घटी आदिक अंकहों, सो पूर्वनत घट्यादि अंकोंकरके हीन करना, और जो परनत होतो संयुक्त करदेना, तो हीनकिये अथवा संयुक्त किये अंक जिस राशि अंशके समान कोठमें हों, वही दशम अथवा चतुर्थ लग्न जानना, दशमसे छठी लग्न चतुर्थ होतीहै और चतुर्थसे छठी लग्न दशम होतीहै, यह मध्य लग्नकी सिद्धि पण्डितोंने कही है ॥ ११ ॥ जैसे वर्षकालीन सूर्य तुलाराशिके २२ अंशगत तेईसवें अंशपर वर्तमानहै, तो सारणीमें तुलाके २२ अंशगतके नीचे घट्यादि अंक ३६।५७।३२ हैं यहां नतको इष्टकाल कल्पना किया जाताहै तो वर्षप्रवेशसमय रात्रिका पूर्वनत घट्यादि ८।३७।३० सो हीन किया, तो शेष २८।१५।२ रहे, सारणीमें सिंहकेगत २७ अंशके गत २७ अंशके नीचे २८।१८।४ हैं इसकारण यहां चतुर्थ लग्न सिंहके गतांश २७ हुये, चतुर्थ लग्नमें छः राशियुक्त करनेसे दशम लग्न होवै है. तात्कालिक लग्नसे दशम लग्न कभी नवीं और कभी ग्यारहवींभी आवै है ॥

## वर्षप्रवेशसमय.

गणनाथे रविमुख्यखेचराः कुलदेवीविधिविष्णुशंकरः ॥

उदयांशाधिपतिः प्रकुर्वतां चिरमायुः खलु यस्य पत्रिका ॥ १

श्रीशुभ नुपवर विक्रमार्क सम्वत् १९५६ तत्र श्रीमच्छालिवाहन भूभर्तु-  
शशके १८२१ तत्रयाम्यायने भास्करे शरदृतौ मासोत्तमे कार्तिकमासे शुक्ल  
पक्षे तिथौ चतुर्थ्या भौमवासुरे घट्यः १६ पलानि ३१ ( परतः पञ्चम्यां )  
मूल नक्षत्र घट्यादि ३०।३७ ( तदुपरि पूर्वाषाढमे ) सुकर्माख्ययोग घ-  
ट्यादि २१।३७ तत्परतः धृतियोगः, ववनाम करणे, एवं परिशोधितप-



आङ्ग्यशुद्धे तत्रदिनमानम् घट्यादि २७।१३ रात्रिप्रमाणम् घट्यादि ३२।

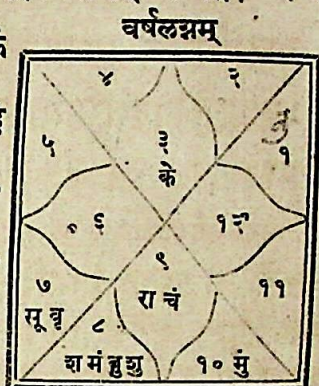
४७ अहोरात्रम् पञ्चि ६० घट्यात्मकम् तुलाऽर्के

गतांशाः २२ तद्दिने श्रीसूर्योदयादिष्टं घट्यादि

३४।५९ तदा मिथुनलग्नोदये स्वस्तिश्रीमत्पण्डि-

त नारायणप्रसादस्य सप्तत्रिंशतिसंख्याकाऽब्दप्र-

वेशः ३७गताब्दगणः ३६.



## ग्रहसाधनार्थ चालन प्रकार.

प्रस्तास्तुयद्ग्रेस्यादिष्टं संशोधयेद्वणम् ॥

इष्टकालो यद्ग्रेस्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम् ॥१२॥

अर्थ—वर्षप्रवेश समय सूर्यादिग्रह स्पष्ट करनेके अर्थ प्रथम चालन प्रकार लिखते हैं, तिथि पत्र (पंचांग) में जो आठ २ दिन के सूर्यादि ग्रह स्पष्ट किये होते हैं उसको प्रस्तार और पंक्ति कहते हैं सो प्रस्तार यदि इष्ट काल (वर्षप्रवेशसमय अथवा जन्मसमय) से आगे होवै, तो प्रस्तारके वार घटी पलमें इष्ट समयका वार घटी पल घटादेवै. जो शेष रहै वह वारादि ऋण चालनहोताहै, तथा जो इष्टकाल आगे होवै और प्रस्तार पीछे होवै तो इष्टकालात्मक वार घटी पलमें प्रस्तारका वार घटी पल घटा देवै, तो शेष अंक वारादि धन चालन होताहै ॥ १२ ॥

## ग्रहस्पष्टीकरण

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषदहता ॥

लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ब्रह्मः ॥१३॥

अर्थ—गत और ऐष्य दिवसोंके अर्थात् ऋणचालन व धनचालनसे ग्रहोंकी गतिको गुणाकरै, फिर गोमुत्रिकारीतिसे साठि ६० का भागदेवै, भागदेनेसे जो अंश कला विकलात्मक लब्ध होवै, उसको पंचागस्थ ग्रहोंमें



घटावै वा युक्तकरै अर्थात् ऋणचालन होवै तो घटावै, और धन चालन होवै तो संयुक्तकरे. युक्त करने व घटानेसे वह तात्कालिक स्पष्ट ग्रह होताहै, यहां वक्रगतिवाला ग्रह और राहु, केतु इन सर्वोंका चालन मार्गी ग्रहोंकी अपेक्षासे विपरीत जानना अर्थात् धनचालनमें ऋणचालन और ऋणचालनमें धनचालन ऐसा क्रम जानना ॥ १३ ॥

## तथा च

गतावधिदिनादिनाविगतमिष्टकालं धनं ऋणं तु खलु  
गम्यपंक्तिषु त्यजेत्स्ववारादिकम्॥अनेनगुणिता गतिश्च  
खरसैर्हृदंशादिकं विपर्ययविलोमगोऽवधिग्रहैः स्फुटा  
संस्कृता ॥ १४ ॥

अर्थ—गत अवधिके दिन आदिकको इष्टकालमें घटायदेनेसे धनचालन होताहै, और गम्यवाली पंक्तिमें अपने ( इष्ट ) वार आदिकको त्यागदेवै अर्थात् घटा देवै. तो ऋणचालन होताहै. इस ऋणचालन अथवा धनचालनको ग्रहकी गतिसे गुणादेवै और गोमूत्रिकारीति अनुसार ६० का भाग देवै जो लब्ध अंशादिक आवै उनको पंचागस्थ ग्रहमें युक्तकरै वा घटावै तो ग्रह स्पष्ट होजाताहै ॥ १४ ॥

## ग्रहसाधनोदाहरण.

यहां प्रस्तार और इष्टकाल एकही दिनकाहै, परंतु प्रस्तार आगे है अर्थात् मिश्रमान अर्द्धरात्रिका ४३ घटी २३ पलपर ग्रहहैं. इष्टकाल घटी ३४ पल ५९ है. पंचागस्थ वार घटी पल ३। ४३।२३ वर्षप्रवेशसमय इष्ट वार घटी पल ३।३४।५९ यहां प्रस्तार आगेहै. इष्ट काल पीछे है. अतः प्रस्तारमें इष्ट काल को घटाया. घटानेसे शेष ०।८।२४ यह

## पंचांगस्थग्रह.

| ति. ४३ मिश्रमान ४३।२३ दि. २७।१३ |    |    |    |    |     |    |    |     |
|---------------------------------|----|----|----|----|-----|----|----|-----|
| उ                               | अ  | उ  | अ  | उ  | उ   | अ  | अ  | उ.अ |
| सू                              | मं | बु | वृ | शु | ज्ञ | रा | के | अ   |
| ६                               | ७  | ७  | ६  | ७  | ७   | ८  | २  | रा  |
| २२                              | १० | १६ | २८ | ७  | २७  | १  | १  | अं  |
| २८                              | १० | ४  | ३० | ८  | ५८  | ३० | ३० | क.  |
| ०                               | ५८ | ३  | ४९ | १४ | ३१  | २१ | २१ | वि  |
| ६०                              | ४२ | ६० | १३ | ७४ | ६   | ३  | ३  | ग   |
| २४                              | ४१ | ३७ | ४५ | ३१ | ३३  | ११ | ११ | वि  |
| मा                              | मा | मा | मा | मा | मा  | व  | व  | व   |
|                                 |    |    |    |    |     |    |    | मा  |



बारादि ऋणचालनांक हैं ॥ सूर्यकी गति ६० कला, विगति २४ विकला-  
तो गति विगतिको ऋणचालनांक बारादि ०।८।२४ से गोमूत्रिकारीत्यानु-  
सार गुणन किया तो ४०।४८०।१६३२।५७६ यह अंक हुये. प्रथम ५७६

में ६० का भाग दिया तो लब्ध

९ शेष ३६ सो ९ को १६३२

में युक्त किया तो १६४१ हुये

इनमें ६० का भाग दिया तो

लब्ध २७ शेष २१ सो २७ को

४८० में युक्त किया ५०७ हुये

इनमें ६० का भाग दिया तो

लब्ध ८ कलात्मक हुये शेष २७

अंक विकलात्मक हुये. यहां ऋण

चालन है इस कारण पंचांगस्थ

सूर्य राश्यादि ६।२२।२८।००

में लब्धांशादि ०।८।२७ को

घटाया तो शेष राश्यादि ६-

२२।१९।३३ यह स्पष्ट सूर्य रा-

श्यादि भया, इसी प्रकार मंगल

आदि की गति विगतिसे गुणाकर

स्पष्ट करनेकी रीति जानना,

|        | वार-  | घटी- | पल   |            |
|--------|-------|------|------|------------|
|        | ०     | ८    | २४   |            |
| ग. ६०  | ०     | ४८०  | १४४० | गुणनफल.    |
| ०      |       | ०    | ८    | २४         |
| वि. २४ |       | ०    | १९२  | ५७६ गु० फ० |
| योग    | ००    | ४८०  | १६३२ | ५७६        |
|        | ८     | २७   | ९    | ३६         |
| कला    | ५०७   | १६४१ |      |            |
|        | २७    | ४४१  |      |            |
|        | विकला | २१   |      |            |

अं- कं. वि.

० । ८ । २७ लब्धांशादि ॥

ऋणचालन है अतः पंचांगस्थ ग्रहमें

अंशादि लब्ध फल घटादिया ॥

६।२२।२८।० पंचांगस्थ रविराश्यादि ।

० । ८।२७ लब्धांशादि ।

६।२२।१९।३३

यह स्पष्ट सूर्य राश्यादि जानना.

यहां उदाहरणमें केवल सूर्य स्पष्टका उदाहरण लिख दिया है. ग्रह स्पष्ट  
करके चक्र आगे लिखेंगे, चन्द्र स्पष्ट करनेकी रीति दूसरी है सो आगे  
लिखते हैं ॥

**चन्द्रसाधनार्थ भयातमभोगप्रकार**

**गतर्क्षनाद्यः खरशेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ॥**



भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निर्जक्षनाज्या सहिता भभोगः  
 १५ चेत्स्वेष्टकाला त्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते ॥ तदेष्ट-  
 कालतो ऋक्षनाज्यः शोभ्या गतर्क्षकम् ॥ भभोगः पूर्वव-  
 त्कार्यः ततः साध्यस्तु चन्द्रमाः ॥ १६ ॥

अर्थ—अब पंचांगस्थ नक्षत्रसे चन्द्रमाके साधन करनेका प्रकार वर्णन करते हैं, तहां प्रथम भयातभभोग भोग साधन कहते हैं, कि—गतनक्षत्रघडियोंको साठिमें घटादेवै. जो घड़ी पल शेष रहें उनको सूर्योदयसे इष्ट घडियोंमें जोडदेवै, जोडनेसे जो अंकहों उनकी भयातसंज्ञा होती है, और अपने नक्षत्रकी घडियोंको साठिसे घटाईहुई नाडियोंमें जोडदेनेसे भभोग होता है ॥ १५ ॥ यदि इष्टकालसे पहलेही नक्षत्र समाप्त होजावै तो इष्टकालघडियोंमें नक्षत्र घटी पल घटादेनेसे भयात होता है, और गतनक्षत्रकी घडियोंको साठिमें घटाकर उसीमें परदिनवाले नाडियोंमें जोडदेनेसे भभोग होजाता है, इस प्रकार भयात व भभोग बनाकर तत्काल चन्द्रमाका साधन करना ॥ १६ ॥

### तत्कालचन्द्रसाधन.

गताभघटिका स्वतर्कगुणिता भभोगोद्धृता युता च भ-  
 गतेन षंष्टि गुणितेन द्विघ्नीकृता ॥ नवाप्तलवपूर्वकेशशि-  
 भवेत्तुतत्पूर्वकैर्नभांबरवियद्गजाब्धि ४८०००षु भजेज-  
 वाकीर्तिता ॥ १७ ॥

अर्थ—नक्षत्रकी गतघटिका अर्थात् भयातको ६० से गुणाकरै फिर उसमें भभोग अर्थात् इष्ट नक्षत्रकी सम्पूर्ण घडियोंसे भाग देवै. भाग देनेसे जो लब्ध अंक मिलै उन घटी, पल, विपलात्मक स्पष्ट भयातरूप अंकोको साठि ६० से गुणेहुत अभिनी आदि गत नक्षत्रसंख्यामें जोडदेवै, और देने करै अर्थात् दोसे गुण देवै, फिर नवसे भागलेवै. भाग लेनेपर जो लब्धांक मिलै सो अंश जानै. शेष बचे हुयेको ६० से गुणाकरै, उसमेंभी नवका भाग देवै लब्धांकको कला जानै, फिर शेष अंकको ६० से गुणा-



कर नवका भाग देनेपर लब्धांकको विकला जानै अंशोंमें ३० का भाग देकर राशि निकाललेवै, अब गतिल्यावनेका प्रकार कहतेहैं कि ४८००० को ६० से गुणाकरदो भोगसे भागलेवै, भागलेनेपर जो लब्ध अंक मिलें उनको चन्द्रमाकी गतिजानै, शेषको ६० से गुणाकरके भोगसे भागलेवै, जो लब्धअंक मिलें वह विगति जानै, इस प्रकार चन्द्रमाके स्पष्ट करनेका प्रकार वर्णन किया, आगे उदाहरण लिखतेहैं ॥ १७ ॥

### चन्द्रमासाधनोदाहरणः

अब चन्द्रमाके स्पष्ट करनेका उदाहरण वर्णन करतेहैं—वर्षप्रवेशसमय इष्टघटी ३४ पल ५९ मूल नक्षत्र घटी ३० पल ३७ यहां नक्षत्र इष्टकालसे पहलेही समाप्त होगया इसकारण इष्टघटी ३४ पल ५९ में मूलनक्षत्र घटी ३० पल ३७ को घटादिया, तो शेष घटी ४ पल २२ रहे. यह भयात हुआ. अर्थात् वर्षप्रवेशसमय पूर्वाषाढ नक्षत्रकी ४।२२ भुक्तघटी और पल जानना. अब भोग अर्थात् पूर्वाषाढका सर्वर्क्ष ल्यावनाहै. तो गतनक्षत्र मूलकी घटी ३० और पल ३७ को ६० में घटाया. शेष २९।२२ रहे. इनको परदिन पूर्वाषाढनक्षत्र घटी २७ पल ३७ में युक्तकिये तो ५७।०० हुये यह भोग हुआ. अब भयात व भोग घटीपलके पल बनाकर चन्द्रमाका साधन करना, भयातके पल २६२ और भोगके पल ३४२० हुये अब चन्द्रसाधनार्थ भयात २६२ को ६० से गुणाकिया तो १५७२० यह भाज्यांक हुये. इनको भोगसे उद्धृत किया अर्थात् इनमें भोग ३४२० भाजकांसे भाग लिया तो लब्ध ३ घट्यात्मक अंक हुये, शेष २०४० को ६० से गुणाकिया तो भाज्यांक १२२४०० हुये इनमें भाजकांक ३४२० से भागलिया तो लब्ध ३५ पलात्मक अंक हुये शेष २७०० को ६० से



गुणाक्रिया तो भाज्यांक १६२००० हुये इनमें भाजकांक ३४२० से भाग-  
 लिया तो लब्ध ४७ विपलात्मक अंक हुये. अर्थात् ४।३५।४७ यह घ-  
 व्यादि स्पष्ट भयात् हुआ. इसमें अश्विन्यादिगतनक्षत्र (मूल) संख्या १९  
 कां ६० से गुणाकर ११४० करनेपर ११४४।३५।४७ हुये इनको द्विगुणा  
 किया तो २२८८।७०।९४ ये अंक हुये यहां ९४।६० से अधिकहैं इस  
 कारण ६० से चढायातो शेष ३४ लब्ध. १ को ७० में जोड़ दिया तो  
 ७१ हुये इसमेंभी ६० का भागदिया तो शेष ११ लब्ध १ तो लब्ध १  
 को २२८८ में जोड़ दिया तो २२८९ हुये, अब २२८९ में ९ का भाग  
 दिया तो लब्ध २५४ अंशात्मक अंकहुये. शेष ३ को ६० से गुणाकरके  
 ११ जोड़ दिये तो १९१ हुये इनमें ९ का भाग दिया तो लब्ध २१  
 कलाहुये शेष २ को ६० से गुणाकरके ३४ जोड़दिये तो १५५ हुये.  
 इनमें ९ का भागदिया तो लब्ध १७ विकला हुये. अंशांक २५४ में ३०  
 का भागलेनेपर लब्ध ८ राशि और शेष १४ अंश हुये. तो ८।१४।२१।  
 १७ यह राश्यादि स्पष्ट चन्द्रभया. अब गतिविगति प्रकार कहतेहैं कि  
 ४८००० को ६० से गुणाकिया तो २८८०००० हुये इनमें भोग ३४२०  
 से भागलिया तो लब्ध ८४२ गति और शेष ३६० को ६० से गुणा  
 किया तो लब्ध ६ विगति हुई. अर्थात् चन्द्रमाकी कलात्मक गति और  
 विकलात्मक विगति ८४२।६ हुई

## भावसाधनार्थ अयनांशसाधन.

शाकेवेदाब्धिवेदो ४४४नः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥  
 तथाच ॥ भूनेत्रवेदो ४२१ नशकस्त्रिनिघ्नो व्योम्नां  
 भ्रनेत्रैर्विहृतोऽयनांशाः ॥ त्रिघ्नोऽर्कराशिः स्वदलेन  
 युक्तस्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्याः ॥ १८ ॥



अर्थ—अब लग्नादि द्वा-  
दश भावसाधनके अर्थ अ-  
यनांश साधन प्रकार लि-  
खतेहैं. शालिवाहन शा-  
केमें ४४४ घटाय देवै  
और साठि ६० का भाग  
लेवै, भाग लेनेसे लब्धां-  
कको अंश और शेषको  
कला जानना. उदाहरण—  
इष्ट शाके १८२१ में ४४४  
घटाया तो १३७७ शेष  
रहे. इनमें ६० का भाग-

| चालनं ऋणं वारादि ००८।२४<br>भयातघट्यादि ४।२२ भमोगघट्यादि ५७।०० |     |    |    |    |    |    |    |    |           |
|---|-----|----|----|----|----|----|----|----|-----------|
| अथ सूर्योदयो ग्रहाः रूपष्टाः सजवाः                            |     |    |    |    |    |    |    |    |           |
| उ   | उ   | अ  | उ  | अ  | उ  | उ  | अ  | अ  | उदयास्त   |
| सू  | चं  | मं | बु | वृ | शु | श  | रा | के | ग्र.      |
| ६   | ८   | ७  | ०  | ६  | ७  | ७  | ८  | २  | ग्र.      |
| २२  | १४  | १० | १५ | २८ | ७  | २७ | १  | १  | अं.       |
| १२  | २१  | ५  | ५५ | २८ | ६  | ५७ | ३० | ३० | क.        |
| ३३  | १७  | ०  | ३४ | ५४ | ४२ | ३६ | ४७ | ४७ | वि.       |
| ६०  | ८४२ | ४२ | ६० | १३ | ७४ | ६  | ३  | ३  | ग.        |
| २४  | ६   | ४१ | ३७ | ४५ | ३१ | ३३ | ११ | ११ | वि.       |
| मा  | मा  | मा | मा | मा | मा | मा | व  | व  | चक्रमार्ग |

लिया. भाग लेनेसे लब्ध २२ अंश शेष ५७ कला अर्थात् २२।५७ ये  
अयनांश ग्रहलाघवीय जानना, सिद्धान्तवेत्ता प्रायः यही अयनांश ग्रहण  
करतेहैं, परन्तु एतद्देशीय सामान्य तथा विदेशीय पण्डितगण नीचे लिखे  
प्रकार अयनांश सर्वत्र ग्रहण करतेहैं कि इष्ट शाकेमें ४२१ घटादेवै घटा-  
नेसे जो अंकों उनको तीनसे गुणा करके दोसौ २०० का भागलेवै भाग  
लेनेसे लब्धांकको अंश जानै शेषको साठि ६० से गुणाकर २०० से भाग  
लेनेपर लब्धांकको कलाजानै शेषको ६० से गुणाकर २०० से भागलेनेपर  
लब्धांकको विकला जानै इसप्रकार अयनांश साधन करै. जिस महीनेका  
तत्काल अयनांश ल्यावनाहोय तो उस महीनाकी सूर्यराशिको तिगुनाक-  
रके उसका आधा जोडकर विकला जानने और अयनांशके विकलात्मकमें  
संयुक्त करदेवै तो तात्कालिक अयनांश होतेहैं उदाहरण इष्ट शाके १८२१  
में ४२१ घटाये तो १४०० रहे. इनको तिगुनाकिया तो ४२०० हुये  
इनमें २०० का भागलिया तो लब्ध २१ अंश हुये शेष ० तो अयनांश



२१।०।० भये. यहां कार्तिकमासमें तुला राशिके सूर्य हैं तात्कालिक अयनांश ल्यावनाहै तो तुलाराशिकी संख्या ७ को तिगुनाकिया तो २१ हुये इसका आधा १०।३० जोड़दिये तो ३१।३० यहविकलात्मक ३१।३० को अयनांशके विकलात्मक ०में जोड़दिये तो तात्कालिक २१।०।३१ ये अयनांश भये. यहां विकलासे आगेका अंक ३० निरर्थकहै, इसकारण त्यागदिया इसप्रकार अयनांश साधनकरके आगे लग्नसाधनप्रकार वर्णन करतेहैं ॥ १८ ॥

## लग्नसाधन

यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तलग्नमुदये भवेत् ॥

तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ १९ ॥

अर्थ—जिस राशिके सूर्य होय वही लग्न सूर्योदयसमय होती है और उससे सातवीं लग्न सूर्यास्तसमयमें होती है उसीको अस्तलग्न कहाहै ॥ १९ ॥

तत्कालाऽर्कः सायनस्तस्य भोग्यैर्भागैर्निघ्नः स्वोदयः  
स्वाग्निभक्तः ॥ भोग्यंजह्यादिष्टनाडीपलेभ्यः शेषादग्न्या  
त्स्वोदयांश्चावशेषम् ॥ २० ॥ त्रिंशन्निघ्नमशुद्धात्तभा-  
गाद्यं मेषपूर्वकैः ॥ अशुद्धा आग्रहैर्युक्तं लग्नं स्याद्य-  
यनांशकम् ॥ २१ ॥

अर्थ—अब भोग्यकालसे लग्नसाधनप्रकार लिखतेहैं कि—जिस सम-  
यका लग्न बनाना चाहै उस समयके स्पष्टसूर्यमें तत्काल अयनांश  
युक्त करै, तो उसकी सायनार्कसंज्ञा होतीहै, उस राश्यादि सायनार्क-  
मेंसे राशिका त्याग करके जो अंशादिक फल रहै उसको भुक्त कहतेहैं,  
उस भुक्तको ३० अंशमें कम करदेनेसे शेषको अंशादि भोग्य फल क-  
तेहैं, उन भोग्यांशको स्वदेशीय उदयराशिप्रमाणसे गुणा करै जो  
गुणाकार आवै उसमें ३० से भाग देवै, भागदेनेसे जो लब्ध अंक



विद्यद्रामा, कर्कटभाषाटीकासहित । द्विचूताग्रनयः ॥ ( २९ )

वाराणसि लिखितः सिंहे ॥ कृन्वा वाराणसि ग्रन्थः ॥  
मिले सो सूर्यके भोग्य अंक पलादि होतेहैं, उस भोग्यको इष्ट घटी पलोंमें  
घटाय देवै, घटादेनेसे जो शेष रहे उसमें आगेके स्वदेशीय उदयराशि-  
योंको घटावै, जिस राशिका उदय प्रमाण न घटे वही अशुद्धराशिहुई, अब  
घटानेसे जो पलात्मक अंक शेष रहैं, उनको तीससे गुणाकरके अशुद्धरा-  
शिके उदयप्रमाणसे भागलेवै भागलेनेसे जो लब्ध अंशादि मिलैं उन अंशा-  
दिकोंको मेषादि अशुद्धराशिसे पूर्वराशियोंकी संख्यामें युक्त करदेवै और  
अयनांशोंको घटायदेवै तो राश्यादि स्पष्ट लग्न होतीहै ॥ २० ॥ २१ ॥

भोग्याऽल्पकालात्स्वत्रिघ्नात्स्वोदयाम्लवादि  
युक्त ॥ रविरेवभवेलग्नं सषड्भार्कान्निशातनुः ॥ २२ ॥

अर्थ—जो भोग्यकाल थोडा होवै अर्थात् इष्टघटी पलोंमें नहीं घटे तो  
इष्ट घटीपलको तीस ३० से गुणाकरै, अनन्तर सायनसूर्यके राश्युदयसे  
भागलेवै, भाग लेनेसे जो अंशादिक लब्ध मिलैं उनको सूर्यमें संयुक्त कर-  
देवै, संयुक्त करदेनेसेही लग्न स्पष्ट होजातीहै, और रात्रिके विषे दशम ल-  
ग्नके साधनमें छे राशियोंको सूर्य में युक्त कर पूर्वोक्त प्रकारसे दशम लग्न  
सिद्ध होतीहै ॥ २२ ॥

लग्नसाधनोदाहरण.

अब लग्न बनावनेका उदाहरण लिखतेहैं—स्पष्ट सू-  
र्यराश्यादि ६।२२।१९।३३ इसमें तात्कालिक अय-  
नांश २१।००।३१ युक्तकरनेसे ७।१३।२०।४ यह सा-  
यनार्क तात्कालिक भया. राशि ७ को छोडकर मुक्त  
अंशादि १३।२०।४ को ३० में घटाय तो १६।३९।

५६ यह भोग्यांश हुये, अब सायनाऽर्क वृश्चिक राशिका है, तो वृश्चिकका  
उदयप्रमाण ३४७ पलहैं इनसे भोग्यांशादिको गुणदिया ( और विपरीत व

| स्वदेशीयप्रमाण |     |    | ऊपर |
|----------------|-----|----|-----|
| मे             | २१८ | मी | २२९ |
| वृ             | २५१ | कू | २५१ |
| मि             | ३०३ | म  | ३०४ |
| क              | ३४३ | घ  | ३४३ |
| सि             | ३४७ | वृ | ३४७ |
| क              | ३३८ | तु | ३३८ |



प्रतिपल को ६० से चढा दिया ) तो ५७८२।५६।५२ हुये इसमें ३० का भाग लिया, भागलेनेसे १९२।४५।५३ यह सूर्यके भोग्य पलादि अंक हुये। इनको इष्टनाडी पलको पलात्मक किया तो २०९९ हुये, इनमें सूर्यका भोग्यपलादि घटाया घटानेसे शेष १९०६।१४।७ हुये फिर इनमें वृश्चिकके आगे धनके उदय ३४३ को घटाया, घटानेसे १५६३।१४।७ शेष रहे फिर धनके आगे मकरके उदय ३०३ को घटाया, घटानेसे १२६०।१४।७ शेष रहे, फिर मकरके आगे कुम्भके उदय २५१ को घटाया, घटानेसे १००९।४।७ शेष रहे। अनन्तर कुम्भके आगे मीनके उदय २१८ को घटाया घटानेसे ७९१।१४।७ शेष रहे। तदनन्तर मीनके आगे मेषके उदय २१८ को घटा दिया तो ५७३।१४।७ शेष रहे, फिर मेषके आगे वृषके उदय २५१ को घटाया, घटानेसे ३२२।१४।७ शेष रहे, फिर वृषके आगे मिथुन के उदय ३०३ को घटाया, तो १९।१४।७ शेष रहे, अब इनमें मिथुनके आगे कर्क का उदय ३४३ पल घटनहीं सकता इस कारण कर्ककी अशुद्धसंज्ञा हुई, इससे शेष १९।१४।७ को तीस ३० से गुणाकर दिया, गुणाकरनेसे ५७७।३।३०। हुये, इसमें अशुद्धसंज्ञक कर्कके उदय ३४३ से भाग दिया, भाग देनेसे १।४०।५६ यह अंशादि ( अंश कला विकला ) लब्ध अंक हुये, इनमें अशुद्धोदय कर्कसे पूर्व मिथुन राशिकी संख्या ३ को जोड़ दिया, तो ३।१।४०।५६ यह राशिसहित अंशादि हुये। इनमें तात्कालिक अयनांश २१।००।३१ को घटा दिया तो २।१०।४०।२५ यह राश्यादि स्पष्ट लग्न भया, अर्थात् वर्षप्रवेशसमय मिथुनलग्नके १० अंश, ४० कला, २५ विकला हुये, यह भोग्यांशादि परसे लग्न स्पष्ट करनेका उदाहरण कहा, यदि भुक्तांशादि परसे लग्नसाधन करनेकी इच्छा हो तो गणित तो पूर्वोक्त अनुसार करना, केवल भेद इतना है, कि-भुक्तांशोंको ग्रहणकर स्वोदय राशि-प्रमाणसे गुणाकर फिर उसमें तीसका भाग देवै। भाग देनेसे लब्ध अंक सूर्यके भुक्तपलादि हुये, उनको इष्टकाल घटी पलमें घटा-



कर शेषांकोंमें उदयराशिसे पिछाडीके उदय राशियोंको घटावै, घटाते घटाते जिस राशिका उदयप्रमाण न घटे वह राशि अशुद्ध हुई, और जिस राशितक घटाया वह शुद्धराशि हुई, घटानेसे शेष अंकोंको तीससे गुणा करदेवै, फिर उसीमें अशुद्धोदयसे भागलेवै. भाग लेनेसे जो लब्ध अंशादि मिलें, उनको अशुद्धोदयकी राशिसंख्यामें घटादेवै, अनन्तर अयनांशोंको उसमें घटाय देवै, तो शेष राश्यादि स्पष्ट लग्न होतीहै, और यदि भुक्तपलादि अयने इष्ट घटीपलमें न घटें तो इष्ट पलोंको तीससे गुणा करके सायनांक राश्युदयसे भागलेवै, जो लब्ध अंशादिक मिलें उनको सूर्यमें घटाय देवै तो स्पष्टलग्न होतीहै,—यहां रात्रिलग्न करनाहो तो छे राशि युक्तकर देवै ॥

### चतुर्थ व दशमलग्नसाधनार्थ नतसाधन.

पूर्व नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविही-  
नम् ॥ दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युराशिखण्डं त्वपरं  
नतं स्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ—अब चतुर्थ व दशम लग्नसाधनके अर्थ नतसाधन कहतेहैं. दिन-  
रात्रिखंडमें दिनरात्रिकी इष्टकालघटी घटजानेसे पूर्वनत होताहै, अर्थात्  
दिनार्धमें दिनगत इष्ट घटी घट जावै तो दिवा पूर्वनत होताहै, और रात्रि-  
खण्ड ( रात्र्यर्थ ) में रात्रिगत घटी घटजावै तो रात्रिका पूर्वनत होताहै,  
तथा दिनरात्रिकी इष्ट घटीमें दिनरात्रिखण्ड घटजावै तो दिनरात्रि परनत  
होताहै, अर्थात् दिनगत इष्टघटीमें दिनार्ध घटजावै तो दिवाका परनत,  
और रात्रिगत इष्टघटीमें रात्रिखण्ड घटजावै तो रात्रिपरनत होताहै ॥ २३ ॥  
यहां यह वा तत्स्मरणरहे कि जहां रात्रिगत घटी कहा, वहां सूर्यास्तके  
उपरान्त गतघटी लेना, दिनरात्रिका विभाग करके नतसाधन करना,  
क्योंकि मध्यान्ह वा मध्यरात्रिके बिन्दुसे पूर्व वा परके नीचेके भागका  
नाम नतहै, इस नतको २० में घटानेसे शेष घट्यादि उन्नत होताहै ॥



## नतोदाहरण.

दिनमान घटीपल २७।१३ दिनार्ध घटी पल १३।३६।३० रात्रिप्रमाण  
३२।४७ रात्र्यर्ध १६।२३।३० यहां वर्षप्रवेशसमय रात्रिगत घटी पल  
७।४६ को रात्र्यर्ध घटीपल १६।२३।३० में घटाया तो शेष घट्यादि  
८।३७।३० यह रात्रिपूर्वनत भया, इसको ३० में घटाया तो शेष २१।२२।  
३० यह पूर्वोन्नत घट्यादि भया.

रामल  
साध  
र्थलं  
६२  
के  
म  
७८  
६६  
२३  
२३  
६६  
७८  
केशवाचार्यके मतसे नतोन्नतपूर्वक दशम  
चतुर्थभावसाधन.

रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाहोगतं शेषकं विश्लेष्यं  
खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्चयुतं चोन्नतम् ॥ यत्पूर्वोन्नत-  
षड्युत्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो यल्लंकोदयकैश्चल-  
ग्रामिव तन्माध्यंसषड् सुखम् ॥ २४ ॥

अर्थ—केशवाचार्यके मतसे नतोन्नतद्वारा दशम व चतुर्थ भावका साधन  
वर्णन करतेहैं, कि दिनमें पूर्वनत दिनमें पश्चिमनत, रात्रिमें पूर्वनत, रात्रिमें  
पश्चिमनत, ऐसा चार प्रकारका नत होताहै, तहां अर्धरात्रिके उपरान्त शेष  
रात्रिमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पूर्वनत होताहै, अर्धरात्रिके पूर्व रात्रि-  
गतमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पश्चिमनत होताहै, ऐसेही दिनगत और  
शेषका दिनार्धके साथ अन्तर करना अर्थात् दिनगत घटी आदिकको  
दिनार्धघटीमें घटानेसे दिनका पूर्वनत, और दिनशेष अर्थात् मध्य आदिक  
दिनके ऊपरका इष्ट होय तो इष्टकाल घटी आदिकमें दिनार्ध घट्यादिकको  
घटादेवै तो दिनका पश्चिमनत होताहै. उस नतको ३० में हीन करै तो  
वैसाही उन्नत होताहै; अर्थात् पूर्वनत कम करै तो पूर्वोन्नत और पश्चिमनत  
कम कियाहोती पश्चिमोन्नत होताहै—जैसे रात्रिगत घटीपल ७।४६ में  
दिनार्धघटीपल १३।३६।३० युक्त किया तो २१।२२।३० यह रात्रिका



घट्यादि पश्चिमनत भया. इस नतको ३० में कम किया तो ८१३७१३० यह पश्चिमोन्नत भया. यदि पूर्वोन्नत आयाहोय तो उन्नतको इष्ट काल मानकर तात्कालिक सूर्यमें ६ राशि युक्त करके लंकोदयप्रमाणसे पूर्वोक्त लग्नसाधनके समानरीतिसे दशमसाधन करै और पश्चिमनत आयाहो तो नतको इष्टकाल कल्पना करके, लग्नके प्रमाण लंकोदयसे दशमभाव साधन करै, दशमभावमें ६ राशि युक्त करनेसे चतुर्थभाव होताहै, इस श्लोकमें 'अन्होगतं शेषकं' यहां 'शेषकं' इस शब्दसे अनेक पण्डित दिनकी शेष घटी लेकर नत साधन करतेहैं, ऐसाभी ठीकहै, मध्यदिनके उपरान्त वर्षप्रवेश होनेपर इष्टकालकीभी यहां शेषसंज्ञा मानीहै, उसमें दिनार्द्ध घटजानेसे दिनका पश्चिमनत होताहै, इसका प्रमाण पूर्व लिखचुकेहैं जो नीलकंठ दैवज्ञने मानाहै, दूसरा प्रमाण पद्धतिचिंतामणिका हायनरत्नमें देखो, 'यथा' दिनार्द्धयुग रात्रिगतावशेषनाड्यो नतं पश्चिमपूर्वकं स्यात् ॥ द्युयातहीनं द्युदलं नतं प्राग् द्युखण्डहीने द्युगतं परं तत् ॥ १ ॥ " अर्थः—रात्रिगत घटीपलमें दिनार्ध घटीपल युक्त करै तो रात्रिका पश्चिमनत, और रात्रिशेष घटीपलमें दिनार्ध घटीपल युक्तकरै तो रात्रिका पूर्वनत होताहै, तथा दिनार्ध घटीपलमें दिनगत घटीपल घट जानेसे दिनका पूर्वनत और दिनगत घटीपलमें घटजावै तो दिनका परनत होताहै ॥ २४ ॥

मध्याह्ने चार्द्धरात्रे वा स्वेष्टकालो यदा भवेत् ॥

तदा तात्कालिकस्सूर्यो भवेलग्नं स्वतुर्यकम् ॥ २५ ॥

अर्थ—जो ठीक मध्याह्नमें अपना इष्टकालहो तो तात्कालिक स्पष्ट सूर्य दशमभाव होताहै और जो ठीक मध्यमरात्रिसमय अपना इष्ट कालहो तो तात्कालिक सूर्य चतुर्थभाव होताहै ॥ २५ ॥

दशम व चतुर्थ भाव साधनोदाहरण.

अब दशम व चतुर्थ भावसाधनका उदाहरण लिखतेहैं, लग्नसाधनकी रीतिसे दशमभाव साधन कियाहै, केवल भेद इतनाही है कि, लग्नसाधनमें स्वदेशोदय लग्नका प्रमाण लियाजाताहै, और दशमसाधनमें लंकोदयका प्रमाण लियाजाताहै, और इष्टकाल घटीपलके स्थानमें नत व उन्नतकालकी



घटीपलका ग्रहणहै, तहां लग्नसाधनके उदाहरणमें भोग्यांशोपरसे लग्नसाधनका क्रम दर्शायाहै, अब भुक्तांशोपरसे दशमसाधनका उदाहरण लिपिबद्ध करतेहैं, तात्कालिक सायनाऽर्क ७१३।२०।४ राशि ७ को छोड़कर भुक्त अंशादि १३।२०।४ हुये, सायनाऽर्क वृश्चिक राशिहै, तो यहां रात्रिका लग्न साधन करनाहै- इस कारण ६ राशि जोड़ देनेसे वृषराशि हुई, वृषका लं-कोदयमान २९९ फलहै, इनसे भुक्तांशादिको गुणा दिया (और विपल

प्रतिपल को ६० से चढा दिया) तो पलादि

३९८७।६।३६ हुये, इसमें ३० का भाग लिया,

भागलेनेसे १३२।५४।१३ यह सूर्यके भुक्त पलादि

अंक हुये, इसको पूर्वत ८।३७।३० की पला-

त्मक संख्या ५१७।३० में घटायातो ३८४।३५.

।४७ शेष रहे, इसमें वृषसे पीछेकी राशि मेषके

| लंकोदय लग्नप्रमाण. |     |          |
|--------------------|-----|----------|
| मेष.               | २७८ | मीन.     |
| वृषम.              | २९९ | कुंम.    |
| मिथुन.             | ३०३ | मकर.     |
| कर्क.              | ३०३ | धन.      |
| सिंह.              | २९९ | वृश्चिक. |
| कन्या.             | २७८ | तुला.    |

लंकोदयमान २७८ को घटाया तो १०६।३५।४७ शेष रहे. इसमें मीनका उदय २७८ नहीं घटता इसकारण शेष १०६।३५।४७ को ३० से गुणाकर दिया तो ३१९७।५३।३० हुये. इसमें अशुद्ध मीनके मान २७८ से भाग-दिया तो लब्ध अंशादि ११।३०।११ हुये, यहां ऋण लग्न क्रियासे दशम-साधन कियाहै, इसकारण एकराशि अर्थात् ३० अंशोंमें लब्धांशादि ११।३०।११ को घटायातो १८।२९।४९ रहे, सो मीनराशिके साथ स्थापित किये तो ११।१८।२९।४९ अथवा अशुद्धोदय मीनकी संख्या मेषसे बार-हवीं है तो बारह राशिमें घटाया तो ११।१८।२९।४९ हुये. इसमें अय-नाशोंको घटाया तो १०।२७।२९।१८ यह अंशादि स्पष्ट दशम भाव भया, यहां सूर्यराशिमें छे राशि न जोड़कर इसी क्रियासे चतुर्थ भाव होता, कारण यह कि, चतुर्थ व दशममें केवल छेराशिका अन्तर है अन्यकुछभी भेद नहीं है, दशमभावमें छे राशि जोड़ देनेसे ४।२७।२९।१८ यह चतुर्थभाव भया।

१ यद्यपि विनानतकेभी दशमभाव साधनकी रीति ताजिक ग्रन्थोंमें कही है और यहां उदाहरण सहित लिखना योग्यथा परंतु हमने इस ग्रन्थमें सावकाशाभावसे न लिखकर द्वितीयावसे लिखना विचाराहै ॥ २ भुक्तांशो परसे लग्न साधन करनेमें पीछेकी राशि घटाई जाती है अर्थात् सब क्रिया ऋणलभवत् करनी होतीहै ॥







[illegible]



यह उपरोक्त दशम स्पष्ट सारणी यद्यपि किसी एक देशके स्वोदय मानसे रची गई है. इस कारण कला विकलामें समान भावको प्राप्त नहीं होती तथापि सामान्य पण्डितोंकी अवश्यमेंव सहायक है. अर्थात् स्पष्ट दशभाव जो गणितसे आता है उसमें और सारणीप्रोक्त दशमस्पष्टमें केवल कलाओंका अन्तर आता है. और कलाओंके अन्तरसे कभी कभी एक अंश इधर उधर हो जाता है. परन्तु यदि सूक्ष्मभावसे देखा जावे तो कलाओंमेंभी नहीं, कुछ विकलाओंमें अन्तर आता है. इस कारण यह दशमस्पष्ट सारणी सर्वहितकारी है ॥

### धनादिभावसाधन.

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषषड्भि ६ विभाजितम् ॥ राश्यादि योजयेल्लग्न्ये सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः ॥ २६ ॥ सन्धिः षडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः ॥ धनभावः षडंशाढ्यः सन्धिर्धनतृतीययोः ॥ २७ ॥ षडंशः संयुतः सन्धिस्तृतीयो भाव उच्यते ॥ षडंशाढ्यस्तृतीयः स्यात्सन्धिर्भातृचतुर्थयोः ॥ २८ ॥ तृतीयसन्धिरेकाढ्यस्तुर्यसन्धिर्भवेदिह ॥ द्वाढ्यस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवेत्स्फुटः ॥ २९ ॥ त्र्याढ्यो द्वितीयसन्धिः स्यात्सन्धिः पञ्चमभावजः ॥ धनभावो वेदयुतो रिपुभावः प्रजायते ॥ ३० ॥ लग्नसन्धिः पञ्चयुतः सन्धिः स्याद्विपुभावजः ॥ लग्नाद्याः सन्धिसहिता भावाः षड्राशिसंयुतः ॥ सप्तमाद्या भवन्तीह भावाः सर्वे ससन्धयः ॥ ३१ ॥

अर्थ—लग्नको चतुर्थभावमें घटानेसे जो शेषांकहों उनमें छे ६ का भागदेवै अर्थात्, लग्न व चतुर्थके अन्तरका षष्टांश ( छठा भाग ) लेवै वह षष्टांश



राश्यादि लग्नमें जोड देवै तो लग्नकी विरामसन्धि और धनभावकी आरंभ-  
सन्धि होती है ॥ २३ ॥ उस सन्धिमें षष्ठांश युक्त करनेसे धनभाव स्फुट  
होता है, धन भावमें षष्ठांश जोड देनेसे धनभावकी विराम ( समाप्ति ) सन्धि  
और तृतीयभावकी आरम्भसन्धि होती है ॥ २७ ॥ उस सन्धिमें षष्ठांश युक्त  
करै तो उसको तृतीयभाव कहा है. फिर तृतीयभावमें षष्ठांश जोड देवै तो  
तृतीयभावकी विराम और चतुर्थभावकी आरम्भसन्धि होती है ॥ २८ ॥ और  
तृतीयभावकी सन्धिमें एक जोडदेवै तो वह चतुर्थभावकी सन्धि होती है, तृतीय  
भावमें दो जोडदेनेसे पुत्र- ( पंचम ) भाव स्फुट होता है ॥ २९ ॥ द्वितीयभा-  
वकी सन्धिमें तीन जोड देनेसे पंचमभावकी सन्धि होती है, धनभावमें चार  
युक्त करनेसे रिपु ( छठा ) भाव होता है ॥ ३० ॥ लग्नकी सन्धिमें पांच  
युक्त करै तो रिपुभावकी सन्धि होती है. सन्धि सहित लग्नादिक भावोंमें छे  
छेराशि संयुक्त करनेसे सप्तम आदिक सब भाव सन्धिसहित होते हैं ॥ ३१ ॥

## धनादिभावसाधनोदाहरण.

लग्नराश्यादि २१०।४०।२५ चतुर्थ भाव राश्यादि ४।२७।२९।१८ चतु-  
र्थमें लग्नको घटाया अर्थात् लग्न चतुर्थका अन्तर २१६।४८।५३ इसमें  
छेका भाग दिया अर्थात् षष्ठांश ( छठाहिस्सा ) निकाला तो ००।१२।४८।-  
८।५०। यह अंक राश्यादि ( षष्ठांशसंज्ञक ) हुये, इस षष्ठांश ००।१२।४८।-  
८।५० को लग्न २१०।४०।२५ में युक्त किया तो २।२३।२८।३३।५० यह  
लग्नकी विराम और धनभावकी आरंभसन्धी हुई, इसमें षष्ठांश जोडदिया तो  
३।६।१६।४२।४० यह धनभाव हुआ, इसमें षष्ठांश युक्त किया तो ३।१९।-  
४।५१।३० यह धनभावकी विरामसन्धि हुई, इसी प्रकार पूर्वोक्त रीतिसे बां-  
रहौ भावका स्पष्ट चक्र लिखा है सो चक्रमें देखकर सम्पूर्ण भावोंका साधन क-  
रना, भलीभांति समझलैवै ॥



# आगे भावग्रह चलित विचार लिखते हैं-

भावकुण्डली.

|                            |      |                       |        |                |
|----------------------------|------|-----------------------|--------|----------------|
| ५<br>सहज                   | धन ४ | ३<br>तनु<br>के        | व्यय २ | १<br>बु<br>लाभ |
| ६<br>मुहद                  | ६    | १२ कर्म               | ११     | ११             |
| ७<br>पुत्र                 | ७    | ९<br>श. जाया<br>रा चं | १०     | १०             |
| ८<br>वृ.सू.शु.<br>रिपु सं. | ८    | ९                     | १०     | १०             |

तात्कालिक अयनांश २१।००।३१  
सायनाऽर्क राश्यादि ७।१३।२०।४  
अस्य भोग्यांशादि १६।३९।५६ स्वोद-  
याद्रवेर्भोग्यं पलादि १९२।४५।५३ स्पष्ट  
लग्नं राश्यादि. २।१०।४०।२५ रात्रौ  
पूर्वनतं घट्यादि ८।३७।३० लंकोदया-  
द्रवेर्भुक्तं पलादि १३२।५४।१३ स्पष्ट  
दशमं राश्यादि १०।२७।२९।४९ स-  
षड्भं चतुर्थं राश्यादि ४।२७ २९।१८  
लग्न चतुर्थयोरन्तरम् २।१६।४८।५३  
अस्य षष्ठांशः ००।१२।४८।८।५० ॥

## अथ तन्वादयो भावाः ससन्धयः स्युः-

| त  | सं | ध  | सं | स  | सं | सु | सं | पु | सं | रि  | सं | भा० |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|-----|
| २  | २  | ३  | ३  | ४  | ४  | ४  | ५  | ६  | ६  | ७   | ७  | रा० |
| १० | २३ | ६  | १२ | १  | १४ | २७ | १४ | १  | १२ | ६   | २३ | अ०  |
| ४० | २८ | १६ | ४  | ५३ | ४१ | २२ | ४१ | ५३ | ४  | १६  | २८ | क०  |
| २५ | ३३ | ४२ | ५१ | ०  | २  | १८ | २  | ०  | ५१ | ४२  | ३३ | वि० |
| ५० | ४० | ३० | २० | १० |    | १० | २० | ३० | ४० | ५०  |    |     |
| जा | सं | मृ | सं | ध  | सं | क  | सं | ला | सं | व्य | सं | भा० |
| ८  | ८  | ९  | २  | १० | १० | १० | ११ | ०० | ०० | १   | १  | रा० |
| १० | २३ | ६  | १२ | १  | १४ | २७ | १४ | १  | १२ | ६   | २३ | अ०  |
| ४० | २८ | १६ | ४  | ५३ | ४१ | २२ | ४१ | ५३ | ४  | १६  | २८ | क०  |
| २५ | ३३ | ४२ | ५१ | ०  | २  | १८ | २  | ०  | ५१ | ४२  | ३३ | वि० |
| ५० | ४० | ३० | २० | १० |    | १० | २० | ३० | ४० | ५०  |    |     |



## ग्रहभावफल विचारः

खेटे भावसमे पूर्ण फलं सन्धिसमे तु खम् ॥ खेटे  
सन्धि द्वयान्तस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ॥ हीनेधि-  
के द्विसन्धिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—जो खेट (ग्रह) भावके समान होवै तो पूर्ण फल करताहै, और जो ग्रह सन्धिके समान होवै तो शून्य फल करताहै, तथा दोनों सन्धियोंके बीच जो भावहो उसी भावमें स्थितग्रह उसी भावका फल करनेवाला होताहै अर्थात् आरम्भ सन्धिसे अधिक विरामसन्धिसे न्यून ग्रह जिस भावमें स्थितहो, वह उसीभावका फल देताहै, और आरम्भ, विराम इन दोनों सन्धियोंसे हीन अथवा अधिक ग्रहके होतेहुये पूर्व व परमभावमें फल होताहै, अर्थात् आरम्भसन्धिसे न्यून जो ग्रह होवै तो वह पूर्वभावका फल देताहै, तथा जो विरामसन्धिसे अधिकहो तो पर (आगे) भावका फल देताहै, यहां आरम्भसन्धि और विरामसन्धिका प्रयोजन यहहै, कि जैसे लग्नकी सन्धिहै तो उसको लग्नकी विरामसन्धि कहते हैं और वही धनभावकी आरम्भसन्धि कहाती है ॥ ३२

## तथाच-

आरम्भसन्धेर्द्युचरो यदोनः फलं ददात्यादिम-  
भावजातम् ॥ विरामसन्धैरधिकस्तदानीमा-  
गामि भावोत्थफलप्रदः स्यात् ॥ ३३ ॥

अर्थ—जो ग्रह आरम्भ सन्धिसे न्यून हो तो वह पूर्व (पिछाडी) भावसे उत्पन्न फलको देताहै, और जो विरामसन्धिसे अधिकहो वह आगेवाले भावसे उत्पन्न फलको देनेवाला होताहै ॥ ३३ ॥

## ग्रहभावविंशोपक बलसाधनः

ग्रहसन्ध्यन्तरं कार्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ॥

भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ ३४ ॥



अर्थ—अब ग्रहोंका भाव विंशोपकबलसाधन करतेहैं अर्थात्—कौन ग्रह किस भावमें कितने विश्वा फल देवैगा, सो कहतेहैं। कि, ग्रह और सन्धिके अन्तर करै फिर उस अन्तरको बीससे गुणा करै, तदनन्तर उसमें भाव और सन्धिके अन्तरसे भाग लेवै, भाग लेनेसे जो अंशादि फल मिलै उसीको पूर्वाचार्योंने विंशोपक कहा है अर्थात्—इतने विश्वा यह ग्रह फल देवैगा ॥ ३४ ॥

## विंशोपकबलोदाहरण.

अब विश्वाबल ल्यावनेका उदाहरण कहतेहैं, सूर्य राश्यादि ६।२२।१९ ॥ ३३ इसके समीपकी सन्धि ६।१९।४।५१ इन दोनोंका अन्तर किया तो शेष अंशादि ३।१४।४२ रहे इनको बीससे गुणा किया, गुणाकरनेसे ६४।५४।०० यह भाज्य हुआ, और भावरिपु ७।६।१६।४२ इसकी पूर्वसन्धि ६।१९।४।५१ इसका अन्तर किया तो शेष १७।११।५१ रहे। यह भाजक जानो, भाग लेनेके अर्थ भाज्य भाजकको ६० से गुणा दिया, भाज्य ६४।५४।०० को ६० से गुणा तो २३०४५४ हुये, और भाजक १७।११।५१ को ६० से गुणा किया तो ६१९११ हुये इससे भाग लेनेपर लब्ध ३।४३ यह सूर्यका विंशोपकात्मक बल भया, अर्थात् रिपु ( षष्ठ ) भावमें सूर्यका २।३६ विश्वाबल जानना, यहां सूर्य पंचमभावकी सन्धिसे अधिकहै इस कारण छठे भावका फल करेगा, इसी प्रकार चन्द्रमा आदिकका विश्वाबल साधन करै, यहां चक्रमें जो ग्रह जिसभाव में रहा, अथवा चलायमान होकर जिस भावमें चलागया सो स्पष्ट लिख दियाहै ॥

### ग्रहभाव विंशोपक बलचक्रम्.

| सू   | चं   | मं   | बु  | वृ   | शु   | श    | रा   | के  | ग्रह   |
|------|------|------|-----|------|------|------|------|-----|--------|
| रिपु | जाया | रिपु | लाम | रिपु | रिपु | जाया | जाया | तनु | भाव    |
| ३    | १४   | १५   | ३   | १६   | १९   | ५    | ९    | ९   | विश्वा |
| ४३   | १५   | ४४   | ४०  | १०   | १    | १३   | १२   | १२  | बलम्   |



## मुंथासाधन.

सम्प्राप्तवर्षप्रमितिं पतङ्गैर्भजेच्च सूर्योक्तसमानभावे ॥ सम्भृतिलग्नान्मुथहास्थितिः स्यात्तद्राशिगाद्वे जननोदयांशैः ॥ ३५ ॥ वर्षेणभुंक्ते मथुहैकराशिं मासेन भागद्वितयं दलारव्यम् ॥ कलाश्च पंचैव दिनेन नूनं तद्राशिनाथो मुथहाधिपः स्यात् ॥ ३६ ॥

अर्थ—वर्तमान वर्षसंख्यामें बारहका भाग देवै, जो शेष रहै, जन्म लग्नसे उसी राशिमें वर्षप्रवेश समय मुथहाकी स्थिति होती है, जन्मलग्नके जितने अंशहों उतनेही अंश मुथहाके जानना ॥ ३५ ॥ एकवर्षमें मुथहा एकराशि भोगताहै, एकमासमें ढाई अंश अर्थात् २ अंश ३० कलाका भोग होताहै, एक दिन ५ कलाका भोग जानना, जिस राशिमें मुथहा स्थितहो उस राशिका स्वामी मुंथेश होताहै, मुंथाके १ मुथा, २ मुथहा, ३ इंथा, ४ इंधिहा, ५ अंधिहा ये नामहैं ॥ ३६ ॥

## तथाच.

याताब्दसंख्याद्रविभिर्विभक्ताच्छेषेन्थिहास्यादथ जन्मलग्नात् ॥ जन्मांगभागैः सहिता लवाद्यास्तात्कालिका साद्यगतिःप्रयुक्ता ॥ ३७ ॥ मुन्था गतिः प्रतिदिनं शरलिप्तिकाश्च यत्स्थानगा भवति तद्भवने नियोज्या ॥ सौम्यान्विता स्वपतिना सहितेक्षिता चेत् सौख्यार्थदा विविधकार्यकरा निरुक्ता ॥ ३८ ॥

अर्थ—गतवर्ष संख्याको बारह करके विभाजित करै अर्थात् बारहसे भाग देवै जो शेषांक हो उसको जन्मलग्नमें जोड़देवै तो यहां जन्मलग्न अंशादि सहित रखवै और शेषांक संयुक्त करै तो तात्कालिक मुंथा स्पष्ट होताहै,



मुंथाकी गतिभी प्रयुक्त करै, मुंथाकी दिनगति कहतेहैं. कि, ॥ ३७ ॥ मुं-  
थाकी गति प्रतिदिन पांच कला होती है, इस गणनासे मुंथा जिस स्थानमें  
आकर प्राप्तहो, उस स्थानमें स्थापित करै, जो मुंथा अपने स्वामी शुभग्रह  
करके युक्त अथवा इष्ट हो, सौख्य (आरोग्यादि सुख) अर्थ (धनलाभादि  
कामना) का दाता और विविध (अनेक)कार्योंको सिद्ध करनेवाला  
कहाहै ॥ ३८ ॥

तथा.

मेषादिजन्मलग्नं च गतवर्षाणि योजयेत् ॥

द्वादशेन हरेद्भागं शेषं मेषादि चेन्निहा ॥ ३९ ॥

अर्थ—मेषको आदिले जन्मलग्नकी संख्या और गतवर्षसंख्याको जोड-  
देवै, फिर बारहसे भागलेवै शेषांक संख्यावाली मेषादि गणनासे जो रा-  
शिहो उसी राशिपर मुंथाकी स्थिति जानना. यह तीन रीति मुंथाकी  
कहीं. तीनों रीतिसे निकालनेका उदाहरण आगे लिखतेहैं ॥ ३९ ॥

मुंथासाधनोदाहरण.

वर्तमान वर्षसंख्या ३७ में १२ का भाग दिया तो शेष १ जन्मलग्न  
मकर है तो पहिली मकरहीपर मुंथा रहा, क्योंकि शेष १ ही है. इस-  
कारण गणना करनेसे पहिली मकर हुई, यह पहिला प्रकार हुआ. अब  
दूसरा प्रकार कहतेहैं, कि गतवर्ष ३६ में बारहका भाग दिया तो शेष  
शून्य अर्थात् कुछ नहीं, तो मकरलग्नका जन्महै. यहां कुछ शेष नहीं रहा  
जो युक्त किया जावै इस कारण मुंथाकी स्थिति मकरहीमें जानना, यह  
दूसरा प्रकार हुआ. अब तीसरा प्रकार लिखतेहैं. कि मेष आदि गणनासे  
जन्मलग्न मकर दशवीं है, और गतवर्षसंख्या छत्तीस है तो १०।३६ को  
जोडनेसे ४६ हुये, बारहका भागलिया तो शेष १० मेषसे गणनाकरनेपर  
दशवीं राशि मकर हुई तो मुंथा मकर राशिपर जानना, अब मुंथाके  
अंश जाननेकी रीति यह है कि, जन्मलग्नके जितने अंश कला विकलाहों



वही मुंथाके स्थापित करना, १ महीनामें मुंथाकी गति २ अंश ३० कला होती है, और प्रतिदिन पांच २ कला मुंथा बढ़ता है, यहां जन्मलग्नके अंशादि २३।४६।१० है तो मुंथाकेभी इतनेही २३।४६।१० अंशादि हुये। प्रतिमास ढाई अंश भोगनेसे ढाई महीनेके उपरान्त मुंथा दूसरी राशिपर चलाजायगा, अर्थात् चौथेमास प्रवेशमें मुंथाकी कुम्भराशिपर स्थिति जानना और प्रतिदिन पांच २ की गणनासे दो महीना बाईस दिनगये, उपरान्त अर्थात् ८ वें दिन प्रवेशमें मुंथाकी स्थिति कुंभ राशिपर जानना ॥

## त्रिराशिपतिज्ञान.

तिग्मांशुशुक्रशनिशुक्रसुरेज्यचन्द्रशाशांकिभौमशनिभौ-  
मसुरेज्यचन्द्राः ॥ देवेज्यशीतकिरणेन्दुजभूमिपुत्रसूर्यो-  
शनशानिसिताकिंकुजेज्यचन्द्राः ॥ ४० ॥  
वर्षस्वामिविचारार्थं मेषात्रैराशिकेश्वराः ॥  
दिवारात्रौ क्रमेणैते कल्पनीयाः प्रयत्नतः ४१ ॥

अर्थ—सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र,, गुरु चन्द्र, बुध, भौम (मंगल) शनि,

भौम, गुरु, चन्द्र  
और गुरु, चन्द्र  
बुध, मंगल, रवि  
शुक्र, शनि, शु  
क्र, शनि, भौम,

| त्रिराशिपतिचक्रम्. |    |    |    |    |    |    |    |   |    |     |    |        |
|--------------------|----|----|----|----|----|----|----|---|----|-----|----|--------|
| मे                 | वृ | मि | क  | सि | कं | तु | वृ | ध | म  | कुं | मी | लग्न   |
| सू                 | शु | श  | शु | वृ | चं | बु | मं | श | मं | बृ  | चं | दिवा   |
| बृ                 | चं | बु | मं | सू | शु | श  | शु | श | मं | बु  | चं | रात्रौ |

गुरु, चन्द्र ॥ ४० ॥ वर्षमति जाननेके अर्थ यह पूर्वोक्त ग्रह मेष आदि लग्नोंसे दिवावर्ष प्रवेश और रात्रिवर्ष प्रवेशमें क्रमपूर्वक त्रैराशिकेश्वर हैं, अर्थात् पूर्वोक्त सूर्यादि १२ ग्रह दिनमें मेषादि लग्नोंके (त्रैराशिकेश्वर) हैं, और गुरुआदि १२ ग्रहरात्रिमें मेषादिलग्नोके (त्रैराशिकेश्वर) हैं, सो चक्रमें स्पष्ट समझलेना ॥ ४१ ॥



## दृष्टिविचार.

नभश्चराणां न प्रोक्तं यावद्दीक्षणलक्षणम् ॥

तावन्न शक्यते वक्तुं फलं वर्षे शुभाशुभम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—जबतक ग्रहोंकी दृष्टिका लक्षण नहीं कहाजाता, तबतक वर्षमें शु-  
भाशुभ ( अच्छा बुरा ) फल नहीं कहाजासकता ॥ ४२ ॥

लाभं तृतीये चरणेन पश्येद्ब्रह्मचर्यतुर्थ्यन्दशमं दलेन ॥ तथा  
त्रितुल्यैश्चरणैस्त्रितुल्यं सम्पूर्णदृष्ट्या निजसप्तमे च ॥ ४३ ॥

अर्थ—प्रत्येकग्रह लाभ ( ग्यारहवें ) तृतीय ( तीसरे ) स्थानको एक च-  
रणदृष्टिसे ( चौथाई ) देखताहै, और चतुर्थ ( चौथे ) दशम ( दशवें )  
स्थानको अर्ध ( आधी ) दृष्टिसे देखताहै, त्रिकोण ( नवें पाचवें ) स्थानको  
तीन चरण ( पौन ) दृष्टिसे देखताहै, तथा निज ( अपने ) सप्तम ( सात-  
वें ) स्थानको पूर्ण ( पूरी ) दृष्टिसे देखताहै. यहां एक चरणसे १५ कला  
तथा ५ विश्वा दृष्टि जानना, आधी दृष्टि ३० कला तथा १० विश्वा जा-  
नना, तीन चरणवाली दृष्टि ४५ कला तथा १५ विश्वा जानना, और पूर्ण  
दृष्टि ६० कला तथा २० विश्वा जानना. परंतु अपने अपने दीप्तांशोंके  
अन्तर भेदसे सम्पूर्ण ग्रह अपना अपना दृष्टिफल यथोक्त देते हैं. सो दीप्तांश  
आगे वर्णन करेंगे, यहां प्रथम पूर्वोक्त दृष्टिका फल कहते हैं ॥ ४३ ॥

## दृष्टिफल.

या पाददृष्टिस्सुखलाभदात्रीसहप्रदा बुद्धिविवृद्धिकर्त्री ॥

नन्वर्द्धदृष्टिस्स्वजनैर्विरोधं गुप्तारिभेदंकुरुते विवादम् ॥

॥ ४४ ॥ त्रिकोणदृष्ट्यर्धनलाभसौख्यमित्रोन्नतिश्चापि

करोति नित्यम् ॥ सम्पूर्णदृष्टिस्सुतरामरिष्ठं युद्धं विवा-

दश्च रिपूद्गमश्च ॥ ४५ ॥



अर्थ—पाद ( चौथाई ) अर्थात् एकचरणवाली जो दृष्टि है वह सुख और लाभ देनेवाली है तथा स्नेह देनेवाली और बुद्धिको बढ़ानेवाली है, और अर्द्धदृष्टि अर्थात् दो चरणवाली दृष्टि इष्ट मित्रोंसे विरोध उत्पन्न कराती है, इसीको गुप्ताग्निमेद दृष्टि कहते हैं, यह विवादकोभी बढ़ाती है ॥ ४४ ॥ तथा त्रिकोण ५।९ स्थानपर तीनचरणवाली जो दृष्टि है वह धनलाभ और सुख तथा निरंतर मित्रोंकी वृद्धि करती है और सम्पूर्ण अर्थात् चारों चरणवाली सर्वदा अरिष्ट है, वह युद्ध, विवाद और शत्रुवृद्धि करती है ॥ ४५ ॥

खलग्रहाश्चेत्खलदृष्टिसंस्थाश्शुभाश्च खेटाश्शुभदृष्टिसंस्थाः ॥ फलं यथोक्तं ददते तदानीं विलोमसंस्थाश्च तदुद्धमेव ॥ ४६ ॥

अर्थ—यदि पापग्रह पापग्रहोंकी दृष्टिमें हो, और शुभग्रह शुभग्रहोंकी दृष्टिमें स्थित हो, तो वह ( दृश्य ) ग्रह उससमय यथोक्तफल देता है, इससे विपरीत स्थित हो तो उसका आधा फल होता है ॥ ४६ ॥

निजपतिगुरुवित्सुरारिपूज्यैर्यदि सहितश्च विलोकितः सभावः ॥ अतिशयफलदोनशेषखेटैरथसहितस्त्वलोकितो वशेषैः ॥ ४७ ॥

अर्थ—यदि भाव अपने स्वामी गुरु, बुध, शुक्र, करके युक्त हो, और देखा जाता हो, वह भाव अपना पूर्ण फल देता है, और अन्य ग्रहों करके युक्त दृष्ट हो तो उतना फल नहीं देता है ॥ ४७ ॥

### ग्रहदीप्तांशज्ञान.

बाणेन्दुभिर्भानुभिरष्टभिश्च शैलैश्चनन्दैरचलैर्नभोगैः ॥

दिप्तांशकैरेभिदिनादयोऽपि विलोकयन्ति क्रमतोनभोगाः

॥ ४८ ॥ पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहाः ॥

दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ ४९ ॥



अर्थ—सूर्य आदि ग्रह अपने १५।१२।८।७।९।७।९ इन दीप्तांशों करके ग्रहों और भावोंको देखते हैं, अर्थात् अपने दीप्तांशोंसे न्यूनाधिक हों तो यथोक्त फल नहीं देते हैं ॥ ४८ ॥ अर्थात्, नवम आदि स्थानोंमें दृष्टिके होते हुये देखनेवाला ग्रह अपने दीप्तांशोंकरके आगे वा पीछे स्थित होवै, तो वह उत्कृष्ट नवम आदि स्थानोंमें स्थित दृष्टि फलको देताहै, और यदि दीप्तांशको उल्लंघन करजावै तो वह साधारण दृष्टि फलको देताहै, ऐसा

| ग्रहदीप्तांशचक्र. |    |    |    |    |    |    |   |
|-------------------|----|----|----|----|----|----|---|
| ग्र               | सू | चं | मं | बु | वृ | शु | श |
| दी                | १५ | १२ | ८  | ७  | ९  | ७  | ९ |

जानना चाहिये ॥ ४९ ॥ इसी प्रकार दृष्टि विषयमें बहुत कुछ विचारहै परन्तु यहाँ इस छोटे ग्रन्थमें परमावश्यक सरल विषयका उल्लेख कियागयाहै ॥ ४९ ॥

## ग्रहमैत्रीज्ञान.

मित्रं तृतीयपंचमनवममेकादशगतोपि यो यस्य ॥  
 धनमृतिरिपु रिष्फेषु च समो ग्रहः स्यादिति ज्ञेयम् ॥ ५० ॥  
 शत्रुस्तथैकतुर्ये जायास्थाने तथा दशमे ॥  
 ताजिकहिल्लाजमते नैतादृक्कथितमस्माभिः ॥ ५१ ॥

अर्थ—जो ग्रह जिस ग्रहसे तीसरे, पाचवें, नवें, ग्यारहवें स्थानमें स्थितहो, वह उसका मित्र होताहै, और जो ग्रह जिस ग्रहसे दूसरे, आठवें,

| अस्मिन्वर्षे ग्रहमैत्रीचक्रम्. |               |             |             |               |             |             |      |
|--------------------------------|---------------|-------------|-------------|---------------|-------------|-------------|------|
| सू                             | चं            | मं          | बु          | गु            | शु          | श           | ग्र० |
| चं                             | सू वृ         | ०           | ०           | सू            | ०           | ०           | मि०  |
| मं बु<br>शु श                  | मं बु<br>शु श | सू वृ<br>चं | सू वृ<br>चं | मं बु<br>शु श | चं सू<br>वृ | सू चं<br>वृ | स०   |
| गु                             | ०             | बु शु<br>श  | मं शु<br>श  | सू            | मं बु<br>श  | मं बु<br>शु | श०   |

मित्र  
३  
५  
८  
११  
२  
८  
८  
१३  
१३  
५  
१०



छठे बारहवें हो वह उसका सम होता है। ऐसा जानना ॥ ५० ॥ तथा जो ग्रह जिस ग्रहसे पहले ( संयुक्त अर्थात् एक साथ हो ) चौथे, सातवें, तथा दशवें, हो वह उसका शत्रु जानना, इस प्रकार ताजिक शास्त्राचार्य हिस्सा-जके मतसे यह ग्रहोंकी मित्रता, समता व शत्रुताको हम सर्वोंने वर्णन किया है, यद्यपि ताजिक ग्रंथोंमें ग्रहोंकी पंचधा मैत्रीका साधन प्रकार वर्णन किया है, तथापि परमावश्यक ग्रहमैत्री यही है जो पूर्व कह चुके हैं, इसी ग्रहमैत्रीद्वारा पंचवर्ग बलसाधन किया है, इस कारण केवल इस ग्रहमैत्रीको लिखकर आगे पंचवर्गी चक्र साधनप्रकार लिखते हैं ॥ ५१ ॥

## पंचवर्गीचक्रप्रयोजन

अथ प्रवक्ष्ये खलु पंचवर्गीचक्रं ग्रहाणां बलसाधनार्थम् ॥  
यद्दीर्यतो भावफलानि नूनं ज्ञेयान्यथो खेचरपाकजानि ५२

अर्थ—अब ग्रहोंका बलसाधन करनेके अर्थ पंचवर्गीचक्र वर्णन करता हूँ, जिस पंचवर्गीके बलसे भावफल और ग्रहदशाजनित फल निश्चय करना, अर्थात् ग्रहोंका नष्टबल, स्वल्पबल, मध्यबल, पूर्णबल जानकरके भावफल और दशाफल कहना ॥ ५२ ॥

वर्षाधीशा देशपूर्व्वे सगर्भे सर्वे वक्तुन्नो विना वीर्य्यमंत्रम् ॥  
शक्यन्तस्मात्पुष्करागारसारं ज्ञातुर्मर्गम्पंचवर्ग्याःप्रवक्ष्मि

अर्थ—वर्षमें वर्षस्वामीका निर्णय और ग्रहोंका यथोक्त भावादि फल ये सब बलविचारविना नहीं कहेजासकते, इस कारण बल जाननेके अर्थ पंचवर्गीचक्र वर्णन करता हूँ ॥ ५३ ॥

## पंचवर्गगणना

गृहमुच्चं तथा हृदा त्रिराशिपमुशल्लहः ॥

पंचवर्गा इमेप्रोक्ता वक्ष्मि वीर्य्यं तदुद्भवम् ॥ ५४ ॥



अर्थ—गृह, (स्थान) उच्च, हवा, त्रिराशिप, मुशल्लह, (नवांश) ये पाँच वर्ग कहे हैं। अब इनके द्वारा उत्पन्न बल कथन करताहूँ ॥ ५४ ॥

## गृहेश ( राशिस्वामी ) ज्ञान.

भौमशुक्रज्ञचन्द्राऽर्कबुधशुक्राऽऽरमंत्रिणः ॥

शौरिःशनिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः ॥ ५५ ॥

अर्थ—भौम, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, भौम, गुरु, शनि, शनि, गुरु, ये मेष आदि राशियोंके स्वामी हैं, यथा मेष

| गृहेशचक्र. |    |    |    |    |    |    |    |    |   |     |    |
|------------|----|----|----|----|----|----|----|----|---|-----|----|
| मे         | वृ | मि | क  | सि | क  | तु | वृ | ध  | म | कुं | मी |
| मं         | शु | बु | चं | सू | बु | शु | मं | वृ | श | श   | वृ |

राशिका स्वामी भौम, ( मंगल ) वृषसशिका स्वामी शुक्र, मिथुनराशिका स्वामी बुध, इत्यादि क्रमसे राशियोंके स्वामी जानना, जिसका चक्रभी लिख दियाहै ॥ ५५ ॥

## उच्चनीचराशिज्ञान.

मेषो वृषोऽथ मकरो मृगदृक् कुलीरो मीनस्तुलादिनप-  
पूर्वखगोच्चकानि ॥ अंशा १० मि ३ पिंड २८ तिथि  
१५ वायु ५ म २७ विंशतुल्यास्तुंगालवाः स्वनगगा-  
स्तु भवन्ति नीचाः ॥ ५६ ॥

अर्थ—दिनप ( सूर्य ) आदि ग्रहोंकी, मेष, वृष, मकर, मृगदृक् ( कन्या ), कुलीर ( कर्क ), मीन, तुला, ये उच्च-राशि हैं, और १०।३।२८।१५।५।२७। २० इन अंशोकरके उच्चराशि स्थित ग्रह परमोच्च कहातेहैं, तथा अपने उच्चरा-

| उच्चनीचराश्यंशचक्रम्. |    |    |    |    |    |    |      |
|-----------------------|----|----|----|----|----|----|------|
| सू                    | चं | मं | बु | वृ | शु | श  | ग्र. |
| ०                     | १  | ९  | ५  | ३  | ११ | ६  | उच्च |
| १०                    | ३  | २८ | १५ | ५  | २७ | २० |      |
| ६                     | ७  | ३  | ११ | ९  | ५  | ०  | नीच  |
| १०                    | ३  | २८ | १५ | ५  | २७ | २० |      |



शिसे सातवीं राशिपर स्थित ग्रह नीचके होतेहैं और पूर्वोक्त अंशोंकरके परमनीच कहे जातेहैं जैसे—मेषराशिका सूर्य उच्च कहाताहै १० अंशहो तो परम उच्चका कहाताहै, चन्द्रमा वृषराशिका ३ अंशपर परम उच्चका कहाताहै, मंगल मकरराशिका २८ अंशपर परमउच्चका कहाताहै, बुध कन्याराशिका १५ अंशमें परम उच्चका कहाजाताहै, बृहस्पति कर्कराशिका ५ अंशपर परमउच्चका कहाताहै, शुक्र मीनराशिका २७ अंशपर परमउच्चका कहाताहै, शनैश्चर तुलाराशिका २० अंशपर परमउच्चका कहाताहै, यह ग्रहोंका उच्च और परम उच्च वर्णनकिया, आगे उच्चबल साधन कहतेहैं ॥ ५६ ॥

### उच्चबलसाधन.

नीचोनितो ग्रहः षड्भाधिको मण्डल. १२ शोधितः ॥  
शेषस्यांशा नन्दभक्ता बलमुच्चस्य जायते ॥ ५७ ॥

अर्थ—अपना नीचराश्यंश घटाया हुआ राश्यादि ग्रह जो छ.राशि संख्यासे अधिकहो तो मण्डल अर्थात् बारह राशिमें घटादेवै, शेषके अंशकरके नवका भागदेवै, तो लब्ध कला आदिक आवतीहैं, सोई उच्चबल होताहै ॥ ५७ ॥

### तथाच.

नीचग्रहान्तरं कार्यं षड्भादलं यथा भवेत् ॥  
तदांशांक ९ लवःस्वोच्चबलं स्यात्ताजिके स्फुटम् ॥ ५८ ॥

अर्थ—नीच और ग्रह दोनोंका अन्तर करै, छःराशिसे अल्प ( कमती ) जिस प्रकार होवै उसी प्रकार करै अर्थात् नीचमें ग्रह घटे तो ग्रह घटा देवै, और यदि ग्रहमें नीच घटे तो नीचको घटादेवै फिर उस छःसे न्यून-वाले अंशोंके अंश करै और नवसे भागलेवै लब्धांक कला आदिक अपना उच्चबल ताजिक मतसे स्फुट होताहै ॥ ५८ ॥



## उच्चबलोदाहरण.

अब उच्च बल व्यावनेका उदाहरण लिखते हैं—स्पष्टसूर्यराश्यादि ६।२२ १९।३३ यह सूर्यका नीच ६।१० में घटाया तो शेष ११।१७।४०।२७ यह छःराशिसे अधिकहै, इस कारण १२ में घटाया तो शेष १०।१२।१९।३३ इसके अंश किये तो १२।१९।३३ हुये. इनमें ९ का भाग लगाया. भाग लगानेसे लब्ध कलादि १।२२ यह सूर्यका उच्चबल हुआ, अथवा सूर्य ६।२२।१९।३३ सूर्यका नीच ६।१० नीचको सूर्यमें घटाया तो ०।१२।१९।३३ इसके अंश १२।१९।३३ में ९ का भाग देनेसे लब्ध कलादि १।२२ यह सूर्यका उच्च बल हुआ, इसी प्रकार चन्द्रमा आदिका बल निकाललेना, और पंचवर्गीचक्रमें सब ग्रहोंका उच्चबल उदाहरणार्थ लिखाहै वहां देखलेना॥

## हृद्देशज्ञान.

मेषे रसांगाष्टशरेन्द्रियांशास्सुरेज्यशुक्रज्ञकुजाऽर्कजा-  
नाम् ॥ वृषेष्टतर्काष्टशरत्रिसंख्याशुक्रज्ञजीवाऽर्कजभू-  
मिजानम् ॥ ५९ ॥ युग्मे रसाङ्गेन्द्रियसप्ततर्का ज्ञशुक्र-  
जीवाऽवनिजार्कजानाम् ॥ कर्केद्वितर्काङ्गनगांब्धिभा-  
गाः कुजास्फुजिज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥ ६० ॥ सिंहेङ्ग-  
बाणाद्रिरसाङ्गभागा जीवासुरेज्याऽर्कजविकुजानाम् ॥  
स्त्रियान्नगाङ्गाऽब्धिनगरिसंख्या ज्ञकाव्यजीवाऽवनि-  
भूशनीनाम् ॥ ६१ ॥ घटे षडष्टाद्रिं मुनिद्विसंख्याश-  
निज्ञवागीशसिताऽसृजाश्च ॥ अलौ नंगाब्धिर्द्विरदेषु-  
तर्का भौमास्फुजिज्ञेज्यपतंगजानाम् ॥ ६२ ॥ चापे  
३३ कर्काणांऽब्धिंशरांऽब्धितुल्या जीवास्फुजिज्ञाऽव-  
निजाऽर्क जानाम् ॥ नकेऽद्विसप्ताष्टयुगाऽब्धयःस्यु-  
बुधेज्यशुक्राऽर्कजमङ्गलानाम् ॥ ६३ ॥ कुम्भेऽ







अर्थ—अब द्रे-  
ष्काणज्ञान कहते हैं।  
मेषसे लेकर मीनप-  
र्यन्त द्रेष्काण स्वा-  
मी भौम, रवि, और  
शुक्र इन तीन ग्रहोंसे  
यथा क्रम गिनना,

| द्रेष्काणचक्र. |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |     |    |
|----------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|----|
| अंश            | मे | वृ | मि | क  | सि | क  | तु | वृ | ध  | म  | कुं | मी |
| १०             | मं | वु | वृ | शु | श  | र  | चं | मं | वु | वृ | शु  | श  |
| २०             | र  | चं | मं | वु | वृ | शु | श  | र  | चं | मं | वु  | वृ |
| ३०             | शु | श  | र  | चं | मं | वु | वृ | शु | श  | र  | चं  | मं |

अर्थात् राशिके ३० अंशोंमें तीसरे भाग ( १० अंशों ) को द्रेष्काण कहते हैं, एकराशिमें तीन द्रेष्काण होते हैं। तहां पहला द्रेष्काण मेष आदि राशियोंमें मंगलसे गणना करे, दूसरा द्रेष्काण सूर्यसे और तीसरा द्रेष्काण शुक्रसे गणना करे। पहला द्रेष्काण १ अंशसे १० अंशतक दूसरा ११ से २० तक, तीसरा २१ से ३० अंशतक जानना, जैसे मेष राशिमें १० अंशतक मंगलका द्रेष्काण, तदनन्तर २० अंशतक, सूर्यका, अनन्तर ३० अंशतक, शुक्रका द्रेष्काण जानना, इसी प्रकार वृष आदि राशियोंमें द्रेष्काण जानना, सो चक्रमें सरलतासे लिखा है ॥ ६५ ॥

## नवांशज्ञान.

मेषे सिंहे धनुर्मेघाद्भोकन्यामकरे मृगात् ॥ कर्का-  
त्कर्काऽलिमीनस्य कुम्भयुग्मतुलातुलात् ॥ गृही-  
त्वाभस्य नन्दांशं गणनीयं यथाक्रमम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—अब नवांश ज्ञान कहते हैं—कि मेष, सिंह, धन इन राशियोंका नवांश मेषसे, और वृष, कन्या, मकरका मकरसे, और कर्क, वृश्चिक, मीन का कर्कसे, तथा कुंभ, मिथुन, तुलाका तुलासे जानना। राशिके नवम भाग ( ३।२०।६।४० आदि ) को लेकर क्रमपूर्वक गणना। अर्थात् एकराशिके ३० अंशका नवमांश ३ अंश २० कला जानना। इसी प्रकार ३ अंश २० कला जोड़नेसे सब नवांश जानना, ३ अंश २० कलाका १ नव-



मांश होता है। जैसे, मेष राशिमें ३ अंश २० कलातक पहला मेषका नवांश, फिर ६ अंश ४० कलातक दूसरा वृषका नवांश। इसी प्रकार सरलता पूर्वक जाननेके अर्थ नवांश चक्र लिखदिया है, उसमें समझ लेना, जिस राशिका नवांश हो उसका स्वाधी नवांशस्वामी कहा जाता है ॥ ६६ ॥

| नवांशचक्र. |       |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|------------|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| मा         | अंश   | मे  | वृ  | मि  | क   | सि  | क   | तु  | वृ  | ध   | म   | कुं | मी  |
| १          | ३।२०  | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   | तु  | क   |
| २          | ६।४०  | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं |
| ३          | १०।०० | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  | ध   | क   |
| ४          | १३।२० | क   | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   | तु  |
| ५          | १६।४० | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  |
| ६          | २०।०० | क   | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  | ध   |
| ७          | २३।२० | तु  | क   | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   | तु  | क   | मे  | म   |
| ८          | २६।४० | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं | वृ  | सिं | वृ  | कुं |
| ९          | ३०।०० | ध   | क   | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  | ध   | क   | मि  | मी  |

### पंचवर्गीबलव्यवस्था.

त्रिंश ३० निमतस्स्वीयगृहे निजोच्चे नख २०  
स्वहृद्वासु तिथि १५ प्रमाणम्॥द्रेष्काणके स्व  
स्य तु डिडमितं १० स्वमुशलहे बाण ५ मितं  
बलं स्यात् ॥६७॥ स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्दे



पादोनमर्द्ध समभेऽरिभेघ्निः ॥ यथाबलं तुंगबल-  
न्तु तेन समन्वितं वर्गबलम्बलं स्यात् ॥ ६८ ॥  
वीर्यैकतावेदहृतामवीर्ये दशाधिको पूर्णबलो  
ग्रहः स्यात् ॥ अधोस्य पंचाऽवधिमध्यवीर्य-  
स्तन्यूनतायामिह हीनवीर्यः ॥ ६९ ॥

स्वग्रहादिवलविभागचक्र.

अर्थ—अब पंचवर्गीबलकी व्यवस्था कहते हैं कि जो ग्रह अपनी राशिका होवे उसका बल ३० का जानना. जो ग्रह अपने उच्चमें हो उसका २० का बल होता है. तथा अपने हृदामें १५ का बल और अपने द्रेष्काणमें १० का बल अपने मुशल्लह ( नवांश ) में ५ का बल होता है

| ०         | स्व     | मित्र    | सम      | शत्रु   |
|-----------|---------|----------|---------|---------|
| गृह       | ३०<br>० | २२<br>३० | १५<br>० | ७<br>३० |
| हृदय      | १५<br>० | ११<br>१५ | ७<br>३० | ३<br>४५ |
| द्रेष्काण | १०<br>० | ७<br>३०  | ५<br>०  | २<br>३० |
| नवांश     | ५<br>०  | ३<br>४५  | २<br>३० | १<br>१५ |

॥ ६७ ॥ अपने अपने अधिकारमें जो बल कहा गया. उसी अनुसार जानना. और जो अपने मित्र सम शत्रुके अधिकारमें हो उसका विभाग इसप्रकार करना कि—जो ग्रह अपने मित्रके अधिकारमें हो उसका उक्त बलसे चौथाई हीन बल जानना. जो ग्रह अपने समके अधिकारमें हो उसका आधा बल जानना और जो ग्रह अपने शत्रुके अधिकारमें हो उसका चौथाई बल जानना. जैसे जो ग्रह अपनी राशिमें हो उसका बल ३० का और मित्रराशिमें हो तो चौथाई कम अर्थात् २२½ का और समराशिमें आधा १५ का तथा शत्रुकी राशिमें चौथाई ७½ का बल जानना इसप्रकार गृह हृदय द्रेष्काण नवांश केवलको ग्रहण करना. सुगमरीतिसे जाननेके अर्थ चक्रभी लिख दिया है और उच्चका जो बल हो उसकोभी चारोंके साथ पंचवर्गीबल चक्रमें लिखना. तो बल निकालनेमें सुगमता



होती है ॥ ६८ ॥ फिर पूर्वोक्त बलकी ऐक्यता करके चारका भाग देना-  
भाग देनेसे जो प्राप्त हो वह विश्वाबल जानना. दश विश्वसे अधिक बल-  
वाला ग्रह पूर्ण बली होताहै. और दशसे न्यून ( कमती ) पांच विश्वातक  
मध्यबली होताहै. तथा पांचसे न्यून ( कम ) बलवाला ग्रह हीन ( नष्ट )  
बल होताहै ॥ ६९ ॥

## पंचवर्गीबलसाधनोदाहरण.

अब पंचवर्गी बलसाधन निमित्त.

अथ ग्रहेशादिचक्रम्.

उदाहरण लिखते हैं: यथा सूर्य६।२२।  
१९।३३ यहां सूर्य तुलाराशिका शुक्र-  
के घरमें है. सो शुक्र सूर्यका समहै.  
समके घरमें १५।०० यह सूर्यका ग्रह  
( स्थान ) बल भया. उच्च बलका  
उदाहरण पूर्व लिखचुकेहैं. सूर्यका उच्च  
बल १।२२ है. तथा सूर्य तुलाके  
२२ अंश गतसे चौथा हृदा शुक्रकाहै.

| ग्रहाः   | सू | चं | मं | बु | गु | शु | श  |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|
| ग्रहेश   | शु | गु | मं | मं | शु | मं | मं |
| हृदा     | शु | शु | शु | बु | मं | शु | श  |
| द्रेष्का | बृ | चं | सू | बु | गु | मं | शु |
| नवांश    | मं | सू | शु | सू | बु | बु | गु |

सो शुक्र सूर्यका समहै. समहृदामें ७।३० यह सूर्यका हृदा बलभया. तथा  
सूर्य तुलाक २२ अंश गतसे तीसरे बृहस्पतिके द्रेष्काणमें है. बृहस्पति सूर्य-  
का शत्रुहै तो शत्रु द्रेष्काणमें २।३० यह सूर्यका द्रेष्काण बलभया. तथा  
सूर्य तुलाके २२ अंशगतसे तुलामें तुलीकी गणनासे सातवें मेषके नवांशमें  
है. मेषका स्वामी भौम सो सूर्यका समहै. सप्त नवांशमें २।३० यह सूर्य  
नवांश बलभया. इन सब बलोंका ऐक्य किया. अर्थात् सबको जोड़ा तो  
२८।५२ हुये. चारका भाग दिया तो लब्ध अंक ७।१३ यह सूर्यका पंच-  
वर्गी विश्वात्मक बलभया. यहां सूर्यका बल उदाहरणद्वारा कहा. इसी प्र-  
कार चन्द्रमाका जानना. सुगम रीतिसे समझनेके अर्थ पंचवर्गीबलचक्रभी  
लिख दियाहै ॥



| अथ ग्रहाणां पंचवर्गोवलचक्रम्. |          |          |          |          |           |          |           |
|-------------------------------|----------|----------|----------|----------|-----------|----------|-----------|
| ग्रहाः                        | सू       | चं       | मं       | बु       | गु        | शु       | श         |
| गृहवलम्                       | १५<br>०० | २२<br>३० | ३०<br>०० | ७<br>३०  | १५<br>००  | ७<br>३०  | ७<br>३०   |
| उच्चवलम्                      | १<br>२२  | ४<br>३५  | ११<br>२० | ३<br>२६  | ७<br>२३   | ४<br>२८  | १५<br>४७  |
| हृदावलम्                      | ७<br>३०  | ७<br>३०  | ३<br>४५  | १५<br>०० | ७<br>३०   | १५<br>०० | १५<br>००  |
| द्रेष्काणवलम्                 | २<br>३०  | १०<br>०० | ५<br>०   | १०<br>०० | १०<br>००  | २<br>३०  | २<br>३०   |
| नवमांशवलम्                    | २<br>३०  | ३<br>४५  | १<br>१५  | २<br>३०  | २<br>३०   | १<br>१५  | २<br>३०   |
| ऐक्यम्                        | २८<br>५२ | ४८<br>२० | ५१<br>२० | ३८<br>२६ | ४२<br>२३  | ३०<br>४३ | ४३<br>१७  |
| विश्ववलम्                     | ७<br>१३  | १२<br>५  | १२<br>५० | ९<br>३६॥ | १०<br>३५॥ | ७<br>४०॥ | १०<br>४२॥ |

## वर्षेशमाहात्म्य.

विविधभावविभूषणभूषिता सुनयनानयनाञ्चितवि-  
ग्रहा ॥ युवतिवन्नविभाति पतिविना शरदतः शरदां  
पतिरुच्यते ॥ ७० ॥

अर्थ—अनेक प्रकारके हावभाव और आभूषणोंसे अलंकृत तथा कटाक्षक-  
रके विमोहित करनेवाली सुनयनी स्त्री, जैसे पतिविना शोभाको नहीं प्राप्त  
होती ऐसेही वर्षेशविना वर्षकी शोभा नहीं होती इस कारण वर्षेश कहा  
जाताहै ॥ ७० ॥

तथाच.

अथ समाधिपतेः स्फुटनिर्णयो नहि कृतो



यदि वर्षनिवेशने ॥ कथमिदं फलमत्र विनि-  
श्चितं भवति सोऽयमतः प्रविचार्यते ॥ ७१ ॥

अर्थ—अब यदि वर्षप्रवेशमें वर्षेशका स्फुट निर्णय ( ठीक विचार ) न किया-  
जाये तो वर्षमें यह शुभाशुभ फलका कैसे निश्चय होवे. अतः ( इसकारण )  
आगे वर्षेशका विचार किया जाता है ॥ ७१ ॥

**वर्षेशनिर्णयार्थ पंचाधिकारी.**

जन्माङ्गपोऽब्दाङ्गपङ्क्तिहेशो वर्षप्रवेशे दिवसे-  
ऽर्कभेशः ॥ निशीन्दुभेशस्त्रिगृहेश एते वर्षा-  
ऽधिपत्ये ह्यधिकारिणः स्युः ॥ ७२ ॥

अर्थ—जन्मलग्नपति, वर्षलग्नपति, मुन्धेश और दिनमें वर्षप्रवेश हो तो  
सूर्य लग्नपति रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र लग्नपति और त्रिराशिपति ये  
वर्षमें ( वर्षेश होनेके अर्थ ) पंचाधिकारि कहेजाते हैं ॥ ७२ ॥

**वर्षेशनिर्णय.**

लग्नं प्रपश्येदधिवीर्येषां वर्षेश्वरः स्यादथ दृष्ट्यभावे ॥  
वीर्याधिकोना ब्दविभुर्वीर्यो लग्नं प्रपश्येदपि हा-  
यनेशः ॥ वीर्ये समानेपि तनुं प्रपश्येदृष्ट्याधिको  
वर्षपतिर्विधेयः ॥ ७३ ॥

अर्थ—इन पूर्वोक्त पंचाधिकारियोंमें जो ग्रह अधिक बली होकर लग्नको  
देखताहो वह वर्षेश होताहै. दृष्टि न होनेसे अधिक बली ग्रहभी वर्षस्वामी  
नहीं होता. जो ग्रह हीनबली हो परंतु लग्नको देखताहो वही वर्षपति हो-  
ताहै ऐसा कहना ॥ ७३ ॥

नानादृष्ट्याधिकारभाजामनल्पवीर्योधिपतित्व-  
मना वीर्यस्य दृष्ट्यापि तुल्यतायां वर्षेश्वरः स्यान्मुथ-  
होना ॥ ७४ ॥ न को पि पश्येदति वर्षलग्नं ज्ञे



यस्तदा जन्मविलम्बदर्शी ॥ न वर्षलग्नं न च जन्म-  
लग्नं चेत्कोऽपि पश्येदधिकारभाजाम् ॥ ७५ ॥ ज्ञेयस्तदा  
भूरिबलोऽबलोवा वर्षाऽधिनाथो मुथहाऽधिनाथः ॥ ७६ ॥

अर्थ—यदि सब अधिकारियोंकी लग्नपर समान दृष्टि हो तो उनमें जो अधिक बलवान् हो वह वर्षपति होसकताहै. और बल व दृष्टिके समान होनेपर मुथहा राशिस्वामी वर्षेश होताहै ॥ ७४ ॥ तथा यदि वर्षलग्नको कोईभी पंचाधिकारी ग्रह न देखताहो तो उनमें जन्मलग्नको देखनेवाला ग्रह वर्षपति जानना, और यदि पंचाधिकारियोंमेंसे कोईभी ग्रह न वर्षलग्नको देखताहो और न जन्मलग्नको देखताहो ॥ ७५ ॥ तो बहुत बलवाला अथवा थोड़े बलवाला मुथहा राशिपति वर्षका स्वामी जानना ॥ ७६ ॥

### मतान्तर.

बलादिसाम्ये रविराशिपोऽन्हि निशीन्दुराशीडिति  
केचिदाहुः ॥ येनेत्थशालोऽब्दविभुः शशी स वर्षा-  
धिपश्चन्द्रभपोऽन्यथात्वे ॥ ७७ ॥

अर्थ—पंचाधिकारियोंका पंचवर्गोंमें बल समानहो, और लग्नपर दृष्टिभी समानहो, तो ऐसी अवस्थामें दिनमें वर्षप्रवेश होतो सूर्य स्थितराशिका स्वामी वर्षेश जानना, रात्रिमें वर्षप्रवेश होतो चन्द्रमा जिसराशिपर स्थित हो उस राशिका स्वामी वर्षपति जानना, ऐसा कोई आचार्य कहतेहैं. तथा वर्षका स्वामी किसी प्रकार चन्द्रमा आताहो तो चन्द्रमा जिस पंचाधिकारी ग्रहके साथ इत्थशाल करताहो वह वर्षेश जानना, यदि किसीके साथ इत्थशाल न करताहो तो चन्द्रमा जिस राशिपर स्थितहो उसराशिका स्वामी वर्षेश जानना चाहिये ॥ ७७ ॥

### तथाच.

पश्येन्न कश्चिद्यदि वर्षलग्नं तल्लग्नराशिर्जनने-



पि येन ॥ दृष्टोऽधिपः स्यान्नच तत्र दृष्टस्तदे-  
न्थिहेशोऽपि विचिन्तनीयः ॥ ७८ ॥

अर्थ—यदि वर्षलग्नपर किसी अधिकारी ग्रहकी दृष्टि नहो, तो वह ) वर्ष-  
लग्नसम्बन्धी ( राशि जन्मलग्नमें किसी पंचाधिकारीकी दृष्टिमें होतो वह  
वर्षपति होता है नहीं देखताहो तो मुंथाका स्वामीही वर्षपति जानना ॥ ७८ ॥

अथवा.

पंचाधिकारिणो लग्नं न पश्यन्ति यदा तदा ॥

वर्षलग्नेश्वरो यस्तु स एवाऽब्दपतिर्भवेत् ॥ ७९ ॥

अर्थ—पंचाधिकारी ग्रह जब लग्नको नहीं देखते हैं तब जो वर्षलग्नका  
स्वामीहो वही वर्षेश होता है ॥ ७९ ॥

अथ पंचाधिकारिणः

वर्षेशनिर्णयः

| ज.        | व.       | मुं.      | त्रि.    | चं.       | एवाम्पञ्चाधिकारिणां मध्ये<br>लग्नेशमाणत्वाद्दर्शो गुरुः ॥<br>वर्षे विश्वात्मकं बलम् ॥<br>१०।१७ |
|-----------|----------|-----------|----------|-----------|--|
| ल.        | ल.       | रा.       | रा.      | रा.       |  |
| प.        | प.       | प.        | प.       | प.        |  |
| श.        | बु.      | श.        | बु.      | बृ.       |  |
| १०<br>४९। | ९<br>३६॥ | १०<br>४९। | ९<br>३६॥ | १०<br>३५॥ |  |

वर्षविश्वासाधन.

एषां पञ्चाधिकारीणां ग्रहाणां बलसंयुतम् ॥

सुतेनाप्तं फलं वर्षे बलं विश्वात्मकं बुधैः ॥ ८० ॥

अर्थ—अब वर्षके विश्वाओंका साधन लिखते हैं, अर्थात् यह वर्ष कितने



विश्वहै सो कहतेहैं, पूर्वोक्त इन पञ्चाधिकारी ग्रहोंके विश्वा बलको जोड़-  
देवै, जोड़कर पाँचका भाग देवै, भाग देनेसे जो लब्ध अंकहों वह वर्षमें  
वर्ष विश्वाबल पण्डितोंने कहाहै जैसे यहां पूर्वोक्त पञ्चाधिकारियोंके पञ्च-  
वर्गों विश्वाबलको जोड़देनेसे अंकसंख्या ५१२७ में ५ का भागदिया तो  
लब्ध १०।१७ यह वर्ष विश्वाहुये अर्थात् इतने १०।१७ विश्वा वर्ष  
जानना ॥ ८० ॥

## वर्षेशादिक अधिकार.

वर्षाधीशो भवेद्राजा पुरोधा जन्म लग्नपः ॥

मंत्री च मुथहाधीशो होरेशः सैन्यनायकः ॥ ८१ ॥

रसादिसस्यधातूनामधिपश्च त्रिराशिपः ॥ ८२ ॥

अर्थ—वर्षमें वर्षेश राजा होताहै, जन्मलग्नपति पुरोधा ( पुरोहित अथवा  
कुलगुरु ) होताहै, और मुथहा स्वामी मंत्री होताहै, वर्षलग्नस्वामी सेनापति  
होताहै ॥ ८१ ॥ रस आदिक वस्तु और सस्य ( धान्य ) व धातुओंका  
स्वामी त्रिराशिपतिको जानना ॥ ८२ ॥

## वर्षेशमाहात्म्य.

वर्षाधीशविनिर्णयस्समुदितः पूर्वं हि सम्यङ् मया यद्य-  
प्यत्र तथापि वर्षमखिलं किं साधु वाऽसाधुवा ॥ इत्या  
ख्यातुमशक्यमेव सुधिया तस्मात्फलं यत्नतो वक्ष्येऽहं  
शुभमध्यमाऽधमतभैर्मुनीन्द्रोदितैः ॥ ८३ ॥

अर्थ—यद्यपि इस ग्रन्थमें वर्षेशका निर्णय मैंने पूर्व भलीभाति कथन कि-  
याहै, तथापि यह कहना पण्डितोंको कठिनहै, किं वर्ष शुभहै अथवा अशुभ,  
इसकारण मैं यत्नपूर्वक पुरातन मुनियोंके वचनों करके शुभ, मध्यम, अधम  
भेदसे वर्षफल वर्णन करताहूँ ॥ ८३ ॥



वर्षलग्नेश वर्षेश मुंथ मुंथेश वीर्यतः ॥

सकलं सफलं वर्षन्तत्फलन्तद्दशा फलम् ॥ ८४ ॥

अर्थ—वर्षलग्नपति, वर्षपति, मुंथा, मुंथेश इनके बलसे सम्पूर्ण वर्ष फल-युक्त होता है, और वे अपना फल अपनी अपनी दशामें करते हैं ॥ ८४ ॥

वर्षेशफलः प्रथम सूर्याब्दफलः

अब्दाऽधिपेऽम्बरमणौ सबले प्रतिष्ठा प्राप्तिस्ततो निज-कुले बहुराज्यलाभः ॥ स्थातान्तराद्भवति भूधनकीर्ति-मित्रलाभस्तथा बहुसुखानि रिपोर्विनाशः ॥ ८५ ॥

अर्थ—अब वर्षेशफल लिखते हैं, तहां प्रथम वर्षेश सूर्यका फल कहते हैं, यदि सूर्य पूर्णबली होकर वर्षका स्वामी हो तो प्रतिष्ठाकी प्राप्ति हो, और अपने कुलानुमानसे राज्यद्वारा बहुत लाभ हो, दूरसे स्थानसे भूमि, धन, कीर्ति मित्र इनका लाभ होवै, तथा बहुत सुख हो और शत्रुका विनाश हो ॥ ८५ ॥

पुत्रानृपात्सुजनतोऽल्पसुखं नराणां स्यान्मध्यवीर्यस-हिते द्युमणौ दशायाम् ॥ कुर्याद्दरिद्रमपि रोगभयं वि-वादं लोकैस्तथा नृपजनैः सह चाल्पवैरम् ॥ ८६ ॥

अर्थ—यदि सूर्य मध्यबली होकर वर्षका स्वामी हो तो अपनी दशामें पुत्रसे, राजासे, मित्रसे, मनुष्योंका थोड़ा सुख प्राप्त होवै और दरिद्रता व रोग भयकरै, तथा लोगोंसे विवाद और राजजनोंसे कुछ वैर होवै ॥ ८६ ॥

नष्टे रवौ भवति वैरिजनाद्विरोधो रोगागमो निजजना-द्भयमुग्रकं स्यात् ॥ द्रव्यक्षयश्च सततं कलहः स्वामि-त्रात् दग्धे च दूरगतिदौस्थ्यजनापवादः ॥ ८७ ॥



अर्थ—यदि सूर्य हीनबली होकर वर्षका स्वामीहो तो शत्रुओंसे विरोधहो, रोग उत्पन्नहो, स्वजनोसे बहुत भयहो और द्रव्यका क्षयहो, अपने मित्रसे सदा कलह रहै, तथा दूरकी यात्राहो और दुष्टजनोंसे लड़ाई करके अपवाद ( निंदा ) होवै ॥ ८७ ॥

## चन्द्राऽब्दपफल.

पृथ्वीपालात्स्यादवाप्तिर्विशाला नानासौख्यं  
स्त्रीषु लीलाविलासः ॥ मुक्तायुक्तश्वेतवस्तूपल-  
ब्धिर्वर्षाधीशे यामिनीशेऽधिसत्त्वे ॥ ८८ ॥

अर्थ—यदि अधिक बलवाला चन्द्रमा वर्षका स्वामीहो तो राजासे उत्तम प्राप्तिहो, नाना प्रकारका सुख मिलै. स्त्रीमें हास विलासहो और मोती सहित श्वेतवस्तुका लाभहो ॥ ८८ ॥

कान्ता सौख्यं स्वल्पमेव प्रकल्प्यं वैकल्यं स्या  
त्स्वीयवर्गेऽथ दैन्यम् ॥ काश्यम्भूपस्याऽतिकोपा-  
न्निशेशे वर्षाधीशे मध्यसत्त्वोपपन्ने ॥ ८९ ॥

अर्थ—जो चन्द्रमा मध्यबली होकर वर्षका स्वामीहो, तो स्त्रीकी ओरसे थोडा सुखहो, देहमें व्याकुलताहो, बन्धुजनोंमें द्रव्यकी हानिहो और राजाके महाकोपसे दुर्बल होजावै ॥ ८९ ॥

विकलताऽनिलतश्च कलिः कुले प्रचलनं हि  
निजस्थलतो भवेत् ॥ नरपतेः कफतोपि मह-  
दयं शशिनि हायनपेऽल्पबलान्विते ॥ ९० ॥

अर्थ—यदि स्वल्पबली चन्द्रमा वर्षपति हो. तो वातप्रकोपसे देहमें पीडाहो, कुटुम्बमें कलहहो और अपने स्थानसे कहीं जानापडै, राजासे भयहो और कफसेभी महाभयहोवै ॥ ९० ॥



## भौमाऽब्दपफल.

रिपुगणाद्विजयोऽपिरणाङ्गणे भ्रमणतश्च महद्-  
बिणागमः ॥ नरपतेरपि वापि चमूपर्तः क्षितिसु-  
तेऽब्दपतौ बलवत्त्यलम् ॥ ९१ ॥

अर्थ—जो पूर्णबलोपयुक्त मंगल वर्षका स्वामी हो तो रणमें शत्रुसे विजय प्राप्तहो, और भ्रमण करतेहुये अनुष्यको राजासे अथवा किसी सेनापतिके द्वारा बहुतधन प्राप्त होवै ॥ ९१ ॥

गदं विवादं विविधं विरोधं धनव्ययं चोरभयं  
करोति॥ आरातिभीतिं क्षितिपादिभीतिं वर्षा-  
धिपो मध्यबलो महीजः ॥ ९२ ॥

अर्थ—जो मध्यबली होकर मंगल वर्षका स्वामीहो रोग, विवाद और विविधप्रकारका विरोध धननाश चोरोंसे भय राजाआदिसे भय ये अनिष्ट-फल प्रगट करताहै ॥ ९२ ॥

दुष्टादभीष्टाच्च करोति कष्टं गदं च पादानन-  
लोचनेषु ॥ खलावृपालाज्ज्वलनादनर्थं वर्षा-  
ऽधिराजोऽवनिजोऽल्पसत्त्वः ॥ ९३ ॥

अर्थ—यदि स्वल्पबलवाला मंगल वर्षका अधिपति होवै तो शत्रु और मित्र इन दोनोंसे कष्टहो. तथा चरण, मुख और नेत्र इनमें रोग प्रगट हो दुष्ट जन व राजा और तापसे बाधा उत्पन्न होवै ॥ ९३ ॥

## बुधवर्षेशफल.

वित्तलाभललनाऽतिविलासैस्साहसैश्च निखि-  
लैः खलु युक्तः ॥ ज्योतिषोद्यमचिकित्सितवि-  
त्स्यादब्दनाथपरिपूर्णबलाढ्यः ॥ ९४ ॥



अर्थ—जिसके परिपूर्ण बलसहित बुध वर्षस्वामी हो उसका धनका लाभ हो और वह स्त्रीके अत्यन्त भोग विलास और सम्पूर्ण सुखोंसे युक्त हो. तथा ज्योतिषविद्या व वैद्यकविद्याके उद्यमसे यशका भागी होवै. यहां बुधसम्बन्धी उद्यम अर्थात् लिखने पढ़ने आदिसेभी प्रतिष्ठाका होना घटित होताहै ॥ ९४ ॥

स्ववाक्यदोषादशुभञ्च योषारोषाऽधिकत्वं द्वि-  
षतो विषादः ॥ कृपानृपालादधिका किल स्याद-  
ब्दाधिपौ मध्यबलो बुधश्चेत् ॥ ९५ ॥

अर्थ—यदि मध्यबलोपयुक्त बुध वर्षका स्वामी हो तो अपनेही वाक्यदोषसे अशुभ होवै. स्त्रीके अधिक कोपसे परस्पर वैरभावहो जिससे विषाद बढै अथवा शत्रुको कुछ दुःख होवै तथा राजा कुछ अधिक कृपा करे ॥ ९५ ॥

अनृतसाक्षिकता क्षितिपाद्भयं क्षतिरतीव विपक्ष-  
कदस्युतः ॥ नयनहृन्नलरुक् प्रबला भवेद्गतबले-  
ऽब्दपतौ शशिनस्सुते ॥ ९६ ॥

अर्थ—यदि ह्रीनबली बुध वर्षका पति हो तो असत्यसाक्षी (झूठी गवाही) देनी पड़े, राजासे भयहो शत्रु व चोरसे बहुत हानि होवै. और नेत्र, हृदय व गलेमें प्रबल रोग होवै ॥ ९६ ॥

गुरुवर्षशफल.

ज्ञानं कीर्तिर्निधिसहचरा ह्लादनन्देवतानामर्चा-  
चर्चाविधधनचयैर्लोकविश्वासितैव ॥ धर्मे प्रीति-  
र्नृपतिकुलतोत्पन्नवित्तोन्नतिस्याच्चञ्चकीर्तिश्शर-  
दधिपतौ वाक्पतौ सर्ववीर्ये ॥ ९७ ॥



अर्थ—यदि बृहस्पति पूर्ण बली होकर वर्षका अधिपति होवै तो, ज्ञान, यश, धन, इनका लाभ हो. देवताओंकी सेवा व पूजामें मन प्रसन्न हो. अनेक विधिसे धनकी वृद्धि हो. लोकमें विश्वास माना जाय, धर्ममें प्रीति बढ़े. राजवंशसे उत्पन्न हुये धनकी वृद्धि हो, और जगत्में कीर्तिका विस्तार होवै ॥ ९७ ॥

लोकैस्सार्द्धं वैमनस्यं विवादं मान्द्यं बुधेशत्रुस-  
म्वद्धनञ्च ॥ भूपाशङ्कातङ्कतः काश्यमङ्गे देवा-  
चार्ये मध्यवीर्येऽब्दपे स्यात् ॥ ९८ ॥

अर्थ—यदि मध्यबली बृहस्पति वर्षका स्वामी हो तो लोकजनोंसे विरोध विवादमें बुद्धि मंद होजावै शत्रुओंकी वृद्धि हो राजभयकी चिन्तासे शरीरमें दुर्बलता होवै ॥ ९८ ॥

जघनलोचनगुल्फपदोदरे हरहराऽतितरां परि-  
पीडनम् ॥ विकलतानिलतः खलतो भयं  
सुरगुरौ विकलेऽब्दपतौ भवेत् ॥ ९९ ॥

अर्थ—यदि सुरगुरु ( बृहस्पति ) बलहीन होकर वर्षपति होवै तो जंघा, नेत्र, गुल्फ ( चरणका ऊपरीभाग 'घुटुना' ) चरण, उदर ( पेट ) इन अंगोंमें वातविकारसे अति पीडा उत्पन्न हो और दुष्टजनोंसे भय होवै ॥ ९९ ॥

शुक्राऽब्दपफल.

दध्यादलं विलसितानि विलासिनीभिर्हास्यो-  
त्सवादिवि विधाम्बरवस्त्रलाभम् ॥ आरोग्यभा-  
ग्यविजयस्वजनाभिवृद्धिं यद्यऽब्दपो भृगुसु-  
तस्समुदारसारः ॥ १०० ॥



अर्थ—यदि शुक्र बली होकर वर्षपति होवै तो स्त्रीविलास सुखकोदेवै और हास्य व जूत्सव आदि सुख प्राप्तहोवै, तथा विविध प्रकारके मनोहर वस्त्र मिलें, शरीरसे आरोग्यताहो, भाग्यकी वृद्धिहो, शत्रुआदिसे विजय-प्राप्तिहो, और अपने बन्धुवर्गकी वृद्धि होवै ॥ १०० ॥

निजजनादरितोऽपि भयाऽन्विस्सुतसुता वनिता  
धनचिन्तया ॥ कफचयात्कृशपीततनुर्नरो भव-  
तिमध्यबलेऽब्दपतौ सिते ॥ १ ॥

अर्थ—जिसके वर्षमें शुक्र मध्यबली होकर वर्षका स्वामी हो, तो वह मनुष्य अपने बन्धुजनोंसे आदरयुक्त होनेपरभी भयभीत रहे, और पुत्र, कन्या, स्त्री और धनकी चिन्तासे व शरीरमें कफकी वृद्धिसे दुर्बलताको प्राप्त हो, तथा शरीर पीला पड़जावै ॥ १ ॥

खलजनेन कलिर्बहुलो भवेद्विकलता नृपको-  
पवशाद्भयम् ॥ धनविहीनतया भ्रमतामतेर्न  
नुविहीनबलेऽब्दपतौ सिते ॥ २ ॥

अर्थ—यदि हीन बली शुक्र वर्षपतिहो तो खलजन ( शत्रु ) से बहुत कलह राजकोपसे विकलता और भय उत्पन्नहो, धनहीन होनेके कारण मति चलायमान हो जावै ॥ २ ॥

### शनिवर्षेशफल.

शैलकाननवणिक्कृषिक्रिया म्लेच्छतोनिजमा-  
नसमीप्सितम् ॥ स्यान्मतिर्द्रुमलताऽभिरोपणो  
पूर्णसत्त्वसहितेऽब्दपे शनौ ॥ ३ ॥

अर्थ—यदि पूर्ण बलयुक्त शनि वर्षका पतिहो तो पर्वत, वन व्यापार, कृषिक्रिया ( खेती ) और म्लेच्छ, इनके द्वारा अपनी मनोकामना पूरी होवै, और बाग वाटिका लगानेमें रुचिहोवै ॥ ३ ॥



क्रोडपृष्ठगगलेक्षणपीडा जायते हि निबिडा  
पवनार्तिः ॥ मूर्तिरप्यतिकृशा बहुशेषा वर्षपे  
रविसुतेर्द्धबलाढये ॥ ४ ॥

अर्थ—यदि मध्यबलोपयुक्त शनि वर्षपतिहो, तो छाती, पीठ, कंठ, और नेत्रमें पीडाहो, तथा वातविकारसे महाक्लेश प्राप्तहो, शरीरभी बहुत दुर्लभ होजावे ॥ ४ ॥

अनिलतोबलकान्तिविहीनता विफलतापि  
निजेप्सितसाधने ॥ निजजनात्मजकष्टचयो  
भवेद्रविसुते विबले शरदीश्वरे ॥ ५ ॥

अर्थ—यदि बलहीन शनि वर्षका स्वामीहो वो वातप्रकोपसे शरीरमें बल और कान्तिका नाशहो, अपना मनोरथ साधन करनेमेंभी सफलता प्राप्त नहो, और अपने कुटुम्ब वर्गको बहुत कष्टहोवे ॥ ५ ॥

वर्षेशो निधनव्ययारिसदने यातोऽथवा पापकैः  
खेटैसंयुतवीक्षितो न शुभदोऽरिष्टं च कष्टं दिशेत् ॥  
केन्द्रेचेदृहसौख्यदः सहि भवेदन्यत्र चेदन्यथा सौख्यं  
सौख्यमतीव भूमिपतिना लीभादि कुर्यादयम् ॥ ६ ॥

अर्थ—यदि वर्षका स्वामी आठवें, बारहवें छठे स्थानमेंसे किसी एकमेंहो, अथवा पापग्रहोंकरके युक्त दृष्टहो तो शुभ फल नहीं देवे, अरिष्ट ( रोम व शत्रुआदिकसे भय ) और क्लेश देनेवाला जानना. और यदि वर्षेश केन्द्र १।४।७।१० में हो शुभग्रहोंसे युक्त दृष्टहो, अथवा अन्यत्र २।३।५।९।११ स्थानमें शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्टहो तो घरका सुख देवे, और सुखयुक्त कार्य होनेसे बहुतही सुख प्राप्तहोवे, तथा यह वर्षेश राजासे लाभआदि करे ॥ ६ ॥



## मुन्थाभावफल-

वरसभारसभागवनीपते रतिकलातिकलाय-  
समन्वितः ॥ सुजनताजनतापहरो नरस्त-  
नुगतानुगता यदि मुन्थहा ॥ ७ ॥

अर्थ—यदि मुन्था वर्षलभ्रमें होतो श्रेष्ठ सभाके विलाससे युक्त हो और राजाके आश्रयसे धनलाभहो, कला, चातुर्य और मनुष्योंमें प्रतिष्ठा होवै, और मनुष्य अपने बन्धुजनमें तापहरनेवाला होवै ॥ ७ ॥

मदबलादबलादिसुखोनरः सुकृतगः कृतगार्हि-  
तवारणः ॥ अधिकताऽधिकतापकरो द्विषांसुख  
धनस्सधनस्थितया तथा ॥ ८ ॥

अर्थ—यदि मुन्था धनस्थानमें स्थितहो तो मद ( वीर्य ) बलसे स्त्री आदि सुख मनुष्यको प्राप्तहो, और यशका उदयहो, अनिष्टका नाश हो, तथा शत्रुओंको अधिक सन्ताप होवै ॥ ८ ॥

निजयशोजयशोभितनुर्नरः सुकृतकृतकृतकृत्यतयो-  
न्नतः ॥ नैययुतोऽययुतो मुथहा यदाऽनुजगताजग  
ताकृतवर्णनः ॥ ९ ॥

अर्थ—जो मुथहा अनुज ( तृतीय ) भावमें प्राप्तहो तो मनुष्य अपने यशसे उत्पन्न यशकरके युक्तहो, अथवा अपनेही यशसे जय और शोभाको प्राप्तहो, और पुण्यके प्रभावसे मनोरथ परिपूर्णहो. हृदयमें नीतिका आवेशहो, तथा मनुष्योंमें बड़ाई होवै ॥ ९ ॥

स्वधनसाधनसाहसदुःखितो भयमितोयमि-  
तोऽपगतास्तिः ॥ नृपनयापनयादपि नो कथा  
रससुखस्सुखसंस्थितमुन्थहे ॥ १० ॥



अर्थ—यदि मुन्थहा सुख (चतुर्थ) भावमें स्थितहो तो अपने निमित्त धन उपार्जन करनेके साहससे दुःखितहो; बन्धुजनोमें अप्रीतिहो, राजीसे भयहो, नीतिसेभी रहितहो और प्रतिष्ठा भंग होजावे ॥ ११० ॥

सुजनपूजनपूततनुर्निराकरणधीरणधीरतया द्वि-  
षाम् ॥ अधिनिराधिनिरामुथहा यदा तनय-  
गानयगामितयान्वितः ॥ ११ ॥

अर्थ—जो मुथहा तनय (पंचम) भावमें हो, तो संत्कर्मद्वारा शरीरकी पवित्रता वृद्धिको प्राप्तहो, शत्रुओंका अपमानहो, मनकी व्यथा दूरहो और राजसभामें सन्मानहोवे ॥ ११ ॥

स्वसहितस्सहितस्थितवैरतोऽनुगतशेगतरोऽरि-  
भयान्वितः ॥ निजपतेर्जपतेपि महद्भयं परिग-  
ताऽरिगता मुथहा यदा ॥ १२ ॥

अर्थ—जो मुथहा अरि ( शत्रु ) भावमें स्थितहो तो समस्त कुटुंबवर्गमें वैरभाव उत्पन्नहो और रोगकी वृद्धिहो, तथा शत्रुसे भयहो, अपने स्वामीकी सेवा करनेपरभी महाभय प्राप्तहोवे ॥ १२ ॥

निपुरुषः पुरुषश्च वियोगितां प्रमदयामदयात-  
रिमुन्थहे ॥ धनयशोनयशोकरुजो लभेत् नि-  
जसमाजसमाक्रमनाशनम् ॥ १३ ॥

अर्थ—यदि मुन्था मद (सप्तम) स्थानमें स्थितहो तो पुरुष बन्धुवर्गसे पृथक् होकर छीसेभी वियोगभावको प्राप्तहो, और धन, यश, नीतिका नाशहो, तथा शोक, रोगसेभी युक्त होवै, व अपना समाजबल नाशहोजावे ॥ १३ ॥

व्यसनतस्सनतः कलहाकुलः स्वधनरोधनरोग-



युतो नरः ॥ अहिततो हिततोषविवर्जितः  
त्वशुभगो शुभगो यदि मुन्थहः ॥ १४ ॥

अर्थ—यदि मुंथहा अशुभ (अष्टम) स्थानमें स्थितहो, तो मनुष्यको अनेक प्रकारका दुःख प्राप्तहो, कलहसे चित्त व्याकुलहो अपने धनकी हानिहो, और वह मनुष्य रोगी होजावै, तथा शत्रुबाधाके कारण प्रीति और सन्तोष न रहै, और वर्षपर्यन्त अशुभ फल होवै ॥ १४ ॥

नृपकृतोपंकृतोत्सवगर्वितः प्रचलताचलताति-  
यशोन्वितः ॥ स्वहितकृद्वितकृन्मनुजो भवेत्  
ससुकृतस्सुकृतस्थितया मुथा ॥ १५ ॥

अर्थ—जो मुथहा सुकृत. ( नवम ) भावमें स्थितहो तो राजासे सन्मान प्राप्तहो, और यशही वृद्धिहो अपने कुटुम्बीजन तथा मित्रलोग हित करें और वह मनुष्य पुण्यके प्रभावसे युक्त होवै ॥ १५ ॥

निजमनोजमनोरथगौरवन्ननुभवेनुभवेद्विभवैर्युतः  
कमलयामलयापि यदीन्थिहा दशमगासुभगाद्बु-  
तबुद्धिभाक् ॥ १६ ॥

अर्थ—यदि मुथा दशमस्थानमेंहो तो मनुष्यको अपने मनोरथकी सिद्धि-  
का अनुभवहो, और वह मनुष्य विभव ( ऐश्वर्य ) से युक्तहो तथा लक्ष्मीकी  
वृद्धिहो, बुद्धि अच्छेकर्मोंकी ओर झुके ॥ १६ ॥

सुधिषणोधिषणोपमतम्ब्रजेत्तनुजतोऽनुजतोपि  
सुखन्नरः ॥ नृपसुखोपसुखोमुथहा यदा हर-  
मितारमितात्मजनव्रजः ॥ १७ ॥

अर्थ—जो मुथहा एकादश स्थानमेंहो, तो बृहस्पतिके समान बुद्धि



बड़े पुत्र और छोटे भाईसे मनुष्यको सुखप्राप्त होवै, राजासभी सुख मिलें और अपने सब कुटुंबीलोग प्रीति करें ॥ १७ ॥

धनविधानविधायरिवर्जितो हतनमस्तनय-  
स्वजनासुखः ॥ मनुजपेनुजपेविरतिर्भवेद्वय-  
मितायमिता यदि मुन्थहा ॥ १८ ॥

अर्थ—यदि मुन्था व्यय ( द्वादश ) भावमें स्थितहो तो धन मिलनेका द्वार नष्ट होजाय मति जाती रहै- पुत्र और कुटुम्बसे दुःख प्राप्तहो तथा देवताओंकी पूजासे चित्त हटजावै अर्थात् देवपूजनादिक कर्मोंमें मन न लौ ॥ १८ ॥

चेद्वर्षलग्नाच्छभगेन्थिहासा जनुस्तनोर्दुष्टफलप्र-  
दात्री ॥ मिश्रम्फलं कालविदो वदन्ति न्यूनाऽ  
विकत्त्वन्तुबलाऽनुमानात् ॥ १९ ॥

अर्थ—यदि मुन्था वर्षलग्नसे शुभ स्थानमें हो और जन्मलग्नसे अशुभ स्थानमेंहो तो ज्योतिर्विद शुभअशुभ मिलाहुआ फल कहतेहैं, परंतु उसमें न्यून अधिक ( कमती बढ़ती ) मुन्थाके बलके अनुमानसे कहना ॥ १९ ॥

आयुष्ये वा स्वेद्विषिद्वादशे स्याद्वर्षवेशे मुन्थहेशो  
न शस्तः ॥ रन्ध्रस्थानस्वामिना युक्तदृष्टः पापिष्ठैश्च-  
प्यस्तगो व्यस्तगो वा ॥ १२० ॥

अर्थ—यदि वर्षप्रवेश समयमें मुन्थाका स्वामी एकादश, द्वितीय, षष्ठ, द्वादश इनमेंसे किसी स्थानमेंहो तो शुभ नहीं होता और इन पूर्वोक्त स्थानोंसे अतिरिक्ति किसी दूसरे स्थानमें वर्तमान होकर जो सातवें स्थानके स्वामीके साथहो अथवा सप्तमभावस्वामीसे देखाजातहो यद्वा पापग्रहसे युक्त



दृष्टहो अथवा अपनी राशिसे सप्तमस्थानमें हो वा वक्रीहो तोभी शुभ नहीं जानना ॥ २२० ॥

भाग्ये च लाभे सहजे च केन्द्रे चेद्वर्षकाले  
मुथहाधिनाथः ॥ करोति पुंसां विपुलं प्रतापं  
मैत्रं नृपैः सम्प्रतिवर्द्धनं च ॥ २१ ॥

अर्थ—यदि वर्षप्रवेश समयमें मुंथास्वामी नवम, एकादश, तृतीय और केन्द्र ( लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम ) इन स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमेंहो, तो पुरुषके प्रतापको बढावै राजासे मित्रता करावै और बुद्धिकी वृद्धि करै ॥ २१ ॥

स्वस्वामिना तत्सुहृदा शुभेन बलोपपन्नेन  
युतेक्षिता वा ॥ स्यान्मुन्थहा सवर्मनोरथाम्यै  
नराधिपालादपि गौरवार्थम् ॥ २२ ॥

अर्थ—यदि मुंथा स्वामी अथवा उसका मित्र शुभग्रह बलवान् होकर मुंथाके साथहो अथवा मुंथाको देखताहो, तो वह मुंथा सम्पूर्ण मनोरथको पूर्ण करनेवाली होतीहै, और राजासेभी बढाई प्राप्तकरतीहै ॥ २२ ॥

सिंहीसूनोराननं भोग्यभागाः प्रोक्तम्पुच्छं केतुभक्तां-  
शकास्ते । वक्रे श्रेष्ठा सम्पदिष्टेथिहाब्दे लांगूले सा  
मानसा सौख्यकर्त्री ॥ २३ ॥

अर्थ—जिस राशिपर राहु स्थितहो, उसकी वक्रगति जे भोग्य अंशहैं उनको मुख कहतेहैं, और जे भुक्त अंशहैं उनकी पृष्ठसंज्ञाहैं, जैसे कन्याके दशवें अंशपर राहुस्थितहै, तो दश अंश मुखसंज्ञकहैं, और वक्रगतिसे बीस अंश पृष्ठसंज्ञकहैं, तथा जिस राशिपर राहु स्थित हो, उससे सातवीं राशि पुच्छसंज्ञकहै, परंतु यहां इस ऊपरोक्त श्लोकमें मुख, पुच्छ ये दोई मंजा



कहीहैं, अर्थात् जिस राशिपर राहु स्थितहै उसमे वक्रगतिसे राहुके योग्य अंशोंकी मुखसंज्ञाहै, और केतुके मुक्त अंशोंकी पुच्छसंज्ञाहै, राहुकी राशिसे सातवीं राशिपर केतु सदा रहताहै, और राहु सदा वक्रगतिसे राशियोंपर अग्रण करता रहताहै, अनेक पण्डित केतुकोही राहुकी पुच्छ कहतेहैं, यदि-वर्षप्रवेश समयमें मुंथा राहुके मुखमें पड़े तो शुभ फलप्रदान करतीहै और यदि लांगूल ( पुच्छ ) में मुन्था पड़े तो मनमें दुःख उपजातीहै ॥ २३ ॥

### ग्रहयुक्तमुन्थाफल-

नृविभुतो विभुतोत्थसुखान्वितः सुकृतमाकृतमानस-  
मुन्नतिः ॥ नियमनायमना मुथहा यदा रवियुता  
वियुतारिणो नरः ॥ २४ ॥

अर्थ-जो मुंथा रवि ( सूर्य ) से युक्त हो तों वह मनुष्य राजद्वारा से-  
वासे उत्पन्न सुख करके संयुक्त होवै, और ऐश्वर्य व मान बढे, शत्रुओंसे  
रहित होजावै ॥ २४ ॥

अविकृतोविकृतोज्झितसंगती रुचिरधीश्चिरधीरतया-  
न्वितः ॥ विभवतो भवतोषयितेतिहा भविभुना वि-  
भुना कृतगौरवः

अर्थ-जो मुंथा नक्षत्रनाथ ( चन्द्रमा ) करके संयुक्तहो तो देहको सुखहो,  
सज्जनोंसे समागमहो, और उत्तमबुद्धि, विभव, सन्तोष, राजासे मान प्राप्त-  
होवै ॥ २५ ॥

कुमतिना मतिनाशमसृजुजं विनतयानतयापचय-  
न्दिशेत् ॥ सदनतोद्गनतोसुखमिन्थिहा कुसुतयुक्स्व-  
जनास्दजनारुचिः ॥ २६ ॥

अर्थ-जो मुंथा मंगलसे युक्तहो तो कुबुद्धिसे बुद्धिका नाशहो अर्थात्



कुमृतिका प्रकाश हो और सुमृतिका नाश होवै, रक्तके विकारसे देहमें रोग उत्पन्न होजावै। अविनयभावसे विनयका विनाश हो घरसे और भोजनसे सुख न मिलै, अग्नने बन्धुओं और मित्रोंमें अरुचिहोवै ॥ २६ ॥

सुजनतो जनतो वद सत्कथा रसमुदारमुदार-  
मतिर्नरः ॥ स्वसहितस्सहितञ्च यदीन्थिहा  
ज्ञमिलितामिलितात्मजनव्रजः ॥ २७ ॥

अर्थ—यदि मुन्था बुधके साथहो, तो वह मनुष्य, सज्जनसमागम, सत्कथा श्रवण, मधुररस, उदारबुद्धि, सन्मार्गद्वारा द्रव्यलाभ, बन्धुमिलन इन पदार्थोंसे युक्त होवै ॥ २७ ॥

सुरमणी रमणीयविलासभाक्तनयमानयमानसु-  
खैर्युतः ॥ सुकृतिभिःकृतिभिर्मुथहा यदा स-  
धिषणा धिषणाभ्युदयान्वितः ॥ २८ ॥

अर्थ—यदि मुन्था बृहस्पतिसे युक्तहो तो मनुष्य स्त्रीविलाससुख, पुत्रसुख नीति, सन्मान इन सुखोंसे युक्तहो और सुकृतकर्मद्वारा सद्बुद्धि और ऐश्वर्यसे संयुक्त होवै ॥ २८ ॥

स्वकलितः कलितप्रभवो भवेदविभवो विभवो-  
द्धतपूरुषात् ॥ स्वसननस्सनतश्च यदीन्थिहा  
शनियुता नियुतार्थदुराशयः ॥ २९ ॥

अर्थ—यदि मुन्था शनिसंयुक्तहो, तो अपनी कलहसे चिन्ता उत्पन्न हो, और ऐश्वर्यवाले उन्मत्त पुरुषसे विभवरहित होवै, अपनी कान्तिसे हीन होजावै और मनमें दुष्ट मनोरथ प्रगट होवै ॥ २९ ॥

सुरारिगुरुणा यदा भवति संयुता मुथहा हता-  
स्त्रिपल्लवते सुरमणीरमेत्कामतः ॥ सुतस्वज-



नसौख्यभावभवतिभूपतेरुन्नतिं नतिं वितनुते-  
तरामखिललोक एतत्पदे ॥ १३० ॥

अर्थ—जो दैत्यगुरु ( शुक्र ) करके मुथहा संयुक्त होवें तो शत्रु हारकर भाग जावें, और कामके वश होकर सुन्दर स्त्रीसे रमण करै, पुत्रसुख व बन्धुमुत्ससे युक्त होवें, राजाके आश्रयसे धनकी वृद्धिहो, सब लोक सन्मान सहित उसको प्रणाम करैं ॥ १३० ॥

यन्मुथहायाः फलमुक्तमत्र शुभं विमिश्रन्त्व-  
शुभं विशेषात् ॥ तत्कल्पनीयन्मुथहेशपाके  
बलानुमानान्ननु बुद्धिमद्भिः ॥ ३१ ॥

अर्थ—यहां मुंथाका शुभ मिश्रित अशुभ भेदसे जो फल कहा सो फल मुन्थेशकी दशामें कल्पना करना, उसमें न्यूनाधिक्यता मुन्थेशके बलके अनुसार बुद्धिवानोंकरके जानना चाहिये. अर्थात् मुंथेश पूर्ण बलीहो तो पूर्ण फल कहना, मध्यम बलीहो तो मध्यम फल, हीन बली होतो हीन फल जानना, और मुन्था जिस ग्रहके साथहो उस ग्रहका बलभी देखकर फल कहना ॥ ३१ ॥

### हर्षबलसाधन.

नन्दाऽग्नितर्केन्दुशिवेष्विनारख्यास्सूर्यादिकानां स्वगृह-  
त्रिजोच्चम् ॥ पुंस्त्रीखगानान्तनुतस्त्रयञ्च निशादिनं स्त्री-  
नरसंज्ञितानाम् ॥ ३२ ॥ पुम्भानि पुंसां वनितागृहाणि  
स्त्रीव्योमगानाश्च यदास्पदानि ॥ हर्षास्पदेष्वब्धि ४  
विशोषकाश्च पृथक् पृथक् पञ्चसु सम्बदन्ति ॥ ३३ ॥

अर्थ—अत्र हर्षबल लिखते हैं, यहां हर्षबल पांच प्रकारसे वर्णन किया है, उसमें प्रथम यहकि सूर्य नवम स्थानमेंहो, चन्द्रमा तीसरेहो, मंगल छठेहो, बुध लग्नमेंहो, गुरु ग्यारहवें हो, शुक्र पांचवें हो, शनि बारहवें स्थानमें हो



तो यह प्रथम हर्षबलहै, और जो ग्रह अपनी राशि व अपने उच्च राशिमें हो तो हर्षित जानना, यह दूसरा हर्षबलहै, और लग्नसे तीन तीन भावोंमें पुरुषग्रह व स्त्रीग्रहों न्तो हर्षित होतेहैं अर्थात् १।२।३।७।८।९ स्थानमें पुरुषग्रह, और ४।५।६।१०।११।१२ स्थानमें स्त्रीग्रह हों तो यह तीसरा हर्षबल है, और रात्रिमें वर्ष प्रवेशहो तो स्त्रीग्रह, दिनमें वर्षप्रवेशहो तो पुरुषग्रह हर्षित होतेहैं यह चौथा हर्ष बलहै ॥ ३२ ॥ तथा पुरुषग्रह पुरुष राशिमेंहों स्त्रीग्रह स्त्रीराशिमें हों तो हर्षित जानना. यह पांचवा हर्षबलहै, इन पांचों-प्रकारके हर्षबलमें चार चार विश्वाका बल होताहै, जिस ग्रहका पांचों प्रकारसे हर्षबल प्रायाजावै तो पूर्ण वीस विश्वाका बल जानना, यहां चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ये चार ग्रह स्त्रीसंज्ञक कहातेहैं, और सूर्य, मंगल, गुरु ये तीन ग्रह पुरुषसंज्ञक कहातेहैं, इसमें नपुंसक ग्रह नहीं हैं ३३ ॥

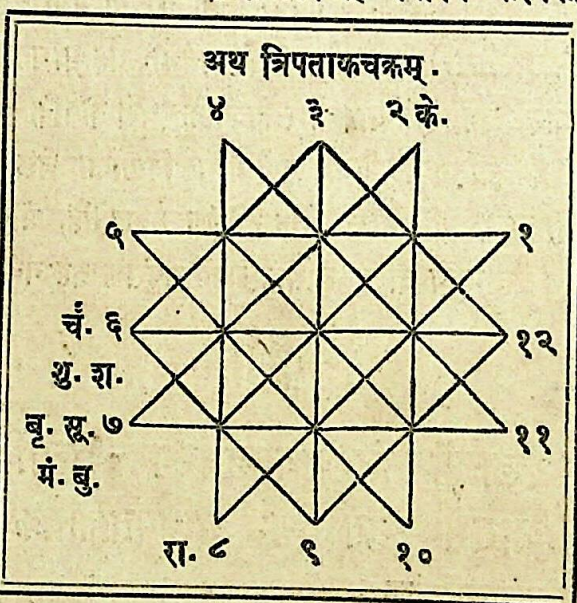
## त्रिपताकचक्रसाधन.

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमेकको-  
णात् ॥ स्मृतं बुधैः तन्निपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा-  
ग्रगवर्षलग्नात् ॥ ३४ ॥ न्यसेद्भुजचक्रं किल तत्र सैकां  
याताऽब्दसंख्या विभजेन्न भोगैः ॥ शेषोन्मिते जन्मग  
चन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥ ३५ ॥  
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु ले-  
ख्याः ॥ स्वर्भानुविद्धे हिमगोत्वरिष्टं तापोऽर्कविद्धेरुगि-  
नात्मजेन ॥ ३६ ॥ महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च-  
विद्धे जयसौख्यलाभः ॥ शुभाशुभं व्योमगवीर्यतोऽ  
त्रफलं तु वेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥ ३७ ॥



अर्थ—अब त्रिपताकचक्र लिखते हैं त्रिपताकचक्रकी यह रीति है कि तीन रेखा खड़ी और तीन रेखा वेड़ी बनावें, फिर एककोनेसे परस्पर सब रेखाओंको वेधित करदेवें इस प्रकार पण्डितोंका कहा चक्रलिखकर पूर्वकी मध्य रेखापर वर्षलग्नसे ॥ ३४ ॥ राशियोंको स्थापित करै जैसा कि, चक्रमें लिखा है सो देखकर समझलो. अनन्तर उन राशियोंपर ग्रह स्थापन करनेकी

रीति यह है कि गतवर्षसंख्यामें एक जोड़देवें और नवकों भागदेवें जो अंक शेष रहे उस अंक संख्याको ग्रहणकर, जन्मसमय जिस राशिका चन्द्रमाहो उस राशिसे गिनकर तुल्य राशिमें चन्द्रमाको लिखै ॥ ३५ ॥ शेष ( मं० वृ० शु० श० सू० ) ग्रहोंको स्थापित करनेके



लिये चारका भाग देवें शेष स्थानमें जन्मकाल ग्रह राशिसे ग्रह स्थापित करना, परन्तु यहां यह स्मरण रहे कि राहु, केतु अपनी राशिसे उल्टे चलते हैं उसी अनुसार पीछेकी राशिमें लिखना, सबग्रहोंका वेध चन्द्रमासे विचारना. चन्द्रमा व राहुसे वेधहो तो अरिष्ट जानना, चन्द्रमाका सूर्यसे वेध होतो ताप जानना, चन्द्रमा और शनिका वेधहो तो रोग जानना ॥ ३६ ॥ चन्द्रमाका मंगलसे वेधहो तो शरीरपीडा जानना. शुभग्रहसे चन्द्रमाका वेधहो तो जय व सुखका लाभहो. इसी प्रकार ग्रहोंका बल विचारके वेधका फल बुद्धिमान कहै ॥ ३७ ॥



## द्वितीयप्रकार.

नवभिर्हायनैश्चन्द्रराहुभौमरसाब्दके ॥ शेषा ग्र-  
हाश्च चत्वारि राहुकेतुश्च वक्रगौ ॥ ३८ ॥ वेधस्य  
चैकरेखायां राहुचन्द्रनरस्य च ॥ तदा कष्टं  
विजानीयात् तत्र वर्षेषु निश्चितम् ॥ ३९ ॥  
राहोर्जीवस्य वेधेतु मृत्युरेव न संशयः ॥ शुभवेधे  
भवेलाभो न्यूनाधिक्यं बलाद्भवेत् ॥ १४० ॥

अर्थ—दूसरे प्रकारसे त्रिपताकचक्र लिखते हैं. कि नववर्षपर्यन्त चन्द्रमा  
भ्रमण करता है अनन्तर उसी राशिपर आजाता है इसी कारण वर्तमान वर्ष-  
संख्यामें नवका भाग देवै. शेष राशिपर जन्मसमय प्राप्त चन्द्रराशिसे चन्द्र-  
मा लिखै. इसी प्रकार राहु और मंगल स्थापित करनेके लिये छेका भाग  
देवै शेष राशिपर राहु, भौम राशिसे राहु, भौम स्थापित करै, एवं शेष  
( सू. बु. बृ. शु. श. ) ग्रह चारका भाग देकर स्थापित करै. राहु, केतु  
वक्री रहते हैं सो स्मरण रहै ॥ ३८ ॥ अब वेध विचार कहते हैं कि राहु  
चन्द्रका एक रेखा में वेध आपडै तो उस वर्षमें मनुष्यको कष्ट जानना  
॥ ३९ ॥ राहु और बृहस्पतिका वेध होतो निस्संदेह मृत्यु होवै, शुभग्रह  
करके वेध होतो लाभ होवै. यहां न्यूनाधिकफल बल देखकर कहै ॥ १४० ॥  
यह दो प्रकारसे त्रिपताक वेध कहा गया इनमें पूर्वोक्त त्रिपताक सर्वमान्य है  
और द्वितीयप्रकारका उक्त त्रिपताक सर्व सम्मत नहीं है, अब पूर्वोक्त त्रिप-  
ताकका उदाहरण आगे लिखते हैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

## त्रिपताकचक्रोदाहरण.

गतवर्ष ३६ में १ संयुक्त किया तो ३७ इसमें नव९का भाग दिया तो  
शेष १ जन्म समय चन्द्रमा कन्याराशिका है इस कारण पहली कन्याही



राशिपर चन्द्रमा रहा, क्यों कि जिस राशिपर ग्रहहो उसी राशिसे गिनना चाहिये, एवं शेष ग्रहोंके स्थापित करनेके लिये ३७ में चार४का भाग दिया- भाग देनेसे शेष १ तो पहिलीही राशिपर शेष ग्रहभी रहे ॥

## मुद्वादशान्तर्दशा साधन.

विविधभावफलोत्थफलं खगो दिशति तद्यदने  
हसि सा दशा ॥ इति तदा नयनं नयसम्मतं  
परिवदामि विदां सफलं मुदे ॥ १ ॥

अर्थ—विविध प्रकारके भावफलसे उत्पन्नफल ग्रहोंकी दशामें होताहै यह समझकर दशासाधनप्रकार बुद्धिवानोंके प्रसन्नहेतु वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

जन्मर्क्षसंख्या सहिता गताद्वा दृग्नितानन्दः  
हृतावशेषाः ॥ आचंकुराजीशबुकेशपूर्वा दशाग्र-  
हास्वामिनइत्थमद्वे ॥ ४१ ॥ अथैषां दिवसा ज्ञेया  
धृति १८ स्त्रिशति ३० मूर्च्छनाः २१ वेदेषवो  
५४ नागकृता ४८ मुन्यर्थाः ५७ क्षितिसाय-  
काः ५१ ॥ ४२ ॥ मूर्च्छना २१ ॥ षष्टि ६० सं-  
ख्याताः द्वांदशांशेन मासजः ॥ वेदा ४ नागाः  
८ शराः ५ सप्त ७ दिग् १० रसा ६ ङ ९ श-  
राः ५ रसाः ६ ॥ ४३ ॥ सूर्यादीनाञ्च गुणकाः  
स्तौर्निघ्ना स्वदशामिति ॥ षष्ठ्याप्तान्तर्दशा तस्य  
जायतेतिपरिस्फुटा ॥ ४४ ॥

अर्थ—अब मुद्वादशा और अन्तर्दशाका साधनप्रकार लिपिवद्ध



करतेहैं, गतवर्षसहित जन्मनक्षत्र संख्यामें दोघटाकर नवका भाग लगावें शेष अंकोंसे १ आदित्य, २ चन्द्र, ३ कुज ( मंगल ) ४ राहु, ५ जीव ( बृहस्पति ), ६ शनि, ७ बुध, ८ केतु ९ शुक्र इत्यादि ये ग्रह दशाओंके स्वामी हैं. अर्थात् अश्विनी आदिसे गिनकर जन्मनक्षत्रसंख्याको गतवर्ष-संख्यामें जोड़देवै और नव ९ का भाग देवै. भाग देनेसे यदि १ शेष रहे तो सूर्यदशा और २ शेषसे चन्द्रदशा, तथा ३ शेषसे मंगलकी दशा और ४ शेष रहनेसे राहुकी दशा जानना, पांच ५ शेष रहनेसे बृहस्पतिकी दशा, छे ६ शेषसे शनिदशा, सात ७ शेषसे बुधदशा आठ ८ शेष रहनेसे केतुकी दशा नव ९ शेषसे शुक्रकी दशा जानना, इस प्रकार वर्षमें मुदादशा स्वामियोंको स्थापित करना ॥ ४१ ॥ अब इन पूर्वोक्त दशाओंकी दिनसंख्या कहते हैं, कि सूर्यकी दशाके १८ दिन जानना. चन्द्रमाकी दशाके ३० दिन, और मंगलकी दशाके २१ दिन और राहुकी दशाके ५४ दिन अर्थात् १ महीना २४ दिन जानना. बृहस्पतिकी दशाके ४८ दिन ( १ मास १८ दिन ) जानना. शनिदशाके ५७ दिन ( १ मास २७ दिन ) जानना, बुधदशाके ५१ दिन ( १ मास २१ दिन ) जानना, और केतुकीदशाके २१ दिन, और शुक्रकी दशाके ६० दिन अर्थात् २ महीना जानना, यह

| मुदादशाप्रमाणचक्र. |    |    |    |    |    |    |    |    |      |
|--------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|------|
| सू                 | कं | मं | रा | गु | श  | बु | के | शु | दशा. |
| ०                  | १  | ०  | १  | १  | १  | १  | ०  | २  | मास. |
| १८                 | ०  | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ०  | दिन. |

वर्षदशाहै. इसी संख्याके बारहवें भागसे मासदशाकी संख्या जानना, जैसे सूर्यकी दशा १८ दिनकी है तो बारहवाँ भाग १ दिन ३० घंटी हुई, इसी प्रकार चक्रमें स्पष्ट लिखदिया है, जिस मानमें जोदशा ( पूर्वोक्तीति अनुसार ) हो उसीकी प्रथम मासदशा लिखना द्वितीय मासमें मासप्रवेशके



| मासदशा प्रमाणचक्र. |         |         |         |         |         |         |         |        |            |
|--------------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--------|------------|
| सू                 | चं      | मं      | रा      | गु      | श       | बु      | के      | शु     | दशा        |
| १<br>३०            | २<br>३० | १<br>४५ | ४<br>३० | ४<br>०० | ४<br>४५ | ४<br>१५ | १<br>४५ | ५<br>० | दिन<br>घटी |

दिन जो नक्षत्रहो उस नक्षत्रसे पूर्वोक्त अनुसार दशा त्रिकालना, परंतु मासदशामें गतवर्षकी गतमास संयुक्त करना इसी प्रकार मासदशा लिखना, अबपूर्वोक्त मासदशासे अतिरिक्त मासदशाका क्रम आगे मास प्रवेश बना-

नेके स्थानमें लिखेंगे ॥ अब जो मुद्दादशा पूर्व लिख चुकेहैं उसकी अन्तर्दशा निकालनेके अर्थ गुणकांक लिखतेहैं कि सूर्यका गुणकांक ४, और चन्द्रमाका गुणकांक ८, तथा मंगलका गुणकांक ५, और राहुका गुणकांक ७, और बृहस्पतिका १०, तथा शनिका ६ और बुधका ९, तथा केतुका ५, और शुक्रका ६ गुणकांक जानना ॥ ४३ ॥ सूर्य आदि दशाओंके गुणकांकोकरके अपनी अपनी दशाओंको गुणकरै और ६० का भाग

| अन्तर्दशाप्रमाणचक्र. |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
|                      | सू | चं | मं | रा | गु | श  | बु | के | शु |
| सू                   | १  | २  | १  | २  | ३  | १  | २  | १  | १  |
| १८                   | १२ | २४ | ३० | ६  | ०  | ४८ | ४२ | ३० | ४८ |
| चं                   | २  | ४  | २  | ३  | ५  | ३  | ४  | २  | ३  |
| ३०                   | ०  | ०  | ३० | ३० | ०  | ०  | ३० | ३० | ०  |
| मं                   | १  | २  | १  | २  | ३  | २  | ३  | १  | २  |
| २१                   | २४ | ४८ | ४५ | २७ | ३० | ६  | २  | ४५ | ६  |
| रा                   | ३  | ७  | ४  | ६  | ९  | ५  | ८  | ४  | ५  |
| ५४                   | ३६ | १२ | ३० | १८ | ०  | २४ | ६  | ३० | २४ |
| गु                   | ३  | ५  | ४  | ५  | ८  | ४  | ७  | ४  | ४  |
| ४८                   | १२ | २४ | ०  | ३६ | ०  | ४८ | १२ | ०  | ४८ |
| श                    | ३  | ७  | ४  | ६  | ९  | ५  | ८  | ४  | ५  |
| ५७                   | ४८ | ३६ | ४५ | ३२ | ३० | ४२ | ३३ | ४५ | ४२ |
| बु                   | ३  | ६  | ४  | ५  | ८  | ५  | ७  | ४  | ५  |
| ५१                   | २४ | ४८ | १५ | ५७ | ३० | ६  | ३२ | १५ | ६  |
| के                   | १  | २  | १  | २  | ३  | २  | ३  | १  | २  |
| २१                   | २४ | ४८ | ४५ | २७ | ३० | ६  | २  | ४५ | ६  |
| शु                   | ४  | ८  | ५  | ७  | १० | ६  | ९  | ५  | ६  |
| ६०                   | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० |



देकर लब्ध अंक प्रमाण अन्तर्दशा जानना, इस प्रकार अन्तर्दशा स्पष्ट होती हैं, जैसे सूर्यकी दशा १८ दिनकी है और सूर्यका गुणकांक ४ से गुणकर दिया तो ७२ हुये साठसे भाग लगाया तो लब्ध १।१२ एक दिन बारह घड़ी सूर्यमें सूर्यकी अन्तर्दशा जानना, सो चक्रमें स्पष्ट लिख दिया है ॥ ४४ ॥

## मुद्दादशासाधनोदाहरण.

गतवर्ष ३६ जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी संख्या १२ युक्त किये तो ४८ हुये, दो घटाय दिये तो रहे ४६ इसमें नव ९ का भागदिया तो शेष

### अथ मुद्दादशाप्रवेशचक्रम्.

| सू                  | चं                | मं              | रा               | गु                   | श                   | बु                | के                     | शु                   | ऐक्यम्.            |                 |
|---------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------------------|---------------------|-------------------|------------------------|----------------------|--------------------|-----------------|
| ०                   | १                 | ०               | १                | १                    | १                   | १                 | ०                      | २                    | १२                 | मा.             |
| १८                  | ०                 | २१              | २४               | १८                   | २७                  | २१                | २१                     | ०                    | ०                  | दि.             |
| १२५६                | १२५६              | १२५६            | १२५६             | १२५६                 | १२५७                | १२५७              | १२५७                   | १२५७                 | १२५७               | सं.             |
| सू                  | सू                | सू              | सू               | सू                   | सू                  | सू                | सू                     | सू                   | सू                 | सू              |
| ६                   | ७                 | ८               | ९                | १०                   | १०                  | २                 | ४                      | ४                    | ६                  | रा.             |
| २२                  | १०                | १०              | १०               | २५                   | १३                  | १०                | १०                     | २२                   | २२                 | अं.             |
| १२                  | १२                | १२              | १२               | १२                   | १२                  | १२                | १२                     | १२                   | १२                 | क.              |
| ३३                  | ३३                | ३३              | ३३               | ३३                   | ३३                  | ३३                | ३३                     | ३३                   | ३३                 | वि.             |
| कार्तिक शुक्ल ४ भौम | मार्ग कृष्ण ८ शनि | पौष कृष्ण ७ रवौ | पौष शुक्ल १४ रवौ | फाल्गुन शुक्ल ८ गुरौ | वैशाख शुक्ल १२ गुरौ | आषाढ कृष्ण १२ रवौ | भाद्रपद कृष्ण ७ शुक्रौ | भाद्रपद शुक्ल १४ रवौ | मार्ग कृष्ण १ बुधे | दशप्रवेश मासादि |



१ से सूर्यकी मुद्दादशा प्रथम जानना, दूसरी दशा चन्द्रमाकी, तीसरी मंगलकी इस क्रमसे चक्रमें स्पष्ट देखलो. दशाके नीचे उसका प्रमाण, उसके नीचे सम्बत् सम्बत्के नीचे सूर्यराशि अंश कला विकला, फिर दशाप्रवेश मास पक्ष तिथि वार लिख दिया है; सो सब उदाहरणचक्रमें देखकर समझलो. अब आगे अन्तर्दशाचक्र लिखते हैं, तहां केवल सूर्यकी अन्तर्दशाका

### मुद्दादशासु सूर्यान्तर्दशाचक्रम्.

| सू                  | चं                  | मं                  | रा                  | गु                   | श                      | बु                | के                | शु                | ऐन्यम्.           |                       |
|---------------------|---------------------|---------------------|---------------------|----------------------|------------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-------------------|-----------------------|
| १                   | २                   | १                   | २                   | ३                    | १                      | २                 | १                 | १                 | १८                | दि.                   |
| १२                  | २४                  | ३०                  | ६                   | ०                    | ४८                     | ४२                | ३०                | ४८                | ००                | ब.                    |
| १२५६                | १२५६                | १२५६                | १२५६                | १२५६                 | १२५६                   | १२५६              | १२५६              | १२५६              | १२५६              | स.                    |
| सू                  | सू                  | सू                  | सू                  | सू                   | सू                     | सू                | सू                | सू                | सू                |                       |
| ६                   | ६                   | ६                   | ६                   | ६                    | ७                      | ७                 | ७                 | ७                 | ७                 | रा.                   |
| २२                  | २३                  | २५                  | २७                  | २९                   | २                      | ४                 | ७                 | ८                 | १०                | अं.                   |
| १०                  | ३१                  | ५५                  | २५                  | ३१                   | ३१                     | १९                | ०९                | ३५                | १९                | क.                    |
| ३३                  | ३३                  | ३३                  | ३३                  | ३३                   | ३३                     | ३३                | ३३                | ३३                | ३३                | वि.                   |
| कार्तिक शुक्ल ४ भौम | कार्तिक शुक्ल ५ बुध | कार्तिक शुक्ल ८ शनी | कार्तिक शुक्ल ९ रवौ | कार्तिक शुक्ल १२ भौम | कार्तिक शुक्ल १५ शुक्र | मार्ग कृष्ण २ रवौ | मार्ग कृष्ण ५ बुध | मार्ग कृष्ण ६ शनी | मार्ग कृष्ण ८ शनी | अन्तर्दशाप्रवेशमासादि |

चक्र लिखदेते हैं, सो समझलेना, जैसे कार्तिक शुक्ल चतुर्थी भौमवारसे सूर्यमें सूर्यकी अन्तर्दशा १ दिन १२ घटी पर्यन्त सो कार्तिक शुक्ल पंचमी बुधवारपर्यन्त जानना, इसी प्रकार अन्य अन्तर्दशाओंके प्रवेशका समय जानना, यह दशा अन्तर्दशाप्रकार स्थूलमानसे वर्णन किया है, अब गणितगत मुद्दादशाप्रकार आगे लिखते हैं ॥



## गणितागत मुद्दादशा प्रकार.

गौरीमतोक्तस्य दशाक्रमस्य दशादिमायाभवसादुपे-  
ता ॥ साभुक्तभोग्यक्षघटीविनिघ्ना सर्वक्षनाडीविहृ-  
ता दिनाद्यम् ॥ ४५ ॥ द्विधा यादृशं त्विह भोग्यभुक्तं  
तस्य ग्रहस्यैव लिखेदधस्तात् ॥ दशाप्रमाणं परतो  
ग्रहाणां यथास्थमग्रे विलिखेदधोऽधः ॥ ४५ ॥

प्रान्ते पुनर्भुक्तघटीसमुत्थं दिनाद्यमाद्यस्य लिखेत्स्वगस्य

अर्थ—गणितसे मुद्दादशा व्यावनेका प्रकार वर्णन करतेहैं.—पूर्व जो क्रम कह आयेहैं यद्यपि वहभी गणितहीसे सिद्ध होताहै तथापि इसमें विशेष गणित करने पड़ताहै, सो इस प्रकारकि 'जन्मक्षसंख्यासहिता गताद्वा' इत्यादि पूर्वोक्त गौरीमतसे बनाये हुये दशाक्रमसे जो दशा प्रथम आईहो- उसको स्थापित करै, फिर जन्मनक्षत्रकी भुक्त और भोग्य घटीसे दशाके दिनोंको गुणा देवै, उनमें सर्वक्ष अर्थात् भोग्य घटीसे भागलेवै जो दिना- दिक लब्ध हो ॥ ४५ ॥ उनको दो जगह स्थापित करै अर्थात् भुक्त घटि, योंसे गुणाकर भोग्य घटीसे भाग लेकरजो लब्धांक आयेहों उनको पृथक् स्थापित करै, और भोग्यप्रकारसे जो लब्धांक आयेहों सो पृथक् रखै, इसमें भोग्यप्रकारसे आये हुये दिनादि प्रमाणको लेकर प्रथम दशाके नीचे रखना, अनन्तर ग्रहदशाओंका प्रमाण यथायोग्य जिस २ का जो हो उसीके नीचे नीचे लिखना ॥ ४६ ॥ अन्तमें फिर भुक्तघटी प्रकारसे पूर्वोक्त लब्ध- दिनादिक जो आदिदशासे सिद्ध किया पूर्व स्थापितहै, सो रखना. अब इसका उदाहरण आगे लिखतेहैं



## गणितागत मुद्वादशा चक्रम्.

| सू                  | चं                   | मं                 | रा               | गु                   | श                  | बु                   | के                 | शु                | सू                  | ऐक्यम्.           |                    |
|---------------------|----------------------|--------------------|------------------|----------------------|--------------------|----------------------|--------------------|-------------------|---------------------|-------------------|--------------------|
| ०                   | १                    | ०                  | १                | १                    | १                  | १                    | ०                  | २                 | ०                   | १२                | मा.                |
| ७                   | ०                    | २१                 | २४               | १८                   | २७                 | २१                   | २१                 | ०                 | १०                  | ०                 | दि.                |
| ३                   | ०                    | ०                  | ०                | ०                    | ०                  | ०                    | ०                  | ०                 | २०                  | ०                 | व.                 |
| १०                  | ०                    | ०                  | ०                | ०                    | ०                  | ०                    | ०                  | ०                 | ५०                  | ०                 | पल                 |
| १९५६                | १९५६                 | १९५६               | १९५६             | १९५६                 | १९५७               | १९५७                 | १९५७               | १९५७              | १९५७                | १९५७              | सं.                |
| सू                  | सू                   | सू                 | सू               | सू                   | सू                 | सू                   | सू                 | सू                | सू                  | सू                | सू                 |
| ६                   | ६                    | ७                  | ८                | १०                   | ००                 | १                    | ३                  | ४                 | ५                   | ६                 | रा.                |
| २२                  | २२                   | २२                 | २०               | १४                   | ०२                 | २२                   | ०२                 | २२                | २२                  | २२                | अं.                |
| १०                  | ५८                   | ५८                 | ५८               | ५८                   | ५८                 | ५८                   | ५८                 | ५८                | ५८                  | ५८                | क.                 |
| ३३                  | ४३                   | ४३                 | ४३               | ४३                   | ४३                 | ४३                   | ४३                 | ४३                | ४३                  | ४३                | व.                 |
| कार्तिक शुक्ल ४ भौम | कार्तिक शुक्ल १२ भौम | मार्ग शुक्ल ११ बुध | पौष शुक्ल ११ बुध | फाल्गुन कृष्ण ११ रवौ | चैत्र शुक्ल १५ शनि | ज्येष्ठ शुक्ल १५ बुध | श्रावण शुक्ल १ रवौ | भाद्र शुक्ल २ सोम | कार्तिक शुक्ल ५ रवौ | मार्ग कृष्ण १ बुध | दशाप्रवेशसमयमासादि |

## उदाहरण.

जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी मुक्त घटिका ३६५. ४८ सर्वर्क्ष ( भोग ) घटिका ६४ पल १ मुद्वादशा प्रथम सूर्य दशा संख्या दिन १८ अब जन्मनक्षत्रकी मुक्त भोग्य घटीके क्रमसे भयात घटी पल ३६।४८के पल कर डालेतो २२०८ भोग्य घटी पल ६४।१के पल ३८४१ हुये. भयात पल २२०८को सूर्यदशाके दिन १८ से गुणाकिया तो ३८७४४ में भोग्य पल ३८४१ से भाग लिया तो दिन १० घटी २० पल ५० हुये. जन्मनक्षत्रकी भोग्य घटी पल ३७।३३ के पल किये तो ३६३३ हुये. सूर्यदशा दिन १८



से गुणात् २९३९४ हुये. इसमें भोग पल ३८४१ से भाग लिया तो लब्धदिन ७ घटी ३८ पल १० हुये. यहां भोग्य दिन आदिकको आदि-सूर्यदशाके नीचे लिखकर सम्पूर्ण दशाओंको प्रमांससहित चक्रमें लिखा है सो देखकर समझलो. अन्तमें सूर्य दशाका भुक्त लिखा है. फिर वर्षप्रवेशका सम्बन्ध सूर्य राश्यादि संयुक्तकर दशा काल स्पष्ट समझा दिया है, फिर अन्तर्दशाका चक्र पूर्व अनुसार समझकर बनालेना, यद्यपि यह रीति मुदा-दशाकी बहुत ठीक है परन्तु प्रायः पण्डितलोग इस प्रकार दशाको कुछ थोड़ेही परिश्रमके कारण आलस्यवश होकर नहीं बनाते हैं. पूर्व जो साधारण रीतिसे दशाप्रकार कह दिया है उसीको शीघ्रतापूर्वक लिख देते हैं. हमने जहां तक परिचय लिया है तो मुदादशामें ग्रहभावफल प्रायः मिलजाता है, मुदादशाकी अपेक्षा हीनांश चात्यांश दशामें परिश्रमभी बहुत है और फलभी पूर्ण रीतिसें संघटित नहीं होता, इसी कारण मुदादशाका क्रम लिखना इस ग्रन्थमें हमने उचित समझा. यह मुदादशा विंशोत्तरी महादशाके आधारसे बनाई गई है. संस्कृतमें मुदाशब्दका अर्थ आनन्ददेनेवाली, इसी मुदाशब्दसे मुदा नाम रखा है, कोई कोई पण्डित इसको मुग्धा कहते हैं मुग्धाका अर्थ कि युवा व सुंदर स्त्री. अथवा मुग्धा एकप्रकारकी नायिकाको कहते हैं ॥

अब योगिनीदशाके आधारसे जो वर्षदशा बनती है उसका क्रम लिखते हैं, क्योंकि योगिनीमें भी प्रायः पण्डितोंकी रुचि है ॥

## योगिनीमुदादशा.

गता समात्रिसंयुक्ता जन्मनक्षत्रसंयुता ॥

अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषेमांगलिकाऽऽदिमा ॥ ४७ ॥

तथाच गताब्दे स्वीयजन्मभसंख्यां संयोज्य अष्टवष्टे त्रियुक्ते शेषं वर्षप्र.

वेशस्यादौ योगिनी दशास्वात् ॥



अर्थ-गतवर्षमें तीन और जन्मनक्षत्र संख्या मिलाकर आठका भाग देव शेष मंगलाआदि दशा जानना ॥ ४७ ॥

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा ॥ उल्का  
सिद्धा संकटा च योगिन्यष्टौ दशाः स्मृताः ॥ ४८ ॥  
दशाहं मंगलावर्षे विंशाहं पिंगला तथा ॥ त्रिंशद्दिनं  
धान्यका च चत्वारिंशच्च भ्रामरी ॥ ४९ ॥ पंचाशद्भद्रिका  
प्रोक्ता चोल्काषष्टिदिनं तथा ॥ सिद्धा सप्तति संख्या च  
तथाशीत्यन्तिमा दशा ॥ ५० ॥

अर्थ-१ मंगला, २ पिंगला, ३ धान्या ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का  
७ सिद्धा, ८ संकटा, यह आठों योगिनीदशा कही हैं ॥ ४८ ॥ वर्षमें दस-  
दिन मंगला, बीसदिन पिंगला, तीस दिन धान्या, और चालिस दिन  
भ्रामरी, पचासदिन भद्रिका, साठदिन उल्का, सत्तरदिन सिद्धा अस्सी  
दिन संकटा दशा जानना ॥ ४९ ॥ ५० ॥

### उदाहरण.

गतवर्ष ३६ जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी संख्या १२ और ३ इनको  
युक्त किया तो ५१ हुये. आठका भाग दिया. भाग देनेसे शेष ३ रहे तो  
तीसरी धान्या प्रथमदशा वर्षमें हुई तो धान्या दशा प्रथम ३० दिन अ-  
र्थात् १ महीना रही, भ्रामरीदशा ४० दिन अर्थात् १ महीना १० दिन,  
भद्रिका ५० दिन अर्थात् १ महीना २० दिन, इसी प्रकार सम्पूर्ण दशा-  
ओंका न्यास करके सम्वत् सूर्यराश्यादि नीचे रखकर जोड़देवै, जैसाकि,  
चक्रमें लिख दिया है, सो समझलेना. इसकी अंतर्दशा बनानेका क्रम और  
चक्र यहां इस कारण नहीं लिखा, कि यद्यपि योगिनीदशामें पण्डितोंकी  
रुचि है, तथाहि योगिनीदशाके आधारसे बनाई हुई इस योगिनी मुद्गादशामें  
रुचि कमती दीख पड़ती है, और जैसे गणितागत मुद्गादशाका प्रकार जन्म



नक्षत्रसे है. ऐसेही योगिनी मुद्दादशाकाभी क्रमहै, अब जिसमें जिसको रुचिहो और फल घटित होता जानपड़े सो करना. परन्तु हमारी सम्म-  
तिमें गणित भाव प्रशस्तहै ॥

अथ योगिनीमुद्दादशाचक्रम्.

| धा.                  | आ.                  | म.                  | उ.                     | सि.                  | सं.                | मं.                    | पि.                   | ऐक्यम्.             |                               |
|----------------------|---------------------|---------------------|------------------------|----------------------|--------------------|------------------------|-----------------------|---------------------|-------------------------------|
| १<br>०               | १<br>१०             | १<br>२०             | २<br>०                 | २<br>१०              | २<br>२०            | ०<br>१०                | ०<br>२०               | १२<br>००            | मास.<br>दिन.                  |
| १२५६                 | १२५६                | १२५६                | १२५६                   | १२५७                 | १२५७               | १२५७                   | १२५७                  | १२५७                | सम्बत्.                       |
| सू                   | सू                  | सू                  | सू                     | सू                   | सू                 | सू                     | सू                    | सू                  | सूर्य.                        |
| ६<br>२२<br>१२<br>३३  | ७<br>२२<br>१२<br>३३ | ८<br>२<br>१२<br>३३  | १०<br>२२<br>१२<br>३३   | ००<br>२२<br>१२<br>३३ | ३<br>२<br>१२<br>३३ | ५<br>२२<br>१२<br>३३    | ६<br>२<br>१२<br>३३    | ६<br>२२<br>१२<br>३३ | राशि.<br>अंश.<br>कला.<br>विक० |
| कार्तिक शुक्ल ४ भौमे | मार्ग शुक्ल ५ गुरौ  | पौष शुक्ल १५ चन्द्र | फाल्गुन शुक्ल ५ चन्द्र | वैशाख शुक्ल ४ गुरौ   | आषाढ शुक्ल ६ बुध   | श्रावण शुक्ल १५ चन्द्र | कार्तिक कृष्ण १० गुरौ | मार्ग कृष्ण १ बुध   | दशाप्रवेशसमयमासादि            |

भावविचार.

शरीर वर्णचिन्हायुर्वयोमानं सुखासुखम् ॥ जातिः शी-  
लं च मतिमालग्न्यात्सर्वं विचिन्तयेत् ॥ ५१ ॥ सुवर्ण-  
रूप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखाधने ॥ विक्रमे भ्रातृभृत्या-  
ध्वपित्र्यस्खलनसाहसम् ॥ ५२ ॥ पितृवित्तनिधिक्षेत्रं  
गृहं भूमिश्च तुर्यतः ॥ पुत्रे मंत्रधनोपायगर्भविद्यात्मजे-



क्षणम् ॥ ५३ ॥ रिपौ मातुलमांघारिचतुष्पाद्वन्धमी-  
 व्रणान् ॥ द्यूते कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥  
 ॥ ५४ ॥ हुताध्वकलिमार्गादिचिन्त्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः ॥  
 मृत्यौ चिरंतनं द्रव्यं मृतवित्तं रणे रिपुः ॥ ५५ ॥  
 दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परीवारो मनोव्यथा ॥ धर्मे रति-  
 स्तथा पन्था धर्मोपायं विचिन्तयेत् ॥ ५६ ॥ व्योम्नि  
 सुद्रा परं पुण्यं राज्यं वृद्धिं च पैतृकम् ॥ आये सर्वार्थधा-  
 न्यार्धं कन्यामित्रचतुष्पदः ॥ ५७ ॥ व्यये वैरिनिरो-  
 धार्तिव्ययादिपरिचिन्तयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ—अब जिस जिस भावमें जो जो विचार करना चाहिये सो लिखते हैं,—कि, शरीरका सुख, दुःख, अर्थात् शरीरकी पुष्टता व दुर्बलता व रक्त श्वेत आदिवर्ण, व मशकादि चिन्ह, जीवन- बाल्य, यौवन, वृद्धवयस्, सुख, दुःख, ब्राह्मणादि जाति, आचरण, इन सबोंको बुद्धिवान् पण्डित लग्नसे विचार करै ॥ ५१ ॥ और सोना, चांदी, रत्न गैरिकादि धातु, कांस्यआदि-द्रव्य मैत्रिका विचार अर्थात् मित्र कैसेहोंगे, इन सबोंको धनभावमें चिन्त-वन करै, तथा तीसरे भावमें भाई बहिनोंका, व सेवक, व मार्ग चलना, व पितृसम्बन्धी कार्य, कार्योंका विध्वंस, साहस कर्म ( विना विचारे कर्म कर डालना ) इन सबोंको चिन्तवन करै ॥ ५२ ॥ पिताका धन गढाहुआ धन ( भांडाआदि ) खेती, घर, भूमिलाभ इन सबोंका विचार चौथे घरसे करना, पांचवें घरसे मंत्र ( गुप्तसंभाषण ) धनलाभका उपाय, गर्भ, विद्या-प्राप्ति, पुत्रलाभ इन सबोंका अवलोकन करै ॥ ५३ ॥ छठे भावमें मामा, रोग, शत्रु गाय भैंस आदि चौपाये, पराधीनता, तापत्रयसे भय, घाव, इन सबोंका विचार करै, सातवें भावमें स्त्री, व्यापार नष्ट वस्तु विस्मरण होना ॥ ५४ ॥ हरी हुई द्रव्यके मार्गका विचार, कलह, यात्रा आदि



इन सबोंका विचार करना सप्तम भावमें शुभ वा पाप कोई ग्रह  
 प्रेक्षमाण होवै तो अशुभ फलका देनेवाला होताहै, तथा आठवें भावमें  
 बहुत कालका धन, हुयेका धन संग्राम शत्रु ॥ ५५ ॥ कौटस्थान ( किला  
 आदि ) मरना, वस्तुका नष्ट होना, कुटुम्ब, मनकी व्यथा ( चिन्ता ) इन  
 सबोंका विचार करै, नवम भावमें रमण करना, यात्राका विचार, धर्मसाधन  
 इन सबोंका विचार करै ॥ ५६ ॥ दशमभवनमें मुद्रा ( राजमुद्रा ), परम  
 पुण्य, राज्य भाग्यवृद्धि, पितृसम्बन्धी विचार करै. ग्यारहवें घरमें सबद्रव्यों-  
 का प्रयोजन, धान्यका मौल्य, कन्या, मित्र, चौपाये, राजद्रव्य, कुटुम्बवि-  
 चार बहुत प्रकारके लाभ होनेका उपाय इन सबोंका चिन्तन करै ॥ ५७ ॥  
 बारहवें घरमें शत्रुओंका किया हुआ अवरोध ( अटकाव ), धनी पीडा,  
 व्यय ( खर्च ) आदि इन सबोंका विचार करना चाहिये ॥ ५८ ॥

लग्नादिभावा निजनाथयुक्ता दृष्टाश्च तेषां प्रवदन्ति  
 वृद्धिम् ॥ सौम्यैश्चतैः पापखगैर्विनाशं ह्येवं विमिश्राः  
 फलमिश्रदाश्च ॥ ५९ ॥

अर्थ—लग्न आदिक द्वादश भावोंमेंसे जो जो भाव अपने स्वामी शुभग्रह  
 करके युक्त अथवा दृष्टहो, उन भावोंकी वृद्धि कहना चाहिये, और पापग्रह  
 स्वामी करके युक्त वा दृष्टहो तो उस उसभावको विनाश कहना, और ल-  
 ग्नादि भाव स्वामी और ग्रह मिश्रितहों अर्थात् पापग्रह युक्तहो और शुभग्र-  
 हकी दृष्टिहो अथवा शुभग्रह युक्तहो और पापग्रहकी दृष्टिहो तो मिश्रित ( मि-  
 लाहुआ ) अर्थात् शुभ और अशुभ फल कहना, शुभग्रह शुभफल देनेवालेहैं  
 और पापग्रह अशुभफल देनेवालेहैं ॥ ५९ ॥

लग्नादिद्वादशभावफल.

तनुपतिर्बलमूर्तियुतः करोत्यतिसुखानि च कान्तिविवर्द्ध-



नम् ॥ भवति मध्यबले किलमध्यताऽधमबलेऽधममेव फ-  
लन्दिशेत् ॥ ६० ॥ केन्द्रत्रिकोणे तनुपः कसेति प्रकृष्ट-  
सौख्यं विजयाभिवृद्धिम् ॥ षष्ठेऽमेन्त्ये च विलग्ननाथः  
करोति रोगं मरणं व्ययं च ॥ ६१ ॥

॥ इति तनुभावः ॥

अर्थ—तनुपति ( लग्नका स्वामी ) बलवान् होकर यदि लग्नमें स्थित होवै, तो वह अत्यन्त सुखी करताहै और कान्तिको बढ़ाताहै, यदि लग्नस्वामी मध्यबलीहो तो मध्यम फल देनेवाला होताहै, और अधम बलीहो तो अध-  
मही फल देताहै ॥ ६० ॥ यदि लग्नका स्वामी केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ स्थानमें स्थितहो तो बहुत सुखी करता और विजयवृद्धि करताहै, तथा यदि लग्नका स्वामी छठे, आठवें, बारहवें स्थानमेंहो तो रोग, मरण, व्यय ( खर्च ) को करताहै, यह लग्नका फल कहा, इसी प्रकार बुद्धिसे बा-  
रहों भावोंका विचार करके पूर्णतया फल कहा जा सकताहै, जैसे लग्नका स्वामी शुभहो तो शुभ फल, अशुभ हो तो अशुभ फल देताहै, इसी प्रकार अन्य भावोंका स्वामी शुभहो तो शुभ, अशुभहो तो अशुभ फल देताहै, पूर्ण बलीहो तो शुभ, मध्यबलीहो तो मध्यम, अधम बलीहो तो अधम फल देताहै. तथा जैसे लग्नस्वामी केन्द्र त्रिकोणमेंहो तो शुभ, और ६।८।१२ हो तो अशुभ, इसी प्रकार अन्यभावोंमें विचारना. जिस जिसभावमें जो जो विचार कहा गयाहै उन सब बातोंका विचार करना ॥ ६१ ॥

॥ यह तनुभावका फल लिखाहै ॥

यद्यपि सूक्ष्म बातको दर्शाय दियाहै तथापि कुछ भाव फल लिखतेहैं ॥

## धनभावफल.

जन्मन्यब्दे वित्तभावं प्रपश्येद्वित्ताधीशो वर्षपश्चादिवीर्यः ॥

द्रव्यप्राप्तिर्वीर्यहीनेऽथ तस्मिन् क्रूराक्रान्तेनैकधा वित्त-



नाशः ॥ ६२ ॥ रन्ध्रेवित्ते देवतानाममात्ये पापैर्युक्ते राजदण्डः प्रचण्डः वित्ते वास्मिन्साधुखेटैः प्रदृष्टे संयुक्तेवा सेव्यमानो नरः स्यात् ॥ ६३ ॥

॥ इति धनभावः ॥

अर्थ—यदि धनभावका स्वामी बली होकर जन्ममें वा वर्षमें धनस्थानको देखे तो धनलाभहो, और वही यदि पापग्रहसे आक्रान्त ( घेराहुआ ) हो अथवा निर्बलहो तो अनेक प्रकारसे द्रव्यका नाश होवे ॥ ६२ ॥ यदि बृहस्पति दूसरे वा सातवें स्थानमें पापग्रह युक्त होवे तो प्रचण्ड राजदण्डको प्राप्त करे, और यदि धन ( दूसरा ) स्थान किसी शुभ करके दृष्ट युक्त हो अर्थात् शुभग्रह देखतेहों अथवा शुभग्रह धनस्थानमें हो, तो मनुष्यको शुभफल देनेवाला होताहै अर्थात् धन आदि पदार्थोंसे युक्त करताहै ॥ ६३ ॥

॥ यह धनभावका फल कहा ॥

### सहजभावफल-

सहोत्थभावे सहजाधिराजे वर्षाधिराजेन विराजमाने ॥  
विलग्नराजेन च संयुतेन सुखं सहोत्थैर तुलम्प्रकल्प्यम् ॥ ६४ ॥  
स्वामिना च सहजेश्वरेण वा नेक्षिते च सहजे खलैर्युते ॥  
भ्रातृवर्गपरिदुःखितो नरः क्रूरयुक्त सहजेश्वरेपि वा ६५

॥ इति सहजभावः ॥

अर्थ—यदि सहजाधिराज अर्थात् तीसरे स्थानका स्वामी सहोत्थ भावमें अर्थात् तीसरे घरमें वर्षस्वामी सहित विराजमानहो, और लग्नपतिभी संयुक्त होवे तो भाईयोंसे अतुल्यसुख जानना ॥ ६४ ॥ और यदि सहज ( तीसरे ) स्थानपर नतो तीसरे स्थानके स्वामीकी दृष्टिहो और न वर्षेशकी दृष्टिहो और पापग्रह उसमें स्थितहो, तो मनुष्य अपने भ्रातृवर्गसे दुःखित होवे,



अथवा तीसरे घरका स्वामी पापग्रहयुक्तहो तोभी पूर्वोक्त फल जानना ॥६५॥

॥ यह सहजभावका फल लिखा ॥

### सुखभावफल.

सचन्द्रसूर्ये सति तुर्यभावे पापेक्षिते दुःखमुशान्ति  
पित्रा ॥ भानोस्तथेन्दोर्भवनैकसूनुः पित्रा च मात्रा  
क्रमशो विवादम् ॥ ६६ ॥ यद्राशिगो जन्मनियामिनी-  
शस्तत्स्थशनिश्चेद्भयदो जनन्याः ॥ सुखे तुषारां-  
शुसितौ सपापौ स्याताममहाक्लेशकरौ श पित्रोः ॥ ६७ ॥

॥ इति चतुर्थभावः ॥

अर्थ—यदि चन्द्रमासहित . सूर्य चतुर्थभावमें हो और पापग्रहकी दृष्टिहो तो पितासे दुःख प्राप्तहोवै ऐसा कहना, और यदि सूर्य तथा चन्द्रमा इन दोनोंमेंसे किसी एकके भवनमें शनैश्चरहो तो पितामातासे विवादहो अर्थात् यदि सूर्यके घरमें हो तो पितासे- और यदि चन्द्रमा के घरमें हो तो मातासे विवादहोवै ॥ ६६ ॥ जिस राशिपर जन्म समयमें चन्द्रमा हो उसी राशिपर यदि वर्षमें शनिहो तो माताको क्लेश होवै, और यदि चतुर्थस्थानमें शुक्र व चन्द्रमा स्थित हो पापग्रह साथमें हो तो पितामाता दोनोंको महाक्लेश होवै ॥ ६७ ॥

॥ यह चतुर्थ भावकी फल कहा ॥

### पंचमभावफल.

बृहस्पतौ वर्षप्रतौ सुतस्थे लाभेऽथवा वीर्ययुते सुतेभ्यः ॥  
सौख्यं कुजे वा रविजेम्बुजेवाप्येवं विलोमात्फलमामनं-  
ति ॥ ६८ ॥ यस्मिन् राशौ गीष्पतिर्जन्मकाले वर्षे-  
राशिस्सोपि चेत्पञ्चमस्थः ॥ धात्रीपुत्रे तत्र संस्थे बुधे वा



वर्षावीशे चापि पुत्रोद्भवः स्यात् ॥ ६९ ॥ पुत्रक्षेत्राधी-  
 श्वरे पुत्रसंस्थे वीर्योपेते पुत्रसौख्यं बहु स्यात् ॥ क्रूरा-  
 क्रान्तेऽस्तंगते वा सुतानां पीडां गाढां प्रौढविद्या वद-  
 न्ति ॥ ७० ॥ यद्राशिगो जन्मनि भानुसूनुस्स एवरा-  
 शिर्यदि पंचमस्थः ॥ चिन्ता सुतानां विषमे सुतस्थेम  
 हीसुते व्यस्तगते सुतार्तिः ॥ ७१ ॥

॥ इति पंचम भावः ॥

अर्थ—यदि बृहस्पति बली होकर वर्षका स्वामी हो और पाचवें अथवा  
 ग्यारहवें स्थानमें वर्तमानहो, तो पुत्रोंसे सुख जानना, और यदि मंगल  
 शनि अथवा चन्द्रमा निर्बली होकर पूर्वोक्त ( ५।११ ) स्थानोंमेंसे किसी  
 एकमें हो तो इसके विपरीत फल जानना ॥ ६८ ॥ जन्मकालमें जिसरा-  
 शिपर बृहस्पतिहो, वही राशि यदि वर्षमें पंचम होवै और उस पंचमभावमें  
 मंगल अथवा बुध वर्षेश होकर पड़े तो उस वर्षमें अवश्य पुत्र उत्पन्न होवै ॥ ६९ ॥  
 यदि पुत्र ( पंचम ) भावका स्वामी पंचम घरमें हो और बलवान् होवै तो  
 तो उस वर्षमें पुत्रसुख जानना, और यदि वही पापग्रहोंसे आक्रान्त वा  
 अस्तहो तो पुत्रोंको महाक्लेश होवै, ऐसा विद्वान् ( ताजिक वेत्ता ) लोग  
 कहतेहैं ॥ ७० ॥ जन्मसमयमें जिसराशिका शनिहो, वही राशि वर्षमें यदि  
 पंचमभावमें हो, तथा विषमराशिस्थ मंगल पंचमहो तो उस वर्षमें पुत्रोंकी  
 चिन्ता होवै, और इससे विपरीतहो अर्थात् समराशिका मंगल पंचमहो तो  
 पुत्रपीडा होवै ॥ ७१ ॥

॥ यह पंचमभावका फल कहा ॥

## शत्रुभावफल.

विलोमगामी यदि मन्दगामी स्वामी सवर्षेकुरुतेऽत्रदो-  
 षम् ॥ शत्रुस्थितेस्मिन्नुधिरज्वरार्तिश्शूलोद्भवश्चापि वि-



चिन्तनीयः ॥ ७२ ॥ एवंसुरेज्येचकुजेर्केजेर्के वाताति-  
 पित्ताक्षिगदैःप्रपीडा ॥ शुक्रेव्ययेमृत्युसमानरोगःश्ले-  
 ष्मातिबाधाबहुधारिपुस्थे ॥ ७३ ॥ वर्षाधिराजेशशिजे-  
 रिपुस्थे पापादितेवातगदप्रकोपः ॥ तथैवचन्द्रेरिपुरंध्र  
 संस्थे श्लेष्मप्रकोपोमरणेनतुल्यः ॥ ७४ ॥ भूनन्दनो  
 जन्मनिभानुजोवा राशौस्थितौयत्रसएवराशिः वर्षेत्तनु-  
 स्थश्शनिना प्रदृष्टः शीतोष्णयक्ष्मान्वितपित्तबाधा ॥  
 ॥ ७५ ॥ बृहस्पतौपापयुतेऽष्टमस्थे साब्जेकुजेलग्नगतेस-  
 मूच्छा ॥ तन्द्राभवेद्वाऽथकलत्रसंस्थे सिंहीसुतेऽनन्तगदं-  
 वदन्ति ॥ ७६ ॥ योदुष्टखेटोजनिकण्टकस्थो वर्षेविल-  
 ग्नेसचनोशुभाय ॥ मुन्थाकलत्रेचरसातलेच करोतिशू-  
 लंशनिदृष्टदेहा ॥ ७७ ॥ सुरासुरेज्यास्पदगेमहीजे चा-  
 स्तंगतेशीतलताक्षिरोगः ॥ बुधेन्दुयुक्तेसतिकंठगण्डं स्फो-  
 टादिबाधा बहुधावबोध्या ॥ ७८ ॥

॥ इति शत्रुभावः ॥

अर्थ—यदि मन्दगामी ( शनि ) विलोमगामी ( वक्री ) होकर वर्षपतिहो,  
 तो वह उस वर्षमें रोग उत्पन्न करताहै, परंतु यहां शनि छठे स्थानमें  
 स्थित होतो रक्तजनित ज्वरकी पीडा और शूलरोगकीभी, उत्पन्न करताहै, ऐसा  
 जानना ॥ ७२ ॥ ऐसेही यदि बृहस्पति, मंगल, शनि सूर्य वक्री होकर  
 छठे स्थानमें स्थितहोवै तो वात पित्त विकारसे नेत्र पीडा होवै और यदि  
 शुक्र बारहवें होतो मृत्युके समान रोगहो, और छठे स्थानमें स्थितहो तो  
 बहुधा श्लेष्मविकारसे अधिक पीडा होवै ॥ ७३ ॥ यदि वर्षका स्वामी  
 बुध पापग्रहयुक्त छठे स्थानमें पड़े तो वात रोगका क्रोप होवै,



ऐसेही वर्षपद्धि चन्द्रमा पापग्रहयुक्त छठे स्थानमें हो तो श्लेष्माके कोपसे मरणके तुल्य ( क्लेश ) होवें ॥ ७४ ॥ जन्मसमय मंगल अथवा शनि जिस राशिपर स्थितहो, वही राशि वर्षमें वर्षलग्न होवै. उसपर चन्द्रमाकी दृष्टि होतो शीत ( सर्दी ) उष्ण ( गर्मी ) राज्यक्षमासहित पित्त विकारसे पीड़ा होवै, ॥ ७५ ॥ यदि बृहस्पति पापग्रह सहित आठवें स्थानमें स्थितहो, और चन्द्रयुक्त मंगल लग्नमें हो तो मूर्च्छा व तन्द्रा रोग उत्पन्न होवै. परन्तु यदि सप्तमस्थानमें होतो अनन्त रोग ( महाक्लेश ) होवै ॥ ७६ ॥ जन्मसमयमें जो कोई पापग्रह कंटक अर्थात् केन्द्र १।४।७।१० में स्थितहो और वह वर्षसमय लग्नमें होतो अशुभ जानना, और यदि मुंथा सातवें वा चौथे स्थानमें हो उसपर शनिकी दृष्टिहो तो शूलरोग उत्पन्न करताहै ॥ ७७ ॥ यदि बृहस्पति अथवा शुक्रके घरमें मंगलहो और अस्तंगत होवै, तो शीत विकारसे नेत्ररोग होजावै, और यदि बुध चन्द्रयुक्तहो तो गलगण्ड और फोड़ेकी बाधा बहुधा जानना चाहिये ॥ ७८ ॥

॥ यह छठे भावका फल कहा ॥

### सप्तमभावफल.

वर्षाधिराजेभृगुजेमनोज्ञे जायाविलासादिसुखानि नू-  
नम् ॥ विशेषतोजीवदशाधिकारीक्ष्माजेक्षणात्प्रीतिर-  
लम्बितः स्यात् ॥ ७९ ॥ बालाविलासान्बुधदृग्युति-  
भ्यां जारंजरत्याशनियोगदृग्भ्याम् ॥ वागीशयोगेनल-  
सद्विभूषां नवीनयोषांलभतेमनुष्यः ॥ १८० ॥ प्रसूतिल-  
ग्नाधिपतिर्बलीयान्वर्षेकलत्रेचकलत्रसौख्यम् ॥ लग्नेवि-  
लग्नेभृगुजेविवाहो वीर्यानि तेवाऽस्तपतेतदीये ॥ ८१ ॥  
चेदिन्दुसनुर्भृगुनन्दनस्य स्थानंगतस्त्रीसुखदो निरुक्तः



कलत्रनाथो बलवान्कलत्रे कलत्रकोलं विपुलां करोति ॥

॥ ८२ ॥ भूनन्दनश्चेद्भुगुनन्दनस्य स्थानं गतौ स्तेमुथहा-  
खलोवा ॥ खलस्य दृष्टौ हि कलत्रचिन्ता भवेन्नितान्तं हि  
सुतादिकानाम् ॥ ८३ ॥

॥ इति सप्तमभावः ॥

अर्थ—जो शुक्र बली होकर वर्षका स्वामी हो और सातवें घरमें पड़े, तो स्त्रीविलास आदि सुख अवश्य होवें, और जो कदाचित् शुक्र बृहस्पतिके हृदयमें हो उसपर मंगलकी दृष्टी हो तो दोनोंमें परस्पर बहुत प्रीति बढे ॥ ७९ ॥ और यदि पूर्वोक्त शुक्रपर बुधकी दृष्टि हो वा बुधयुक्त हो तो स्त्री विलास सुख होवें, और यदि शनि युक्त हो अथवा शनिकी दृष्टि हो तो बूढ़ी स्त्रीसे भोग विलास होवें, और यदि बृहस्पति युक्त होवें तो आभूषणयुक्त सुन्दर नवीन स्त्री मनुष्यको प्राप्त होवें ॥ ८० ॥ यदि जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होकर वर्षलग्नसे सातवें स्थानमें हो तो स्त्रीसुख प्राप्त होवें, और यदि शुक्र बली होकर उसी लग्नमें स्थित हो अथवा सातवें घरका स्वामी होकर वर्षलग्नमें पड़े तो विवाह होवें ॥ ८१ ॥ तथा यदि बुध शुक्रके घरमें हो तो स्त्रीको सुख देनेवाला कहना, और यदि सातवें स्थानका स्वामी बली होकर सातवें स्थानमें स्थित हो तो स्त्रीको बहुत सुखी करता है ॥ ८२ ॥ तथा यदि भूनन्दन ( मंगल ) शुक्रके घरमें पड़े और अस्त ( सप्तम ) भावमें हो, और मुंथा अथवा कोई पापग्रह हो और पापग्रहकी दृष्टि हो तो पुत्र आदि सन्तति और स्त्रीकी चिन्ता होवें ॥ ८३ ॥

यह सप्तमभावका फल कहा ॥

### अष्टमभावफल.

भौमेसमास्वामिनिहीनवीर्ये कुर्याद्विघातं शशिमेष्मिभी-  
तिम् ॥ नृयुग्मगेचौरनरेन्द्रबाधा भोमेष्मेष्वन्युतेष्व-



रिष्टम् ॥ ८४ ॥ कुजहिमांशुजयुक्तदिवाकरो मृतिकरो  
 मृतिगोविषयान्तरे ॥ रविसुतेदशमोपगतेतथा ज्वलन-  
 तोऽनलतोऽपिभयंभवेत् ॥ ८५ ॥ रवियुतेकुसुतेदशमस्थिते  
 भवतिवाहनतःपतनंविधौ ॥ कुजपदेनृपतोऽसुखमर्कजे  
 बलयुतेम्बरगेभयमस्रतः ॥ ८६ ॥ जनननिधनभावेदेव-  
 देवाधिदेवास्त्वधिकृतिपरिहीनोवादस्वेदप्रदस्यात् ॥ य-  
 दिदनुजपुरोधावीक्षितन्तत्तदानींजनयतिविजयाप्तिकष्टतो-  
 दुष्टवर्गात् ॥ ८७ ॥ वर्षपेकुजयुतेरणभीतिःप्रान्त्यसद्व-  
 निचभूमितनूजे ॥ वाग्विवादइननैधनास्तगेगोत्रशत्रुक-  
 लहःप्रबलस्स्यात् ॥ ८८ ॥

॥ इत्यष्टमभावः ॥

अर्थ—यदि बलहीन मंगल वर्षका स्वामी हो तो क्लेश उत्पन्नकरै, चन्द्र-  
 माकी राशिमें होतो अग्निसे भयदेवै, मिथुन राशिमें होतो चौर और राज-  
 बाधा हो, और यदि मंगल आठवें चन्द्रमासहित स्थितहो तोभी अरिष्ट जा-  
 नना ॥ ८४ ॥ यदि मंगल बुधसहित सूर्य आठवें स्थानमें हो तो अपनी  
 दशामें मृत्यु करै, तथा शनैश्चर दशम स्थानमें हो तो अग्निप्रकोप, और  
 वातविकारसेभी भय होवै ॥ ८५ ॥ यदि सूर्ययुक्त मंगल दशम स्थानमें हो  
 तो उसकी दशामें वाहनसे गिरै, और यदि मंगलके स्थानमें शनि पड़े तो  
 राजासे दुःख मिलै, और यदि शनि बली होकर दशम स्थानमें हो तो ह-  
 थियारसे भय होवै ॥ ८६ ॥ यदि जन्मसे आठवें स्थानमें बृहस्पतिहो, और  
 अपने हृदयमें नहो तो वाद और खेदको देवै, तथा यदि शुक्रकी दृष्टिमें हो  
 तो दुष्टवर्गोंके कष्टसे विजयप्राप्ति होवे ॥ ८७ ॥ यदि वर्षका स्वामी मंगल  
 सहित हो तो रणसे भयहोवै, और बारहवें भावमें स्थित मंगलकाभी यही



फलहै और यदि आठवें वा सातवें स्थानमें सूर्य होतो वाग्विवादं ( वात-  
चीत ) और गोत्रमें व शत्रुमें बहुत कलह होवे ॥ ८८ ॥

॥ यह आठवें भावका फल कहा ॥

### नवमभावफल.

वर्षस्वामी भूमिपश्चात्तसौम्यो धर्मेसंस्थोवातृतीयेबली  
यान् ॥ भागीदेवाभिष्टसिद्धिश्चलंयत्कार्यं स्तब्धंबुद्धि-  
मद्विर्विचार्यम् ॥ ८९ ॥ राज्येऽनुजेवाऽवनिजेऽदराजेस  
त्वेचैर्युक्तनिरीक्षमाणे ॥ गुणःप्रयाणेऽब्दपतौप्र  
युक्ते धर्मत्रिगेऽर्के गमनोद्गमस्स्यात् ॥ ९० ॥ वीर्यो  
पेतेपुण्यगेविक्रमेवा वर्षाधीशेभार्गवेमार्गसौख्यम् ॥  
सौम्येप्येवं तीर्थयानेऽभिमानो वीर्येन्यूनेदुष्टयानन्निरु-  
क्तम् ॥ ९१ ॥ तनुपनवमयोगेस्यादकस्मात्प्रयाणं सु-  
कृतकृतनिवासेवाक्पतौदूरयात्रा ॥ नभवतितनुजा-  
नांशोभनंभानुसूनौ नवमभवनगामिन्यामनन्तीतिस-  
न्तः ॥ ९२ ॥ भौमेसमास्वामिनिकेन्द्रसंस्थेदूरेस्थि-  
तिःस्यादभ्रमणेननूनम् ॥ उदारसारेनवमेश्वरेवा पुण्या-  
धिसंस्थेगमनंसुखेन ॥ ९३ ॥

॥ इति नवमभावफलम् ॥

अर्थ—यदि मंगल अथवा बुध वर्षका स्वामी होकर धर्म ( नवम ) स्था-  
नमें वा बली होकर तीसरे स्थानमें स्थितहो तो पहलेहीसे कार्यकी सिद्धि  
कहना, और जो कार्य चलहो तो उस कार्यको पुष्ट समझना. इस प्रकार  
बुद्धिवानोंको विचारना योग्यहै ॥ ८९ यदि मंगल वर्षपति होकर राज्य  
( दशम ) स्थान अथवा अनुज ( तृतीय ) स्थानमें हो और शुभ ग्रहोंकरके



युक्त हो, वा देखा जाताहो तो यात्राका विचार होवै, और वर्षपतिसहित सूर्य नवम व तृतीय स्थानमें स्थितहो तो अवश्य यात्रा होवै ॥ ९० ॥ यदि बलवान् शुक्र वर्षका स्वामी होकर पुण्य ( नवम ) स्थान वा विक्रम (तृतीय) स्थानमें स्थितहो तो मार्गसुख प्राप्तहोवै, और यदि कोईभी शुभ ग्रह इस प्रकार होतो तीर्थयात्रा विषयक अभिमानहो, यदि बलहीन होतो दुष्ट यात्रा कहना ॥ ९१ ॥ यदि नवमस्थान स्वामी और लग्न स्वामीका योगहो अर्थात् दोनों एक साथहो तो अकस्मात् यात्रा करना पड़े, और यदि सुक्रत ( नवम ) स्थानमें बृहस्पतिका निवासहो तो दूर जानापड़े, और यदि शनि नवम भवनमें प्राप्तहो तो पुत्रोंको शुभ नहीं होताहै ऐसा श्रेष्ठ पण्डित कहतेहैं ॥ ९२ ॥ यदि मंगल वर्षपति होकर केन्द्र १।४।७।१० में स्थितहो तो दूर देशमें भ्रमण करना पड़े, और वहीं स्थिति होवै, अथवा नवमभावका स्वामी बली होकर पुण्य ( नवम ) स्थानमें स्थितहो तो सुखपूर्वक यात्रा होवै ॥ ९३ ॥

॥ यह नवमभावका फल हुआ ॥

## दशमभावफल.

वर्षेशेदशमस्थितेबलयुते सज्यामि हर्षोदयः तस्माच्चापर-  
केन्द्रगे शुभयुतेस्थानान्तरामिनृणाम् ॥ सूर्येतुर्यगतेतुवी-  
र्यसहिते पूर्वाधिकारागमः कामंलाभगतेऽथवाभवपतेस्स  
ज्जायतेगौरवम् ॥ ९४ ॥ सिंहेप्रसृतौ समुदारसारोदिवा-  
करोराज्यकरोनराणाम् ॥ नीचस्थितः पापयुतः खयातः  
पृथ्वीपतेर्बन्धनमातनोति ॥ ९५ ॥ गगनभवनसंस्थामु-  
न्थहावर्षकाले लिखनपठनलाभं सत्पुत्राकरोति ॥



निजपतिसहितासारन्ध्रशत्रुव्ययस्थावितरतिबहुविघ्नप्राप्ति  
कालेनराणाम् ॥ ९६ ॥

॥ इति दशमभावः ॥

अर्थ—यदि वर्षका स्वामी बली होकर दशमभावमें होतो राज्यप्राप्ति और आनन्दबुद्धि होवै, और यदि अपरकेन्द्र १।४।७ में हो और शुभग्रह साथ-मेंहो तो स्थानान्तरकी प्राप्तिहोवै, तथा यदि सूर्य बली होकर चतुर्थ स्थानमें होतो पहलेका छुटा हुआ अधिकार प्राप्तहोवै, और यदि ग्यारहवें स्थानमें होतो राजासे मान और बडाई मिलै ॥ ९४ ॥ यदि वर्षमें पांचवीं लग्न सिंहहो और उसमें सूर्य बली होकर स्थितहो तो मनुष्यको राज्यपदवी देवै, और यदि नीचराशिस्थित ( तुलागत ) सूर्य पापग्रहयुक्त दशम स्थानमें पडै तो राजासे बन्धनका विस्तार करताहै ॥ ९५ ॥ यदि वर्षकालमें मुंथहा बली होकर दशमस्थानमें विराजमानहो तो लिखने पढनेसे लाभ होवै, और यदि वही मुंथा अपने स्वामीकेसाथ आठवें, छठे, बारहवें स्थानमेंसे किसीएक स्थानमें हो तो कार्यप्राप्तिके समय बहुत विघ्न करताहै ॥ ९६ ॥

॥ यह दशमभावका फल हुआ ॥

## लाभभावफल.

खलैर्विहीना बलिनश्शुभाख्या लाभालयेलाभकराभवन्ति ॥ हानिस्सपापास्तगलाभनाथे दण्डस्तथाचित्रशिखण्डसूनौ ॥ ९७ ॥ इलासुतः स्थानगतः कलावान् स्थलान्तरेऽसौसकलार्थदः स्यात् ॥ लाभस्थितो लाभपतिर्नितान्तं विद्याप्रसंगेन करोतिलाभम् ॥ ९८ ॥

॥ इति लाभभावः ॥

अर्थ—यदि पापग्रहोंसे रहित शुभ ग्रह लाभ ११ स्थानमें हो तो वे लाभकारक होतेहैं, और यदि लाभस्थानका स्वामी पापग्रहयुक्त अस्तंगत होतो



हानि तथा केतु हो तो दुःख जानना ॥ ९७ ॥ यदि मंगलके घरमें चन्द्रमा पड़े तो वह दूसरे स्थानसे सम्पूर्ण कामना देनेवाला होता है, और जो लाभस्थानका स्वामी लाभस्थानमें स्थित हो तो वह विद्याप्रसंगसे लाभ करनेवाला जानना ॥ ९८ ॥

॥ यह ग्यारहवें भावका संक्षेपफल कहा ॥

## व्ययभावफल.

मनुष्यराशौ व्ययभावसंस्थे वर्षाधिराजेभृगुजेक्षिते स्यात् ॥  
भृत्त्याश्रितानांच चतुष्पदस्थे चतुष्पदानां विबले विशेषात् ॥ ९९ ॥ व्ययालये वा निधनालये वा बलीसमेशोजलजेशसूनुः ॥ जलाशयं सन्निलयं द्रुमाणमारोपणां सौम्ययुतः करोति ॥ २०० ॥ तडागकूपोत्तमवापिकानामुत्पादनं वै सुरमन्दिराणाम् ॥ आरोपणं चारुमहीरुहाणां वाचस्पतौ वर्षपतौ व्ययस्थे ॥ १ ॥ गगनवेश्मनिभानुसुतान्वितेऽवनि सुतेऽब्दपतौ पशुनाशनम् ॥  
द्विषिचतुष्पदराशिगते रवावनुचरेऽसहितो बहुदुःखदः ॥ २ ॥

॥ इति व्ययभाव फलम् ॥

अर्थ—यदि व्यय १२ भावमें मनुष्य राशि हो उसपर वर्षेश शुक्लकी दृष्टि हो तो अपने आश्रित सेवकोंको क्लेश होवै, और यदि चतुष्पद राशि व्ययभावमें हो तो ( गाय, घोडा आदि ) चौपायोंको क्लेश होवै ॥ ९९ ॥ जो वर्षेश शनैश्चर बली होकर बुधके साथ हो और वर्षलग्नसे बारहवें अथवा आठवें स्थानमें हो तो जलाशय ( वापी, ) कूप, तडाग आदि ) सुन्दरस्थान ( उत्तम घर ) वाटिका आदि बनाने और आरोपण करनेमें उत्साह बढे ॥ २०० ॥ यदि बृहस्पति वर्षेश होकर बारहवें स्थानमें हो तो तडाग, उत्तम कूप, बाउली, देवमन्दिर आदि बनवाने और सुन्दर वृक्ष लगानेका उत्साह



होवै ॥ १ ॥ जो भानुसुत ( शनैश्वर ) संयुक्त मंगल वर्षेश होकर दशम-  
स्थानमें पड़े तो पशुओंका नाशहो और यदि किसी चतुष्पद राशिपर स्थित  
सूर्य छठे स्थानमेंहो तो सेवकों सहित उसको बहुत दुःख होवै ॥ २ ॥

यह बारहवें भावका फल कहा ॥

## भावफलसमय.

प्रांचाविचाराऽनुमतंनितान्तं मयोदितं द्वादशभाव  
जातम् ॥ फलं बलंवीक्ष्यनभश्चराणां तद्योजनीयंहि  
दशासुतेषाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—सम्पूर्ण प्राचीन आचार्योंका मत भली भांति विचार कर मैंने यह  
बारहों भावोंका संक्षेपफल वर्णन किया. इसमें जो जो फल जिन जिन  
ग्रहोंसे होनेकी संभावनाहो. उन उन ग्रहोंका बल देखकर उन उनकी  
दशामें वह वह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

## ग्रहभावफल.

इतीरयित्वाखिलभावजातफलानिसत्कोमल-  
वाग्विलासैः ॥ वक्ष्येऽधुनाविष्णुपदारुपदा-  
नां प्रथक् पृथग्भावफलानिनूनम् ॥ ४ ॥

अर्थ—इस प्रकार कोमल मधुर वचनोंसे सम्पूर्ण भावजनित फल कहकर,  
अब पृथक् पृथक् भावगतग्रहोंका फल वर्णन करताहूं ॥ ४ ॥

## सूर्यभावफल.

स्याच्छिरोवदनलोचनपीडा यातिकान्ति  
तनुतामपिकान्ता ॥ चिन्तयातितनुतातनुरु-  
च्चैर्हायने दिनपतौतनुसंस्थे ॥ ५ ॥



अर्थ—वर्षमें यदि सूर्य लग्नमें स्थित हो तो शिर, मुख, नेत्रमें पीडाहो, कान्ति जाती रहै और स्त्रीभी दुःखितहो चिन्ताके कारण शरीर अति दुर्बल होजावै ॥ ६ ॥

चौरवैरिनिकराच्चनरेशादग्निनाभवतिभीतिस्तीव्र ॥

स्थिरकुटुम्बकलहः किलनित्यं वत्सरे दिनकरे धनसंस्थे ॥ ६ ॥

अर्थ—यदि वर्षमें सूर्य धन ( द्वितीय ) स्थानमें स्थितहो तो चौर, शत्रु-गण, राजा और अग्निसे बहुत भय होवे और कुटुम्बमें नित्य कलह होवै ॥

राजमानकनकागमनाद्यैर्हृष्टता च परि पुष्टि-  
रपीह ॥ कार्यसाधनमथो विजायते भानुमा-  
न्ननुयदाऽनुजसंस्थः ॥ ७ ॥

अर्थ—जो सूर्य अनुज ( तृतीय ) स्थानमें स्थितहो तो राजासे मान धनका आगम, शरीरसुख, पुष्टता और कार्यसिद्धि होवै ॥ ७ ॥

भूमिपालकुलभीतिकृशत्वं वैरिभावमुपयाति  
सुहृद्भिः ॥ वाहनायचयताश्चनितान्तं भूतले  
कमलकाननकान्ते ॥ ८ ॥

अर्थ—जो कप्रलवनस्वामी ( सूर्य ) भूतल ( चतुर्थ ) भावमें विराजमान हो तो राजकुलसे भयहो, वैह दुर्बल होजावै, मित्रसे वैरभाव हो, और वाहन ( सवारी ) से बहुत भय प्राप्त होवै ॥ ८ ॥

पुत्रमित्रपरिवारकलत्रोत्पन्नपीडनविहीनसुखः  
स्यात् ॥ मानवोमतिधनैः परिशून्यः पद्म-  
काननपतौ सुतसंस्थे ॥ ९ ॥

अर्थ—यदि पद्मकाननपति ( सूर्य ) सुत ( पंचम ) भावमें स्थितहो तो पुत्र, मित्र, परिवार ( कुटुम्ब ) स्त्री, इनकेद्वारा क्लेश उत्पन्न होवै और सुखसे रहितहो, तथा वह मनुष्य बुद्धि और धनसे हीन होजावै ॥ ९ ॥



वैभवंहिलभतेक्षितिपालात्कामिनीविपुलके  
लिविलासम् ॥ शत्रुवर्गविजयोधनवृद्धिर्वैरि-  
मन्दिरगतस्सवितऽब्दे ॥ २१० ॥

अर्थ—यदि वर्षमें सूर्य वैरिमन्दिर ( छठेघर ) में हो तो राजासे ऐश्वर्यः प्राप्तहो, स्त्रीसे भोगविलासादि सुख, शत्रुओंसे विजय और धनकी वृद्धि होवै ॥ २१० ॥

बस्तिलोचनशिरः परिपीडा यागमागमनमत्र  
विचित्रम् ॥ हायनेदिनपतौमदसंस्थे कामिनी  
जनमनःपरितापः ॥ ११ ॥

अर्थ—यदि सूर्य सप्तमस्थानमें हो तो पेड़, नेत्र, शिर, इनमें पीडाहो और विचित्र यान ( अच्छीसवारी ) प्राप्त होवै, तथा स्त्रियोंका मन दुःखित रहै ॥ ११ ॥

पित्तसम्भवविकारशरीरे नेत्ररूपपरिभयेनचदुःखम् ॥  
भूमिपालगरलज्वलनाद्यैर्व्यालतोऽपिभयमष्टमगेऽर्के १२

अर्थ—यदि सूर्य आठवें स्थानमें प्राप्तहो तो शरीरमें पित्तजनित विकार हो, नेत्ररोगहो, परिभव ( अनादर ) से दुःखहो और राजा, विष, अग्नि व सर्पसेभी भय होवै ॥ १२ ॥

धर्मकर्मविगताभिरुचित्वं चिन्तयाचविभतित्त्वमतीव ॥  
संस्थितेनवमधाम्निचमित्रे मित्रपुत्रककलत्ररतिस्स्यात् ॥ १३

अर्थ यदि मित्र ( सूर्य ) नवमधाममें स्थितहो तो धर्मकर्मसे रुचि जाती रहै, अर्थात् वृद्धि धर्म कर्मसे विरुद्ध होजावै, चिन्ताके कारण मति महामन्द होजावै, और मित्र पुत्र व स्त्रीमें लज्जा होवै ॥ १३ ॥



राजगौरवयशस्सुखवित्तन्नित्यमेवचयतामुपयाति ॥

कार्यसिद्धिरपिबुद्धिविधानादम्बरेऽम्बरमणोरमणीये १४

अर्थ—यदि अम्बरमणि ( सूर्य ) अम्बर ( दशम ) भवनमें रमण करता ( स्थित ) हो तो राजासे मान, बडाई, यश, सुख और धन इनकी नि-  
त्पही वृद्धि होवै और वृद्धिके प्रभावसे सम्पूर्ण कार्य सिद्धिहोवै ॥ १४ ॥

दद्यात्सम्यग्भाग्यमारोग्यपूर्वं हर्षोत्कर्षेणैरुषंशत्रुनाशम् ॥

क्षोणीपालात्प्राप्तिमर्थागमञ्च प्राप्तिप्राप्तस्सप्तसमिद्धनामिम् ५

अर्थ—यदि सप्तसप्ति ( सूर्य ) प्राप्ति ( लाभ ) स्थानमें प्राप्तहोतो भा-  
ग्यका उदय, आरोग्यता हर्ष, उत्साह, पौरुष, शत्रुनाश, राजासे प्राप्ति  
और कामनाओंकी सिद्धि तथा धनलाभ अवश्य होवै ॥ १५ ॥

वैरस्मिन्नेत्रपीडातिगाढां पित्तोत्पत्तिःस्या

द्विपत्तिर्धनस्य ॥ नप्राशस्त्यस्यापिवाप्तिः कदा-

चिद्धर्षावेशेद्वादशे द्वादशात्मा ॥ १६ ॥

॥ इति सूर्यभावफलानि ॥

अर्थ—यदि वर्षप्रवेशसमय द्वादशात्मा ( सूर्य ) द्वादशस्थानमें पडै तो  
मित्रोंसे वैर, नेत्रपीडा और गाढ पित्तकी उत्पत्ति होवै तथा धनका नाशहो,  
प्रशंसासे रहित होजवै कि जिससे दुःखही दुःख जानपडै ॥ १६ ॥

॥ यह सूर्यका भावफल लिखा ॥

चंद्रभावफल-

किरणपूरणताहियथायथा भवतिशीतकरेशुभतातथा ॥

अथतथैवमयूखविहीनता हिमकरेऽतितरांपरिदुष्टता ॥ १७

अर्थ—चन्द्रमा जैसे जैसे अंशोंमें बढ़ता जाताहै वैसे वैसे शुभ फल



करताहै, पूर्ण शुभ फल करताहै, और जैसे जैसे क्षीण होताहै, वैसेही दुष्ट फल करताहै, ऐसा सर्वत्र जानना ॥ १७ ॥

श्वासाऽरिबाधाबहुधानराणां तथाविकासन्नयनाननेषु ॥  
द्रव्यागमंचान्यतमंकुशत्वं होरागतशीतकरः करोति १८

अर्थ—जो चन्द्रमा लग्नमें होतो श्वासरोग, प्रायः शत्रुबाधा तथा नेत्र व भुखमें विकार उत्पन्न करताहै द्रव्यका आगम और शरीरमें दुर्बलताभी करताहै ॥ १८ ॥

स्वजनगौरवतांविमलामतिःप्रतिदिनंसितवस्तुसमागमम् ॥  
धनगतःकुस्तेधनसंचयं हिमकरोनकरोतिरिपूदयम् ॥ १९ ॥

अर्थ—यदि हिमकर ( चन्द्रमा ) धन भावमें पड़े तो आत्मीयजनोंको बड़ाई मिले, प्रतिविमलहो, प्रतिदिन श्वेतवस्तुकी प्राप्तिहो, धनका संचय और शत्रुका नाशहोवै ॥ १९ ॥

द्रव्यलाभविविधोत्सवपूर्वं गर्वितारिपरिहारविभुत्वम् ॥  
धर्मकर्मणिरतिसहजतथः सम्प्रयच्छतिवृणांहरिणांकः २२०

अर्थ—यदि चन्द्रमा तीसरे स्थानमें होतो द्रव्यलाभ, विविध प्रकारके उत्सव, अहंकारी शत्रुका नाश, अधिकारप्राप्ति, धर्मकर्ममें प्रीतिहोवै ॥ २२० ॥

तुरगयुवतिसौख्यं गोमहिष्यादितोवा निजजन-  
मथलाभक्षेत्रपुत्रोन्नतिच ॥ जनयतिमनुजानां  
नूनमानन्दपूरं हरिणकिरणमाली भूतलस्थान  
शाली ॥ २१ ॥

अर्थ—यदि हरिणकिरणमाली ( चन्द्रमा ) भूतल ( चतुर्थ स्थानमें हो, तो अश्व ) घोडासे सवारीका ( सुख, वीसुख, गौ व भैंसीसे ) दुग्ध,



आदि पदार्थ सुख, बन्धुलाभ, क्षेत्र और पुत्रकी वृद्धि तथा नाना प्रकारसे आनन्द उत्पन्न होवै ॥ २१ ॥

भूमिपालकुलतोविपुलामिं कामिनीविलसितानि नितान्तम् ॥ बुद्धिगौरवजयोत्सववृद्धिं सम्प्रयच्छतिसुतेऽमृतरश्मिः ॥ २२ ॥

अर्थ—यदि अमृतरश्मि ( चन्द्रमा ) सुत ( पंचम ) स्थानमें होतो राजकुलसे बहुत लाभहो और नितान्त स्त्री विलाससुख प्राप्तहो, तथा बुद्धिगौरव, जय, उत्सवकी वृद्धि होवै ॥ २२ ॥

श्लेष्मवातजनितांमतिबाधां बान्धवैश्वविदधाति विवादम् ॥ तस्कराश्चतुपतेर्दृढपीडां वैरिवैश्मनि निशापतिरेषः ॥ २३ ॥

अर्थ—यदि निशापति ( चन्द्रमा ) वैरि ( षष्ठ ) भवनमेंहो, तो श्लेष्मा व वातकी अति बाधाहो, और बान्धवजनोसे विवाद होवै, चौर और राजासे बहुत भय होवै ॥ २३ ॥

राजमानजनगौरवयुक्तं विक्रयक्रयकलत्रजसौख्यम् ॥

द्रव्यलाभसुलभामपिलक्ष्मीमिन्दुरिन्दुवदनासदनस्थः २४

अर्थ—यदि चन्द्रमा इन्दुवदना ( सप्तम ) स्थानमें हो तो राजासे मान गौरव प्राप्तहो और विक्रय ( बेचने ) क्रय ( खरीदने ) से लाभहो, स्त्रीसे सुखहो, द्रव्यका लाभहो तथा लक्ष्मी थोड़ेही परिश्रमसे प्राप्त होवै ॥ २४ ॥

नानाऽनर्थोऽर्थव्यथोव्यर्थएव स्वल्पाऽऽनन्दोमन्दबुद्धित्वमत्र ॥ गात्रेकार्श्यत्रेत्ररूक्श्लेष्मबाधारन्ध्रेचन्द्रेप्रोक्तमेतन्मुनीन्द्रैः ॥ २५ ॥

अर्थ—यदि चन्द्रमा रन्ध्र ( अष्टम ) स्थानमें हो तो नानाप्रकारके



अनर्थहों, व्यर्थ धनहानिहो, आनन्द थोड़ी मिलै, बुद्धि मन्द होजावै तथा शरीरमें दुर्बलता, नेत्रोंमें रोग, श्लेष्माकी बाधा होवै, यह श्रेष्ठ मुनियोंने कहाहै ॥ २५ ॥

सुकृतवृद्धिसमृद्धिविवर्द्धनं ननुधनागमनादिकमा-  
दिशेत् ॥ कुसुदकाननजीवनदानदे नवमधामस-  
मागममागते ॥ २६ ॥

अर्थ—कमलवनको जीवनदान देनेवाला चन्द्रमा यदि नवम धाममें आ-  
कर प्राप्तहो तो सत्कर्ममें बुद्धिकी वृद्धिहो, धन आदिकका लाभ होवै ॥ २६ ॥  
लाभोभवेद्भूमिपतेस्सकाशात्कलत्रमित्रान्वितमत्रसौख्यम् ॥  
विपक्षपक्षक्षयदक्षएव वर्षेहिमांशुर्दशमाश्रितश्चेत् ॥ २७ ॥

अर्थ—वर्षमें यदि हिमांशु ( चन्द्रमा ) दशम स्थानमें हो तो राजाके आ-  
श्रयसे ( धनादि ) लाभ होवै, मित्रसहित स्त्रीद्वारा सुख होवै और वह शत्रु-  
पक्षके क्षय करनेको दक्ष होजावै ॥ २७ ॥

श्वेतवस्तुकृतलब्धिमनूनां सन्मतिवितनुतेतनुनि-  
त्यम् ॥ कुंजराम्बरतुरङ्गमलामं लाभवेश्मनिनि-  
शाकरणः ॥ २८ ॥

अर्थ—यदि निशाकर ( चन्द्रमा ) लग्न ( एकादश ) भवनमें विराजमान  
हो तो श्वेत वस्तु ( मोती आदि पदार्थ ) का लाभहो, बुद्धिकी नित्य वृद्धि  
हो और हाथी, वस्त्र, घोड़ा आदिककी प्राप्ति होवै ॥ २८ ॥

नेत्ररुग्निपुभयंधनव्ययं नित्यमेवकलहन्निजा-  
लये ॥ चञ्चलंकिलमनस्समादिशेद्वादशेश-  
शिनिवेश्मनिस्थिते ॥ २९ ॥

॥ इतिचन्द्रभावफलानि ॥



अर्थ—जो चन्द्रमा बारहवें स्थानमें स्थित होतो नेत्ररोग, शत्रुभय, धन-  
हानि और घरमें नित्यही कलह होवै तथा चित्त चंचल रहै ॥ २९ ॥

॥ यह चन्द्रमाका भावफल कहा ॥

## भौमभावफल.

मौलेवक्त्रेनेत्रयोश्चापिबाधा हानिन्यूनंस्वालये  
वाकलिःस्यात् ॥ रक्तात्पित्ताद्देहिनोदेहकार्थं  
धात्रीपुत्रोभुतिवर्तीयदाहि ॥ २३० ॥

अर्थ—जो धात्रीपुत्र ( मंगल ) भूति ( लग्न ) में हो तो शिर, मुख और  
नेत्रमें पीडाहो, हानिहो घरमें कलह हो और रक्त व पित्तके विकारसे मनु-  
ष्यका शरीर दुर्बल होजावै ॥ २३० ॥

भूपालचौराऽनलभीतिरुग्राव्यग्रामनोवृत्तिरपी  
ष्टकृष्टा ॥ दृशोश्चबाधाबहुधानराणाःसुक्तपुरा-  
णैर्धरणीसुतेऽर्थे ॥ ३१ ॥

अर्थ—जो धरणीसुत ( मंगल ) अर्थ ( द्वितीय ) स्थानमें होतो राजा,  
चौर, और अग्निसे बहुत भय होवै, चित्त चंचलरहे, कोईभी मनोरथ पूर्ण-  
नहो, नेत्रोंमें बहुतपीडा होवै ॥ ३१ ॥

मानंधनंशत्रुविनाशनंचमहोत्सवारोग्यनृपप्र-  
सादम् वदेन्मनीषीविशदंविशेषात्पृथ्वीतनूजे  
सहजेनराणाम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—यदि पृथ्वीतनूज ( मंगल ) सहज ( तृतीय ) स्थानमें पड़े तों मान  
बढ़े, धनलाभहो, शत्रुका नाशहो, कोई बड़ा उत्सवहो, शरीर आरोग्यरहे,  
राजा ( अपनास्वामी ) प्रसन्नहो, बुद्धिवान् पण्डित इस प्रकार भलीभांति



सङ्कष्टदेशाटनकंकुटुम्बाद्वादःसुहृद्भयोद्दयेविषादः ॥

चतुष्पदानान्निधनम्प्रणीतं क्षोणीसुते भूतलभावात् ॥ ३२ ॥

अर्थ—यदि क्षोणीसुत (मंगल) भूतल (चतुर्थ) भावमें प्राप्तहोतो कुटुम्बसे दुःख, परदेशभ्रमण, मित्रोंसे विवाद, मनमें खेद, गाय, घोडा आदि चौपायोंका मरण होवै ॥ ३२ ॥

क्रोडेपीडादुर्मतिर्वैमनस्यं स्थैरं वैरम्बन्धुवर्गेण सार्द्धम् ॥

अर्द्धाङ्गादेर्मानसेचापिदुःखं पुत्रक्षेत्रे भूमिपुत्रेविचि-  
न्त्यम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—यदि भूमिपुत्र (मंगल) पुत्र (पंचम) क्षेत्र (स्थान) में हो तो क्रोड (छाती) में पीडाहो मतिमन्दहो जावै, चित्त उदास रहै, बन्धुजनोंके बहुत वैरभाव बढजावै, देहमें अर्धांग रोग उत्पन्नहो और मनमेंभी दुःख होवै ॥ ३४ ॥

भूपात्प्राप्तिशत्रुवर्गे विपत्तिम्बुद्धेर्बुद्धिम्मित्रसम्बद्धनञ्च ॥

हर्षोत्कर्षवर्षकालेबलीयान्धात्रीपुत्रःशत्रुसंस्थःकरोति ३५

अर्थ—वर्षकालमें यदि धात्रीपुत्र (मंगल) शत्रु (षष्ठम) स्थानमें स्थित हो, तो राजासे प्राप्तिहो, शत्रुवर्गमें विपत्तिहो, बुद्धिकी वृद्धिहो और मित्र बढें, तथा महान् आनन्दहो, ॥ ३५ ॥

देहेपीडागेहिनीनामसौख्यं हानिर्देशंभ्रंशंता-

स्यान्नितान्तम् ॥ शत्रोर्भीतिव्रीतितोवैपरी-

त्यघ्नूनस्थानेनन्दनेभूतधात्र्याः ॥ ३६ ॥

अर्थ—यदि भूनन्दन (मंगल) घ्नून (सप्तम) स्थानमें स्थित होता देहमें पीडा, त्रियोंको दुःख, हानि, नितान्तदेशका झूटना, शत्रुसे भय और अनीति प्रगट होवै ॥ ३६ ॥

परिजनपरिपीडारक्तपित्तप्रकोपो निजजनधन



मानेस्वलपताऽनल्पचिन्ता ॥ विकलतरशरीरन्दी-  
नताधीरतास्यान्निधनसधनसंस्थे लोहिताङ्गेनरा-  
णाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ—यदि लोहिताङ्ग ( मंगल ) निधनसदन ( अष्टमस्थान ) में स्थित  
होतो आत्मीयजनोंको पीडा रक्तपित्तका प्रकोप, अपने जन, धन, और  
मानकी न्यूनता, तथा महाचिन्ता, शरीरमें विकलता, दीनता और अधी-  
रता होवै ॥ ३७ ॥

पापेरतिस्याकलहःस्वकीयैरुद्विग्नतावैभववैपरीत्यम् ॥

कान्तिक्षयश्चापिभवेन्नराणाम्भूनन्दनेधर्मनिकेतनस्थे ॥ ३८

अर्थ—यदि भूनन्दन ( मंगल ) धर्म ( नवम ) भवनमें विराजमान  
होतो पापमें प्रीति होवै अपने जनोंसे कलह होवै, मनमें उद्वेग होवै, ऐश्व-  
र्यकी हानि होवै और कान्तिकामी क्षय होवै ॥ ३८ ॥

प्रसन्नताभूमिपतेश्वलामो व्यापारसौभाग्यसुखानिनित्यम् ॥

आरोग्यताऽतीवपशुप्रवृद्धिर्धरात्मजेराज्यपदोपपन्ने ॥ ३९ ॥

अर्थ—यदि धरात्मज ( मंगल ) राज्यपदोपपन्नहो अर्थात् दशमस्थानमें  
विराजमानहो, तो राजाकी प्रसन्नता, व्यापारमें लाभ, भाग्योदय, नित्य  
सुख, आरोग्यता, पशुओंकी महावृद्धि होवै ॥ ३९ ॥

प्रजापतेजोविजयाभिवृद्धिश्शत्रुक्षयोभूमिपतेःप्रसादः ॥

नित्यंसुहृत्पुत्रकलत्रसौख्यं लाभालयेमंगलनामधेये ॥ ४० ॥

अर्थ—यदि मंगल लाभ एकादश स्थानमें होतो प्रताप, तेज और विजयकी  
वृद्धिहो, शत्रुका नाशहो, राजाकी कृपादृष्टिहो, मित्र, पुत्र स्त्रीको नित्य  
सुखहो ॥ ४० ॥

धनक्षयस्स्यात्क्षितिपालभीतिर्दृग्दोषयोषाद्यसुखोर्वेषादः ॥

वादस्सदामन्दजनेननूनम्भूनन्दनेप्रान्त्यनिकेतनस्थे ॥ ४१ ॥



अर्थ—यदि भूनन्दन ( मंगल ) ग्रान्त्यनिकेतन ( द्वादशस्थान ) में स्थितहो तो धनका क्षयहो, राजासे भयहो, नेत्रमें रोगहो, स्त्री आदिसे दुःख व विषाद प्राप्तहो और मूर्खजनोंसे सदैव वाद होवै, अर्थात् असज्जनोंसे लढाई होवै ॥ ४१ ॥

॥ यह मंगलका भावफल लिखा ॥

### बुधभावफलः

शरीरसौख्यंचपतेः प्रसादम्बुद्धेः प्रवृद्धिन्द्रविणागमश्च ॥ गा-  
म्भीर्यवीर्योपचयम्प्रदत्ते मृगांकसूनुस्तनुभावसंस्थः ॥ ४२ ॥

अर्थ—यदि मृगांकसूनु अर्थात् चन्द्रपुत्र ( बुध ) तनु ( लग्न ) भावमें स्थितहो तो शरीरको सुखहो, राजाकी प्रसन्नताहो, बुद्धिकी वृद्धिहो, द्रव्यका आगमहो, गम्भीरता तथा वीर्यकी वृद्धि होवै, पराक्रमसे युक्त होवै ॥ ४२ ॥

स्वमित्रपुत्रोन्नतिनीतिवृद्धिर्द्रव्यागमोभूमिपतेः प्रसादः ॥  
आरोग्यतातीवशरीरसौख्यंचद्रौहिणेयोद्रविणाधिसंस्थः ४३

अर्थ—यदि रौहिणेय ( बुध ) द्रव्य ( धन ) भावमें स्थितहो तो अपने मित्र व पुत्रकी उन्नति ( बढ़ती ) होवै, नीतिकी वृद्धिहो, द्रव्यका आगमहो, राजाकी कृपादृष्टिहो, आरोग्यताहो, शरीरका अत्यन्त सुखहो ॥ ४३ ॥

लाभोप्यलाभश्चसुखञ्चदुःखमित्रन्त्वमित्रंसमानम्प्रयाति ॥  
यथास्थितं स्यात्सकलन्तृतीयेद्विजाधिराजात्मजभावसंस्थे ४४

अर्थ—यदि द्विजाधिराजात्मज ( बुध ) तृतीय भावमें स्थितहो तो लाभ, हानि, सुख, दुःख, मित्र, शत्रु ये सब समान भावसे यथायोग्य स्थित रहें ॥ ४४ ॥



पृथ्वीपतेगौरवसम्प्रवृत्तिन्धनागममित्रसमागमञ्च ॥

कलत्रसौर्यंबहुधाविधत्ते कलानिधेस्सूनुरिलातलस्थः ४५

अर्थ—यदि कलानिधिसूनू अर्थात् चन्द्रपुत्र ( बुध ) रसातल ( चतुर्थ ) स्थानमें स्थित होतो राजासे मान होवै. धनका आगमन और मित्रसे समागम (मिलाप) होवै, स्त्रीको सुख होवै. प्रायः यह फल बुध करताहै ॥ ४५ ॥

सुहृज्जनात्पुत्रकलत्रतश्च सुखानिभूपात्प्रभवेन्मनीषा ॥

भाग्यंनरेशाच्चयशश्चपुत्रे पुत्रोत्रनक्षत्रपतेर्यदिस्यात् ॥ ४६ ॥

अर्थ—यदि नक्षत्रपतिपुत्र ( बुध ) पुत्र ( पंचम ) स्थानमेंहो तो मित्र पुत्र, स्त्रीसे सुख प्राप्त होवै, राजासे मनोरथकी सिद्धि होवै, भाग्यका उदय और यशका लाभ होवै ॥ ४६ ॥

विपक्षपक्षप्रचयम्प्रमादंवाद्भिजैःकान्तिपरीक्षणाञ्च ॥

शरीरपीडांचजडांशुसूनूशत्रुस्थितस्संजनयत्यवश्याम् ॥ ४७

अर्थ—यदि जडांशुसूनू ( बुध ) शत्रुभावमें स्थितहो तो शत्रुपक्षमें उन्माद हो, अपने जनोमें विवाद रहे, कान्ति यलीन होजावै और शरीरमें पीडा अवश्य होवै ॥ ४७ ॥

अतियुवतिविलासम्मार्गलाभंजनानां जनयतिधनसौ-

ख्यंसद्गणिक्रममार्गात् ॥ प्रतिदिनमनुवृत्तिन्धर्मकार्येषु-

नूनम्मदनसदनसंस्थःशीतभानोस्तनूजः ॥ ४८ ॥

अर्थ—यदि चन्द्रपुत्र ( बुध ) मदनसदन ( सप्तमस्थान ) में स्थितहो तो स्त्रीसे अतिमुख, उत्तम व्यापारद्वारा सुखपूर्वक धनका लाभ होवै, और धर्म-कार्यमेंनिरन्तर मनुष्योंका मन लौ ॥ ४८ ॥

वैरित्रातोन्मूलनम्भूमिपालात्सौर्यंहर्षोत्कर्षतासन्प्रति-

त्वम् ॥ नित्यंशास्त्राभ्यासतोगौरवंस्यादायुस्थानेचन्द्रदे-

होद्भवोयम् ॥ ४९ ॥



अर्थ—यदि चन्द्रदेहोद्भव ( बुध ) आयु ( अष्टम ) स्थानमें स्थितहो तो शत्रुओंका नाशहो, राजासे सुखहो, मनमें महान् आनन्दहो, सुन्दर बुद्धि होजावै, नित्य शास्त्रोंके अभ्याससे मान प्राप्त होवै ॥ ४९ ॥

धर्मेबुद्धिःकार्यसिद्धौप्रलापश्चित्तोद्वेगःकामिनीवर्गपीडा ॥ दैन्यङ्कान्तिक्षीणताप्राणिनांस्याद्भाग्यागारेचेतुषारांशुजन्मा ॥ ५० ॥

अर्थ—यदि तुषारांशुजन्मा ( बुध ) भाग्यअगार ( नवमस्थान ) में हो तो धर्मेमें बुद्धि, कार्यसिद्धिमें विघ्न, चित्तमें उद्वेग, स्त्रियोंको पीडा होवै और उस मनुष्यको दीनता, कान्तिकी क्षीणता होवै ॥ ५० ॥

द्रव्यप्राप्तिर्भूमिपालोद्यमाभ्यांसम्भ्यत्त्वंस्याद्देहसौख्यंस्वगेहात् ॥ कान्तिस्सारोयातिविस्तारमुच्चैः कर्मस्थानेसोमसूनौप्रपन्ने ॥ ५१ ॥

अर्थ—यदि सोमसूनु ( बुध ) कर्म ( दशम ) स्थानमें हो तो राजासे व उद्यमसे द्रव्य प्राप्तिहो, प्रतिष्ठितजनोंमें सत्कारहो, अपने घरसे देहको सुखहो, कान्ति ( शोभा ) की वृद्धि होवै ॥ ५१ ॥

नित्यारोग्यंकान्तिवृद्धिस्सुबुद्धिःपृथ्वीपालाज्ञौ-  
खंसर्वथास्यात् ॥ स्वल्पायासैरुद्यमाद्रव्यलाभौ  
लाभस्थानेसिन्धुसूनोस्तनूजे ॥ ५२ ॥

अर्थ—यदि सिन्धुसूनु अर्थात् चन्द्रमाका पुत्र ( बुध ) लाभ एकादश स्थानमें हो तो नित्य आरोग्यताहो, भाग्यवृद्धिहो, सुन्दर बुद्धिहो, राजासे सर्वथा मान प्राप्तहो और थोड़ेही उद्यमसे धनका लाभ होवै ॥ ५२ ॥

लाभस्वल्पोप्यल्पतास्याद्भनस्यक्षोणीपाला-



त्साध्वसंदुर्व्ययश्च ॥ बुद्धेरान्धंविग्रहःस्वीयवर्गे  
प्रान्त्यस्थानेबोधनेवर्तमाने ॥ ५३ ॥

॥ इति बुधभाव फलानि ॥

अर्थ—यदि बोधन ( बुध ) प्रान्त ( द्वादश ) स्थानमें वर्तमान हो तो थोडा लाभहो, धनकी न्यूनताहो, राजासे वैरहो, व्यर्थ धनहानिहो, बुद्धिकी मन्दता और आत्मीय जनोंमें कलह होवै ॥ ५३ ॥

॥ यह बुधका भावफल कहा ॥

### गुरुभावफल-

सौख्यमपुत्रान्मित्रवर्गात्कलत्रादारोग्यंस्याच्छ्रा  
व्यभाग्योदयश्च ॥ प्राप्तिर्भूयात्सन्मतिश्चाप्यव  
श्यंवागीशश्चेन्मूर्तिवर्तीतिचिन्त्यम् ॥ ५४ ॥

अर्थ—अब बृहस्पतिका भावफल लिखते हैं, यदि वागीश ( बृहस्पति ) मूर्तिमें स्थितहो तो पुत्र, मित्रवर्ग और स्त्रीसे सुखहो, शरीर आरोग्य रहै भाग्यकी वृद्धि हो राजासे प्राप्तिहो और उत्तम मति होवै, यह फल अवश्य जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

अर्थप्राप्तिसंयतिमित्रवर्गेनानावस्तुग्राहकत्वन्नितान्तम् ॥  
सद्विस्संगम्पुष्टिमंगेप्रकुर्याद्वाचामीशःकोशसंस्थोयदि-  
स्यात् ॥ ५५ ॥

अर्थ—यदि वागीश ( गुरु ) कोश ( धन ) स्थानमें होतो अर्थप्राप्तिहो, मित्रवर्गमें मिलाप हो और निरन्तर नानाप्रकारकी वस्तुओंकी ग्राहकीहो, सुजनोंसे संगतिहो, शरीरमें पुष्टि होवै, यह फल करै ॥ ५५ ॥

सुराणामाचार्यो गतवतियदाविक्रमगृहं विवृद्धिकार्याणांभव  
तिपरिसेवाभिरधिका ॥ सुसौख्यंस्यान्मित्रोन्नतिरथधनाप्ति-  
श्चविपुलाभवेद्धर्मोदाराजनिसुखमारादनुभवे ॥ ५६ ॥



अर्थ—जो देवाचार्य ( बृहस्पति ) विक्रम ( तृतीय ) धर्ममें आकरप्राप्त होवै तो कार्योकी वृद्धि होवै, सेवा अधिक होवै सुन्दर सुख होवै, मित्रकी उन्नति ( वृद्धि ) होवै और बहुत धन प्राप्ति होवै, धर्ममें प्रीति होवै स्त्री व माताको सुख प्राप्त होवै ॥ ५६ ॥

कामिनीसुनसुखेतसमेतो भूमिवाहनधनागमनाद्यैः ॥

राजमानविनयैस्सुखभावे देवदेवसचिवेमनुजस्स्यात् ॥ ५७ ॥

अर्थ—यदि देवदेवसचिव ( बृहस्पति ) सुख ( चतुर्थ ) भावमें स्थित होतो मनुष्य स्त्री व पुत्रके सुखसे युक्त होवै, भूमि, वाहन और धन आदिका लाभ होवै, राजासे मान और विनयसे सुख प्राप्त होवै ॥ ५७ ॥

सन्तानसौख्याप्तिमतिप्रकाशं सुखानिमित्रोन्न  
तिसंयुतानि ॥ सन्मंत्रविद्याभ्यासनानिकुर्या  
त्पुत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिसूनुः ॥ ५८ ॥

अर्थ—यदि चित्रशिखण्डिसूनु ( बृहस्पति ) पुत्र ( पंचम ) स्थानमें स्थित होतो सन्तान सुखलाभ, मति का प्रकाश, मित्रकी वृद्धिसहित सुख और उत्तमसम्पत्ति व विद्यामें अभ्यास करै ॥ ५८ ॥

बलक्षयश्चापिविपक्षवृद्धिस्सार्द्धविरोधो बहुधास्व  
कीयैः ॥ व्ययोऽतिचिन्ताप्रभवेन्नराणांचेद्भीष्म  
तिर्वैरिनिकेतनस्थः ॥ ५९ ॥

अर्थ—यदि भीष्मपति ( बृहस्पति ) वैरि ( शत्रु ) निकेतन ( स्थान ) में स्थित हो, तो बलका नाश हो, शत्रुकी वृद्धि हो, अपने कुटुम्बके साथ बहुधा विरोध होवै और धनहानि तथा अतिचिन्ता बनी रहै ॥ ५९ ॥

वणिग्विधानेन धनागमः स्यान्मार्गप्रसंगेन च मा  
नवानाम् ॥ स्त्रीवर्मसौख्यं नृपतेश्च चित्रशिखण्डि-  
सूनौ मदनलयस्थे ॥ ६० ॥



अर्थ—जो चित्रशिखण्डिसूनु ( बृहस्पति ) मदन ( सप्तम ) स्थानमें होतो वैश्यवृत्ति ( व्यापार ) से धनका आगमहो और मार्गप्रसंगसे अर्थात् परदेश-जानेसेभी द्रव्यालामहो और स्त्री व राजासे सुख होवै ॥ ६० ॥

मित्रैस्सार्द्धैर्मनस्याभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशोद्रव्यनाशः  
प्रवासः ॥ विश्लेषस्स्यात्स्वीयवर्गेणपुण्यंक्षीणं  
जीवेजीवितस्थानसंस्थे ॥ ६१ ॥

अर्थ—यदि जीव ( बृहस्पति ) जीवित ( अष्टम ) स्थानमें स्थितहो तो मित्रोंके साथ उदासीनताकी वृद्धिहो, बुद्धि भ्रष्ट होजावै, द्रव्यका नाशहो, परदेश जानापडै, आत्मीय वर्ग अर्थात् अपने जनोसे वियोगहो और पुण्य क्षीण होवै ॥ ६१ ॥

बुद्धेर्विवृद्धिर्द्रविणोपलब्धिःकान्ताविलासोमन  
सःप्रसादः ॥ प्रवीणताचैवभवेच्चपुण्यंपुण्येनि  
षण्णोधिषण्णेप्रणीतम् ॥ ६२ ॥

अर्थ—यदि धिषण ( बृहस्पति ) पुण्य ( नवम ) स्थानमें विद्यमानहो तो बुद्धिकी वृद्धिहो, द्रव्यका लाभ हो, स्त्रीविलास, मनकी प्रसन्नता, चातुर्य और पुण्यकी वृद्धि होवै ॥ ६२ ॥

पृथ्वीपतेःप्रीतिरतीवकीर्तिर्मनोन्नतिर्नीतिमति  
प्रवृद्धिः ॥ नित्योत्सवानन्दभरोनराणांराज्ये  
सुरेज्येविजयोद्गमस्स्यात् ॥ ६३ ॥

अर्थ—जो सुरेज्य ( बृहस्पति ) राज्य ( दशम ) स्थानमें हो तो राजाकी प्रसन्नताहो, कीर्तिकी वृद्धिहो, मानकी उन्नति हो नीति और मतिकी अधि-क्रिताहो, तथा मनुष्य नित्य उत्सव और आनन्दसे परिपूर्णहो, विजय प्राप्त होवै ॥ ६३ ॥



आरोग्यतावैभववाहनानिकलत्रपुत्रादिसुखै  
र्युतानि ॥ नानाधनामिखलुलाभवती बृह  
स्पतिर्यच्छतिमानवानाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—लाम ( एकादश ) स्थानमें स्थित बृहस्पति मनुष्योंको आरोग्यता  
विभव, वाहन, स्त्री, पुत्र आदि सुखसे युक्त नानाप्रकारके धनकी प्राप्ति  
करता है ॥ ६४ ॥

मित्रैर्वैरम्भूपतेभीतिरुग्रा दुःखंचिन्तानेकधार्थ  
व्ययश्च ॥ नूनंस्थानभ्रंशतास्यान्नराणां वाचा  
भीशेद्वादशस्थानसंस्थे ॥ ६५ ॥

अर्थ—यदि बृहस्पति द्वादशस्थानमें स्थितहो तो मित्रोंसे वैर, राजासे  
उग्रभय, दुःख, अनेक प्रकारकी चिन्ता व्यर्थ धन हानि, स्थानभ्रंश  
होवै ॥ ६५ ॥

### शुक्रभावफल-

अत्यर्थस्यादर्थलामःक्षितीशाढंशस्योच्चैस्सञ्च-  
यस्सौख्यलब्धिः ॥ हर्षोत्कर्षावेशपूर्वसगर्वन्दै-  
त्यामात्योमूर्तिवर्तीयदीह ॥ ६६ ॥

अर्थ—यदि दैत्यामात्य ( शुक्र ) मूर्तिवर्ती हो अर्थात् लग्नमेंहो तो राजासे  
अधिक द्रव्यलाम, वंशवृद्धि, सुखप्राप्ति, अधिक उत्सव और गर्ववृद्धिहो ६६ ॥

सुहृद्विवृद्धिर्वहुधार्थलामः शत्रुक्षयस्सत्वरमवे-  
कार्यम् ॥ कान्तासुचित्तस्थभवेत्प्रवृत्तिर्दैत्या-  
र्चितेवित्तगतेनराणाम् ॥ ६७ ॥

अर्थ—यदि दैत्यार्चित ( शुक्र ) वित्त ( द्वितीय ) स्थानमें हो तो मि-  
त्रोंकी वृद्धि, बहुधा धनप्राप्ति, शत्रुनाश, शीघ्रही कार्यसिद्धिहो और स्त्रीमें  
चित्तकी प्रवृत्ति रहे ॥ ६७ ॥



द्रव्यव्ययोपद्रवमित्रवैरं सौख्याल्पतानल्पविक-  
ल्पचिन्ता ॥ पराक्रमोमध्यमतः प्रकाशंभृगो-  
स्तनूजेऽनुजभावसंस्थे ॥ ६८ ॥

अर्थ—यदि भृगुमुत्त ( शुक्र ) अनुज ( तृतीय ) भावमें स्थितहो तो धन-  
व्यय ( वेफायदा खर्च ) उपद्रव, मित्रोंसे वैर, थोडासुख, भ्रान्तियुक्त  
चिन्ता और मध्यमभावसे पराक्रमकी वृद्धि होवै ॥ ६८ ॥

आरोग्यंस्याद्वैभवंभूमिपालान्मित्रक्षेत्रोद्यानसौ-  
ख्यानिनूनम् ॥ नानामानैश्चापियोगोपलब्धि-  
दैत्याचार्येतुर्यभावोपपन्ने ॥ ६९ ॥

अर्थ—यदि दैत्याचार्य ( शुक्र ) तुर्य ( चतुर्थ ) स्थानमें प्राप्तहो तो  
आरोग्यता, राजासे ऐश्वर्यप्राप्ति, मित्र घरमें उद्यान ( बगीचा आदिक का )  
सुख, और अनेक प्रकारके मानसे योगकी वृद्धि होवै ॥ ६९ ॥

कलत्रपुत्रोद्भवसौख्यविद्याविज्ञानकौशल्यम-  
तिप्रवृद्धिः ॥ विचित्रमंत्रागमसंगमःस्याद्भृगो  
स्तनूजेतनुजेऽधिसंस्थे ॥ ७० ॥

अर्थ—यदि शुक्र तनुज ( पंचम स्थानमें ) स्थितहो तो स्त्री पुत्रजनित  
सुख, विद्या, विज्ञान, कौशल्यता, बुद्धिकी वृद्धि, विचित्र ( अनेक प्रका-  
रके ) मंत्र और शास्त्रमें संगम ( अभ्यास ) होवै ॥ ७० ॥

अनिलभीतिरनीतिमतिर्ध्रुवं रिपुचयोपिच-  
योऽपिधनस्यच ॥ गृहसुखंनकदापिशरी-  
रिणामुशनसिद्विषिसम्प्रविशत्यलम् ॥ ७१ ॥

अर्थ—यदि उशनस ( शुक्र ) का द्विषि ( षष्ठम ) भावमें प्रवेशहो तो  
अग्निसे भय, अनीतिमें बुद्धि, शत्रुवृद्धि और धनकीभी वृद्धि होवै, तथा  
शरीरधारियोंको घरसे सुख कदापि न होवै ॥ ७१ ॥



कामिनीतनयहर्षतो भवेद्देश्मपुष्टिरतिलब्धिरुद्यमात् ॥

मानवाहनधनानिभार्गवे पञ्चमार्गणगृहाङ्गणस्थिते ॥ ७१ ॥

अर्थ—यदि भार्गव ( शुक्र ) पञ्चमार्गणगृहाङ्गण ( सप्तम ) स्थानमें स्थित हो तो स्त्रीपुत्रके हर्षसे सुख होवै, गृहपुष्टि होवै, उद्यमसे अतिलाभ, मान, वाहन और धनप्राप्ति होवै ॥ ७१ ॥

अल्पारोग्यङ्कामिनीसूनुचिन्ता चित्तभ्रंशोरोष-  
दोषप्रकारः ॥ शश्वत्कार्यस्याच्छरीरेनराणामा-  
युर्भावेपूर्वदेवाधिदेवे ॥ ७३ ॥

अर्थ—यदि पूर्वदेवाधिदेव ( शुक्र ) आयु ( अष्टम ) स्थानमें हो तो आ-  
रोग्यता थोड़ी हो अर्थात् कुछरोग हो, स्त्रीपुत्रकी चिन्ता हो, मति भ्रष्टहो  
और क्रोध व दोषकी उत्पत्तिहो, प्रवास अर्थात् परदेश जानाहो, कार्यकी  
निरन्तर चिन्ता होवै ॥ ७२ ॥

आरोग्याभिर्धर्मकर्मभिर्वृद्धिर्बुद्धिःशस्ता-  
विस्तृताचोन्नतिःस्यात् ॥ पुत्रान्मित्राञ्चापि-  
सन्तोषलब्धिः पुण्यस्थानेदानवैर्वन्द्यमाने ॥ ७४ ॥

अर्थ—दानवपूज्य ( शुक्र ) पुण्य ( नवम ) स्थानमें होतो आरोग्यता,  
धर्मकर्मकी वृद्धि, निर्मलबुद्धिका विस्तार और उन्नतिहो, तथा पुत्र व मित्र-  
सेभी सन्तोषका लाभ होवै ॥ ७४ ॥

भूमिभर्तुरपिगौरवलब्धिः शत्रुपक्षकपरिक्षय-  
युक्ता ॥ कार्यसिद्धिरपिचिन्तितकाले राज्य  
भाजिदनुजव्रजपूज्ये ॥ ७५ ॥

अर्थ—यदि दनुजव्रजपूज्य ( शुक्र ) राज्य ( दशम ) स्थानमें विराजमान  
हो, तो राजासे मान प्राप्तहो, शत्रुगणोंका क्षयहो, अभीष्ट समयपर कार्यभी  
सिद्धि होवै ॥ ७५ ॥



नीरसञ्चरणसद्विणाप्तिर्विक्रयक्रयविधेरपिलाभः ॥

वैभवोन्नतिरतीवविलासो लाभवेश्मनिभृगुर्यदिसंस्थः ॥७६॥

अर्थ—यदि भृगु ( शुक्र ) लाभ ( एकादश ) स्थानमें स्थित होतो समुद्र-  
यानसे उत्तम धनलाभ, क्रय ( खरीदने ) विक्रय ( बेचने ) से लाभ और  
ऐश्वर्यवृद्धि, तथा अतीव सुख होवे ॥ ७६ ॥

साधुमार्गविभवक्षयमुच्चैस्स्वीयवर्गकलहंकिलयाति ॥

स्वाल्याच्चचलनेफलहानिर्देववैरिसचिवेन्तिमभावे ॥७७॥

॥ इति शुक्रभावफलानि ॥

अर्थ—यदि देववैरिसचिव ( शुक्र ) अन्तिम ( द्वादश ) भावमें हो तो  
अच्छे काममें धनव्यय होवे, अपने जनोमें कलह और अपने घरसे चलनेमें  
फलहानि होवे ॥ ७७ ॥

॥ यह शुक्रका भावफल कहा ॥

## शनिभावफल-

प्रजायतेसातकफप्रकोपैशिशरस्थलोरःस्थलपीडनञ्च ॥

स्वकीयमित्रैःकलहोनराणाम्पुत्रस्त्रिमूर्तेर्यदिमूर्तिवर्ती॥७८॥

अर्थ—अब शनैश्चरका भावफल लिखते हैं, कि—यदि त्रिमूर्ति ( सूर्य ) पुत्र  
( शनि ) मूर्ति ( लग्न ) वर्ती हो तो वात और कफके विकारसे शिर व  
छातीमें पीडा होवे, और अपने मित्रोंसे कलह होवे ॥ ७८ ॥

वैक्राक्षिपीडाप्रभवेन्नराणान्धनव्ययोभूमिपतेर्भयश्च ॥

चिन्ताप्रभूतारमणीसुतादेश्वेद्भानुसूनुर्धनमानसंस्थः ॥७९॥

अर्थ—यदि भानुसूनु ( शनि ) धनग्राम ( द्वितीयस्थान ) में स्थित हो  
तो सुख, नेत्रोंमें पीडाहो, धनव्ययहो, राजासे भयहो, स्त्रीपुत्र अदिकोंकी  
चिन्ता होवे ॥ ७९ ॥

समग्रचिन्ताविकलःखलुस्याद्वसुन्धरापालकमा-



नसौख्यम् ॥ धनस्थलाभोऽतितन्नराणां भानो  
स्तनूजेसहजाधिसंस्थे ॥ २८० ॥

अर्थ—यदि भानुतनुज ( शनि ) सहज ( तृतीय ) स्थानमें स्थितहो तो बहुतसी चिन्ताओंसे चित्त विकल रहै, राजासे मान, सुख, धनका लाभ अधिकतासे होवै ॥ २८० ॥

प्रवासचिन्ताद्रविणव्ययस्यात्कान्ताचितिन्ताकु  
लचित्तवृत्तिः ॥ पक्षेजनन्याःपरिपीडनञ्चरसा  
तलस्थेनलिनीशसूनौ ॥ ८१ ॥

अर्थ—यदि नलिनीशसूनु ( शनि ) रसातल ( चतुर्थ ) स्थानमें होतो परदेशजानेकी चिन्ता, द्रव्य व्यय ( धनका खर्च ) स्त्रीकी अधिक चिन्ता-से मनको दुःखहो, माताके पक्षमें ( मातुलादिककी ) पीडा होवै ॥ ८१ ॥

कान्तासुहृत्सूनुजनेषुपीडा कोडाप्रपीडापवन-  
प्रकोपात् ॥ बुद्धिर्विरुद्धाधनसङ्क्षयस्याद्धानो-  
स्तनूजेतनुजेऽधिसंस्थे ॥ ८२ ॥

अर्थ—यदि भानुतनूज ( शनि ) तनुज ( पंचम ) स्थानमें स्थितहो तो स्त्री, मित्र, पुत्रजनोंमें पीडा हो, वातविकारसे छातीमें पीडा हो बुद्धि भ्रष्ट और धनका नाश होवै ॥ ८२ ॥

सामर्थ्यस्याद्भूमिभर्तुःप्रसादस्सद्भिस्सङ्गोवीर्य्यवृद्धि-  
स्समृद्धिः जायापुत्रप्रीतिसम्प्राप्तिश्च शत्रुक्षेत्रे-  
मित्रपुत्रोयदिस्यात् ॥ ८३ ॥

अर्थ—यदि मित्र पुत्र ( शनि ) शत्रुक्षेत्र ( छठेघर ) में हो तो सामर्थ्य-हो, राजाकी कृपादृष्टिहो, सज्जनोंका संगहो, पराक्रमकी अधिक वृद्धिहो, स्त्रीपुत्रमें अधिक प्रेम बढ़ै ॥ ८३ ॥



मित्रकंष्टमपिपुष्टिहीनता स्थानहानिधननाश-  
नन्दिशेत् ॥ शत्रुभीतिमपिनीतिविच्युतिम्मीन-  
केतननिकेतनेशनौ ॥ ८४ ॥

अर्थ—यदि शनि मीनकेतन ( सप्तम ) निकेतन ( स्थान ) में हो तो मित्रको कष्ट, पुष्टिकी हीनता, स्थानहानि, धनका नाश, शत्रुसे भय और अनीतिको उत्पन्न करता है ॥ ८४ ॥

अनेकधाव्याधिसमुद्गमःस्याज्जायासुतानामपि  
वित्तनाशः ॥ मान्द्यञ्चबुद्धेव्यसनोपलब्धिः का-  
मंयमश्चेद्यमधामसंस्थः ॥ ८५ ॥

अर्थ—यदि यम ( शनैश्चर ) यम धाम ( अष्टमस्थान ) में हो तो अनेक प्रकारकी व्याधिकी उत्पत्तिहो, स्त्री, और पुत्रोंकोभी कुशहो, धनका नाशहो, रोग उत्पन्न हो, बुद्धि मन्द हो, चित्त दुःखी रहे, कार्यसिद्धि नहो ॥ ८५ ॥

धनविनाशनदेशभयान्वितं सुतहितप्रमदापरि-  
पीडनम् ॥ मतिविपर्ययतांकुरुतेयमो नवमधा-  
मसमागममागतः ॥ ८६ ॥

अर्थ—यदि यम ( शनि ) नवमधाममें आकर प्राप्तहो, तो देशभय सहित धननाश, पुत्र, मित्र और स्त्रीको पीडा, बुद्धिमें विपरीतता करे ॥ ८६ ॥

पृथ्वीभर्तुभीतिरर्थच्युतिःस्यात्स्वव्यापारेव्यग्र-  
तास्थानहानिः ॥ दुःखंदैन्यं जायतेमानवानां  
मानेमानोर्नन्दनेवर्त्तमाने ॥ ८७ ॥

अर्थ—यदि भावुतन्दन ( शनि ) मान ( दशम ) स्थानमें स्थितहोतो



राजासे भय, धनहानि, अपने व्यापारमें व्याकुलता, स्थानहानि, दुःख और दरिद्रता होवै ॥ ८७ ॥

योषातोषम्मानवेसद्विशेषादाशापूर्तिः स्फुर्ति-  
कीर्तिप्रसादम् ॥ शौर्यवीर्यञ्चापिधैर्यम्प्रकु-  
र्यात्प्राप्तौप्राप्तःसप्तसप्तिप्रसूतः ॥ ८८ ॥

अर्थ—यदि सप्तसप्तिप्रसूत ( शनि ) प्राप्ति ( एकादश ) स्थानमें प्राप्त होतो उस मनुष्यकी स्त्रीको विशेष सुखहो, कीर्ति दिशाओंमें व्याप्तहो, चित्त प्रसन्नरहै, शौर्य, वीर्य और धैर्यकी वृद्धि करै ॥ ८८ ॥

विलोचनक्रोडपदेषुपीडा दृढाभवेन्मित्रजनैर्वि-  
वादम् ॥ भीतिर्नृपाद्व्यहतिर्नितान्तं व्ययाल-  
येचेन्नलिनीशजन्मा ॥ ८९ ॥

॥ इतिशनिभावफलानि ॥

अर्थ—यदि नलिनीशजन्मा ( शनि ) व्यय ( द्वादश ) स्थानमें होतो नेत्र, छाती, चरण इनमें पीडाहो, मित्रजनोंसे बहुत विवाद होवै, राजासे भय और नितान्त द्रव्यहानि होवै ॥ ८९ ॥

॥ यह शनिभावफल कहा ॥

### राहुभावफल-

देहेपीडाजायतेवातजन्याचिन्तापत्तिर्वैभवंवै-  
परीत्यम् ॥ वादंकैश्चित्कामिनीसूनुचिन्ता-  
सिंहीसूनुश्चेत्तनुस्थानसंस्थः ॥ २९० ॥

अर्थ—अब राहुका भाव फल लिखते हैं, यदि सिंहीसूनु ( राहु ) तनु ( लग्न ) स्थानमें होतो शरीरमें वातविकारसे पीडा उत्पन्नहो, चिन्ता, आपत्ति और विभवकी हानि होवै, किसीसे वादहो, स्त्रीपुत्रकी चिन्ता होवै ॥ २९० ॥



वदनलोचनपीडनकंतथा कथमपिप्रकरोतिच-  
नीचतः ॥ द्रविणलाभमनुत्सवमद्भुतद्रविणधा-  
मसमागमकृत्तमः ॥ ९१ ॥

अर्थ—यदि तम ( राहु ) द्रविण ( द्वितीय ) धाममें प्राप्तहो तो मुख तथा नेत्रमें पीडाहो, किसी प्रकारभी नीचसे धनका लाभहो, चित्तमें वारंवार खेद उत्पन्नहोवै ॥ ९१ ॥

सम्यक्सुखंभूमिपतेर्नितान्तंसम्मुन्नतिःकायसु-  
खानिनित्यम् ॥ सुहृत्समाजोपचयोजयस्स्या-  
त्सिंहीतनूजेऽनुजधामसंस्थे ॥ ९२ ॥

अर्थ—यदि सिंहीतनूज ( राहु ) अनुज ( तृतीय ) धाममें स्थित होतो राजद्वारा अच्छे प्रकार नितान्त सुख प्राप्तहो, ऐश्वर्यकी वृद्धिहो, नित्यही शरीरको सुखहो, मित्रसमाजकी वृद्धिहो और जयप्राप्ति होवै ॥ ९२ ॥

चिंतादुःखंवाग्विवादःस्वकीयैर्नूनंपानंवाहना  
दिक्षयश्च ॥ कार्श्यैश्शश्वज्जायतेमानवानान्तु-  
र्यस्थाने नंदनेसिंहिकायाः ॥ ९३ ॥

अर्थ—यदि सिंहिकानन्दन ( राहु ) तुर्य ( चतुर्थ ) स्थानमें स्थित होतो चिन्ता, दुःख, अपने जनोसे वादविवाद ( बातचीत अर्थात् कलह ) हो, स्थान और वाहन आदिकका क्षयहो, तथा उस मनुष्यके शरीरमें निरन्तर दुर्बलता होवै ॥ ९३ ॥

बुद्धेर्मान्द्यन्निन्दविद्वेषिवादंगाढपीडांक्रोडदेशे  
विशेषात् ॥ पुत्रात्सौख्यंयच्छतिप्राप्तिवर्जं सिं-  
हीसूनुर्नन्दनस्थानसंस्थः ॥ ९४ ॥

अर्थ—यदि सिंहिसूनु ( राहु ) नन्दन ( पंचम ) स्थानमें स्थितहो, तो



बुद्धिकी मन्दता, निन्दा, वैर, विवाद, छातीमें ग्रहापीडा, पुत्रसे सुख, और प्राप्तिकी हानि होवै ॥ ९४ ॥

आरोग्यस्याद्भाग्यवृद्धिर्नरेशाद्वैरिध्वंसोमानसो-  
त्पन्नसौख्यम् ॥ जायापुत्रैःप्रीतिमत्यन्तमब्दे  
शत्रुक्षेत्रेपुत्रकस्सिंहकायाः ॥ ९५ ॥

अर्थ-यदि सिंहिकासुत ( राहु ) शत्रुक्षेत्र ( छठेघर ) में पड़े तो शरीर रोगरहित हो, राजासे भाग्यकी वृद्धिहो, शत्रुका विध्वंसहो, मनमें सुख उत्पन्न हो, स्त्री और पुत्रसे अत्यन्त प्रीति होवै ॥ ९५ ॥

स्थानात्स्थानंयानमंगेतिकार्यकान्ताचिन्ताचं  
चलाचित्तवृत्तिः ॥ कट्यांबस्तौवातसंजातबाधा  
स्वर्भानुश्चेत्कामिनीस्थानसंस्थः ॥ ९६ ॥

अर्थ-यदि स्वर्भानु ( राहु ) कामिनी ( सप्तम ) स्थानमें स्थितहो तो एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाना पड़े. शरीरमें अत्यन्त दुर्बलहो, स्त्रीकी चिन्ताहो, चित्तवृत्ति चंचल होजावै, कटि ( कमर ) और बस्ति ( पेडू ) में वातविकारसे पीडा उत्पन्न होजावै ॥ ९६ ॥

जायाक्लेशोबान्धवाविद्विषस्स्युर्द्व्यावाप्तिःस्या  
त्क्षितेश्वप्रवासः ॥ कान्तिर्हीनामानवानांहिव-  
र्षेसिंहीसूनुर्नैधनस्थानवर्ती ॥ ९७ ॥

अर्थ-यदि सिंहीसूनु ( राहु ) नैधन ( अष्टम ) स्थानवर्ती हो, तो स्त्रीको क्लेशहो बन्धुजनोसे वैर हो द्रव्यप्राप्ति और द्रव्यक्षय होवै, परदेश जाना पड़े तथा उस वर्षमें उस मनुष्यकी कान्ति जाती है ॥ ९७ ॥

पीडनंहिवपुषोऽपिचरोषोयोषयासहकृशत्त्वविशेषः ॥  
पुण्यकर्मणिनृणामणुबुद्धिर्धर्मधामसमवर्तितमश्चेत् ॥ ९८ ॥



अर्थ—यदि तम ( राहु ) धर्म ( नवम ) धाममें स्थितहो तो शरीरमें पीडा, स्त्रीके साथ निशेध, शरीरमें विशेष दुर्बलता, सत्कर्ममें बुद्धिकी न्यूनता होवै ॥ ९८ ॥

अवनिनायकतोभयमद्भुतन्निजजनैस्सहदेहनि-  
पीडनम् ॥ धनविनाशनमादिशतेभृशंबततमो-  
दशमोदयसंस्थितः ॥ ९९ ॥

अर्थ—यदि तम ( राहु दशमस्थानमें स्थितहो तो राजासे अद्भुत भयहो, अपने जनोकरके सहित देहमें पीडा हो और बारंवार धनका विनाशहो ॥ ९९

आरोग्यतावेभवबुद्धिवृद्धिर्नीचाज्जनांचापिभवे-  
दवाप्तिः ॥ सुखानिनित्यंखलुकापिनीनांसिंही-  
सुतेलाभगतेनितान्तम् ॥ ३०० ॥

अर्थ—यदि सिंहीसुत ( राहु ) लाभ ( एकादश ) स्थानमें हो तो आरोग्यता, वैभव और बुद्धिकी वृद्धि हो, नीच जनसेभी लाभहो, तथा स्त्रीको नित्य सुख होवै ॥ ३०० ॥

धनव्ययस्स्वीयजनेषुपीडा रिपूदयोभूपमयोप-  
लब्धिः ॥ कान्तातिचिन्ताकुलचित्तवृत्तिर्व्ययेऽ  
धिवासस्तमसोयदिस्थात् ॥ १ ॥

॥ इति राहु भावफलानि ॥

अर्थ—यदि तम ( राहु ) व्यय ( द्वादश ) स्थानमें निवास करता होतो धनका नाश, बन्धुजनोमें पीडा, शत्रुओंकी वृद्धि, राजासे भयप्राप्ति, स्त्री-सम्बन्धी अतिचिन्तासे चित्तमें व्याकुलता होवै ॥ १ ॥

॥ यह राहुका भावफल कहा ॥

केतुभावफलः

शिखीलग्नयःस्याद्भयव्यग्रताचरिषोर्भीश्वचिन्ता-



भवेद्वाजकष्टम् ॥ शिरोर्तिस्तथामानभंगोजनस्य  
करोत्येवनेत्रेचयोषित्सुपीडा ॥ २ ॥

अर्थ—जो शिखी ( केतु ) लग्नमें स्थितहो तो मनुष्यको भय और विकलता हो और शत्रुसे भयहो, मनमें चिन्तारहे, राजासे कष्ट होवै, शिरमें पीडा तथा मानभंग, नेत्र और स्त्रीको पीडा होवै, केतु यह फल करताहै ॥ २ ॥

कुटुम्बगश्चेद्यदिकेतुरब्देभूपाद्भयं हानिकरो धना-  
नाम् ॥ नेत्रोदरव्याधिभयार्तिदोषाञ्जनापवादं-  
प्रकरोति दुःखम् ॥ ३ ॥

अर्थ—वर्षमें यदि केतु कुटुम्ब ( धनस्थान ) में होतो राजासे भय और धनकी हानि करताहै, नेत्र और उदरमें रोग, भय, दुःख, मनुष्योंमें अपवाद दुःख प्रगट करताहै ॥ ३ ॥

यदिशिखीचतृतीयगृहस्थितः प्रकुस्तेपशुवाहनजंसुखम् ॥  
धनसुतंनरराजसमंजनं स्वजनपीडनमाशुकरोतिवै ॥ ४ ॥

अर्थ—यदि शिखी ( केतु ) तीसरे घरमें स्थितहो तो पशु ( गौआदि, ) वाहन ( घोडा आदि सवारी ) का सुख करताहै, और धन व पुत्रका सुख देताहै, तथा मनुष्यको राजाके समान करताहै, और अपने बन्धुजनोमें पीडा शीघ्र उत्पन्न करताहै ॥ ४ ॥

चतुर्थेशिखीमानसेव्यग्रतास्यात्कफार्तिस्तथा-  
वायुपीडाचदुःखम् ॥ भयंवाहनेभ्यस्तथाभूष-  
पक्षाद्विदेशेभ्रमंवत्सरेऽसौकरोति ॥ ५ ॥

अर्थ—यदि चौथे घरमें शिखी ( केतु ) विद्यमानहो तो मनमें दुःख हो, कफसे पीडा हो, तथा वातप्रकोपसे पीडा और दुःख होवै, वाहनसे भय, तथा राजपक्षसे भय, विदेशमें भ्रमण, उस वर्षमें होवै केतु यह फल करताहै ॥ ५ ॥



स्वोच्चस्ववेशमास्तगनीचशत्रुहृदादिवर्गस्थितखेचरा-  
णाम् ॥ बलाबलत्वादिविचार्यसम्यक् प्रोक्ताऽनु-  
सारेणफलं वदेत् ॥ १४ ॥ खेचारिणांभावफला-  
नियानितानीहकल्प्यानिदशासुतेषाम् ॥ १५ ॥

अर्थ—अपने उच्च, अपनी राशि, अस्त, नीचराशि, शत्रुराशि और अ-  
पने हृदा आदि वर्गमें स्थित ग्रहोंका बलत्व निर्बलत्व आदि विचारकर उ-  
सके अनुसार भलीभांति ( न्यून अधिक ) फल कहै ॥ १४ ॥ ग्रहोंका जो  
जो भावफल कहा गया सो फल उन उन ग्रहोंकी दशामें कहना, यहां  
इस ग्रन्थमें मुदादशाको प्रधान माना है, इस कारण यहां मुदादशामें फल  
कहना ॥ १५ ॥

## अरिष्टविचारः

वृथाफलंहायनजंचयस्मान्नजीवनंहायनरिष्टयोगात् ॥  
रिष्टानितस्मादिहसम्प्रवक्ष्ये पूर्वैर्विधिज्ञैःकथितानि-  
यानि ॥ १६ ॥

अर्थ—जिस अरिष्ट फलसे वर्षका शुभफल वृथा होजाताहै, और जिस  
अरिष्टयोगसे जीवनमें सन्देह उत्पन्न होजाताहै, उस अरिष्ट फलका विचार  
करना परमावश्यकहै, इस कारण यहां ( इस ग्रन्थमें ) पूर्वाचार्योंने जिस  
अरिष्टको कहाहै उन्हीं अरिष्टफलोंको मैं भलीभांति वर्णन करताहूँ ॥ १६ ॥

देवेज्यासुरपूजिताहैतरुचौ नीचैऽथचेच्चन्द्रमाना  
नानारोगमयंवियोगबहुलं स्याद्धर्षकालेनृणाम् ॥

आयुःस्थानपतिस्तनौतनुपतिःसंस्थोयदानैधने  
नन्वेतौखलखेचरेक्षितयुतौशस्त्रेणमृत्युप्रदौ ॥ १७ ॥

अर्थ—यदि वर्षकालमें बृहस्पति और शुक्र बलहीनहों, चन्द्रमा नीचरा-



शिका हो, तो अनेक रोगोंका भयहो, और वियोगहो और यदि आयु ( अष्टम ) स्थानका स्वामी लग्नमेंहो, लग्नका स्वामी निधन ( अष्टम ) स्थानमें हो, पापग्रहकी दृष्टिहो अथवा पापग्रहयुक्तहो तो शस्त्रसे मृत्यु जानना ॥ १७ ॥

दिनकरकरलुप्तौजन्मलग्नेन्धिहेशौदिनपतियुतदृष्टौरिष्टदौतौभवेताम् ॥ जननसमयलग्नादष्टमं वर्ष लग्नं युतमथमुथहशेनेक्षितं रिष्टहेतुः ॥ १८ ॥

अर्थ—यदि लग्नका स्वामी और मुंथाका स्वामी ये दोनों सूर्यके कारणसे अस्तहों अथवा सूर्यकी दृष्टिमें हों तो अरिष्टकारक होतेहैं, और यदि जन्म-लग्न वर्षलग्नसे आठवें स्थानमें पड़े और मुंथास्वामीसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें हो तोभी अत्यन्त अरिष्ट जानना ॥ १८ ॥

निधनतनुमदारिप्रान्त्यगशीतरश्मिर्नहिगुरुयु-  
तदृष्टौरिष्टकृत्सम्प्रदिष्टः ॥ यदि कुजयुतदृष्टः कष्ट  
दोवह्निशस्त्रैर्दिनकरतनयेनात्त्यन्तवातप्रकोपः ॥ १९ ॥

अर्थ—यदि शीतरश्मि ( चन्द्रमा ) निधन ( अष्टम ) तनु ( लग्न ) मर ( सप्तम ) अरि ( षष्ठ ) प्रान्त्य ( द्वादश ) इनमेंसे किसी स्थानमें हो और बृहस्पतिसे युक्त अथवा दृष्ट नहीं होवै, तो अरिष्टफल करनेवाला कहना और यदि मंगलसे युक्त वा दृष्टहो तो अग्नि और शस्त्रसे कष्टदायक जानना और यदि शनिसे युक्त वा दृष्टहोतो अत्यन्त क्रेशदायक वातपीडा होवै ॥ १९ ॥

क्षमासुतेक्षितयुतस्तनुभर्तास्यान्मृत्तिस्थितिकरो  
मृत्तिकर्ता ॥ सूर्यलिप्तकिरणौधिषणज्ञौशस्त्रपी  
डनकरौहिनराणाम् ॥ २० ॥

अर्थ—यदि मंगलकी दृष्टि वा मंगलसे युक्त होकर लग्नका स्वामी अष्टम-



स्थानमें हो तो मृत्युयोग जानना और यदि सूर्यके कारण अस्त होकर बुध वा गुरु अष्टम स्थानमें होवै तो शस्त्रसे पीडा होवै ॥ ३२० ॥

होराक्रूराभ्यन्तरेचान्तरेयंकुर्याद्वारागारमप्येवम  
त्र ॥ रिष्फारिस्थैरर्थरन्ध्रोपगैर्वापापैरिष्टंश्रेष्ठधी  
भिःप्रदिष्टम् ॥ २१ ॥

अर्थ—यदि होरा ( लग्न ) क्रूरग्रहोंके अन्तरमेंहो अर्थात् पापकर्तरी योग, और सप्तमस्थानभी पापग्रहोंके अन्तरमेंहो तो गृह और स्त्री विषयक विघ्न होवै, और यदि पापग्रह रिष्फ ( द्वादश ) अरि ( षष्ठ ) अर्थ ( द्वितीय ) रन्ध्र ( अष्टम ) स्थानमेंहो तोभी अरिष्ट जानना ॥ २१ ॥

चेदिन्थिहापापयुताषडष्टव्ययोपगाहेतिद्वुताश  
भीतिम् ॥ करोतिवर्षेरविनन्दनेनयुतेक्षितावाप  
वनप्रकोपम् ॥ २२ ॥

अर्थ—यदि गुंथा पापग्रहसे युक्त होकर षष्ठ, अष्टम और व्यय ( द्वादश ) स्थानमें स्थितहो तो शस्त्र और अग्निसे भयहो और यदि शनैश्चरसे युक्त वा दृष्टहो तो उस वर्षमें वातप्रकोप अवश्य होवै ॥ २२ ॥

मदननिधनबन्धुप्रान्त्यशत्रुस्थितावाजननसमय  
लग्नादिन्थिहाऽब्देष्टमस्था ॥ खलगगनतलस्थे  
युक्तदृष्टांतिरिष्टं जनयतिशुभदृष्टोत्पन्नरिष्टाल्प  
तास्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ—यदि जन्मलग्नसे मदन ( सप्तम ) निधन ( अष्टम ) बन्धु ( चतुर्थ ) प्रान्त्य ( द्वादश ) शत्रु ( षष्ठ ) स्थानमें स्थितहो और अब्द ( वर्ष ) में अष्टमस्थानहो, और पापग्रहोंसे युक्त दृष्टहो तो अत्यन्त अरिष्टफल उत्पन्न कर-  
ताहै और यदि शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो उत्पन्न अरिष्ट न्यून जानना ॥ २३ ॥



कामिनीभवनगस्तुहिमांशुर्लग्नपौष्टिपतिर्यदि-  
संस्थः ॥ द्वादशेद्विषितथायुधिरिष्टस्यान्मृतौच-  
तनुपौष्ट्यहेशः ॥ २४ ॥

अर्थ—यदि हिमांशु ( चन्द्रमा ) कामिनीभवन ( सप्तमस्थान ) में हो और यदि लग्न स्वामी और अष्टमस्वामी द्वादश ( बारहवें ) तथा द्विषि ( छठे ) स्थानमें स्थितहो युद्धमें अरिष्टहो और यदि लग्नेश व मुथहेश अष्टम होतो अरिष्ट जानना ॥ २४ ॥

लग्नेश्वरोवामुथरेश्वरोवा रन्ध्रेश्वरोगौरकरात्त-  
नोर्वा ॥ षष्ठाष्टमान्त्योपगतःकरोति रिष्टम्पु-  
रणैर्गणकैःप्रदिष्टम् ॥ २५ ॥

अर्थ—लग्नस्वामी वा मुथहस्वामी वा चन्द्रमा अथवा लग्नसे अष्टमस्था-  
नका स्वामी यदि षष्ठ, अष्टम वा द्वादशस्थानमें स्थित होतो अरिष्ट फल  
करताहै. यह प्राचीन गणकोंने कहाहै ॥ २५ ॥

रात्रीश्वरेभास्करमण्डलस्थे षष्ठेव्यथेवामृतिभाव  
संस्थे ॥ त्रिदोषतोऽसौबहुभिःप्रकारैःकरोतिरिष्टं  
विविधन्दशायाम् ॥ २६ ॥

अर्थ—यदि रात्रीश्वर ( चन्द्रमा ) भास्करमण्डलस्थहो अर्थात् अस्तंग-  
तहो और छठे, बारहवें अथवा आठवें स्थानमें स्थितहो, तो ऐसा चन्द्रमा  
अपनी दशामें त्रिदोष ( वात, पित्त, कफ ) द्वारा बहुत प्रकारसे अनेक  
अरिष्ट करताहै अर्थात् नाना प्रकारका कष्ट देताहै ॥ २६ ॥

लग्नाधिनाथेमृतिभावसंस्थे भौमेक्षितेतस्यच  
भावसंस्थे ॥ अस्तङ्गतेवाष्टगुजेबुधेवा शस्त्रा-  
भिघातोबहुधापदश्च ॥ २७ ॥



अर्थ—यदि लग्नाविनाथ ( लग्नस्वामी ) मृतिभाव ( अष्टमस्थान ) में स्थित हो और मंगलकी दृष्टि हो और उसके भावमें स्थित अथवा अस्तंगत शुक्र वा बुध हो तो शत्रुसे अभिघात ( पीडा ) और बहुत प्रकारकी आपदा होवै ॥ २७ ॥

वर्षलग्नपरन्ध्रेशौ चतुर्थनिधनान्त्यगौ  
मुथहासंयुतौयत्र तद्वर्षे मरणप्रदौ ॥ २८ ॥

अर्थ—वर्षलग्नस्वामी, अष्टमस्वामी, यह दोनों मुंथासहित चौथे, आठवें वा बारहवें स्थानमें हों, जिस वर्षमें यह योग हो उस वर्षमें मरण होवै ॥ २८ ॥

चेज्जन्मनाथो विबलो मृतीशौ लग्नङ्गतो भास्कर  
दृष्टि मूर्ति ॥ शस्त्राभिघातो बहुधा च कष्टं कुष्टं श-  
रीरे मरणेन तुल्यम् ॥ २९ ॥

अर्थ—यदि जन्मलग्नका स्वामी बलहीन हो और अष्टमस्वामी लग्नमें हो, लग्नपर सूर्यकी दृष्टि हो तो शत्रु लगनेसे बहुत कष्ट हो और शरीरमें मरण-समान कष्टदायक कुष्ट होवै ॥ २९ ॥

मुथहा लग्ननाथौ चेत्सूर्यमण्डलमागतौ ॥  
दृष्टातौ सूर्यपुत्रेण सर्वनाशकरौ मतौ ॥ ३३० ॥

अर्थ—यदि मुंथा और लग्नस्वामी ये दोनों सूर्यमण्डलमें प्राप्त हों अर्थात् अस्तंगत हों और दोनोंपर सूर्यपुत्र ( शनि ) की दृष्टि हो तो सर्व नाश करनेवाले ज्ञानने ॥ ३३० ॥

जन्माधिपः क्रूरयुतस्तदानीन्महार्थनाशं मरणेन तुल्यम् ॥  
बलोत्करक्रूरा खगा बलेन हीना यदा सौम्यगृहास्तदानीम् ॥  
दुःखं महाव्याधिकृतं च वैरम्परस्परं शत्रुविमर्दनञ्च ॥ ३१ ॥

अर्थ—जन्मलग्नस्वामी यदि पापग्रहयुक्त हो तो धनकी महाहानि हो, मरण-



तुल्य केशहो और यदि क्रूर ग्रह पूर्ण बलवान् हो और शुभग्रह बलहीनहों, तो दुःख और महान्वाधि करे, परस्पर वैर और शत्रुनाश करे ॥ ३१ ॥

दैत्येन्द्रपूज्योयदिनीचसंस्थः सुरेज्यपूज्योरिषुभागवती ॥  
स्वप्नेऽपिसौख्यं न हि वर्षमध्ये वृथा फलं हायनजन्तदानीम् ॥ ३२ ॥

अर्थ—यदि दैत्येन्द्र पूज्य ( शुक्र ) नीच राशिमें स्थितहो और सुरेज्यपूज्य ( गुरु ) शत्रुराशिमें होतो उस वर्ष बीच स्वप्नेंभी सुख नहींहो और वर्षसे उत्पन्न शुभ फलभी उस समय वृथा होजावै ॥ ३२ ॥

अस्तंगतौ भार्गवसोमपुत्रौ नीचस्थितो रात्रिपतिर्यदा-  
स्यात् ॥ तदा वियोगं मरणं च कष्टं शरीरपीडामतुलां-  
करोति ॥ ३३ ॥ जन्मलग्नाद्धर्षलग्नमष्टमं यदि जायते ॥  
तस्मिन् वर्षे भवेत्पीडा मृत्युः पापयुतेक्षणात् ॥ ३४ ॥

अर्थ—जो भार्गव ( शुक्र ) सोमपुत्र ( बुध ) अस्तंगतहो और रात्रिपति ( चन्द्रमा ) नीच राशि ( वृश्चिक ) में हो तो वियोग, मरण और कष्ट, शरीरको महापीडा करैहै ॥ ३३ ॥ यदि जन्म लग्नसे वर्षलग्न आठवेंहो और पापग्रहयुक्त वा दृष्ट होतो उस वर्षमें मृत्युसदृश पीडा होवै ॥ ३४ ॥

हृद्देश्वरो हायनलग्ननाथः समान्त्यगः क्रूरयुतः करोति ॥  
मृतिदशायां शुभयुक्तदृष्टिः फलं तदूर्ध्वं प्रतिमं करोति ॥ ३५ ॥  
नीचे त्रिराश्याधिपतिः परस्य गेहेऽथ पापेन विलोकिताश्च ॥  
कार्यस्य नाशं कुर्वते ह्यकस्माद्दैरं च कष्टं परतस्सदैव ॥ ३६ ॥

अर्थ—हृद्देश्वर ( बुध ) हायनलग्नस्वामी पापग्रहयुक्त सातवें वा बारहवें स्थानमें स्थितहो तो मृत्यु करताहै, शुभयुक्त वा दृष्ट हो तो अपनी दशामें आधा फल करताहै ॥ ३५ ॥ त्रिराशिपति नीचमें अथवा शत्रुघरमें हो



और पापग्रह देखताहो तो अकस्मात् कार्यका नाश करताहै और वैर व शत्रुद्वारा सदैव कष्ट देताहै ॥ ३६ ॥

परेन्थिहेशोरविमण्डलस्य यदातदेवंप्रवदन्ति-  
सन्तः ॥ षष्ठाष्टमस्थेननुवर्षनाथे महाभयंभूतकृ  
तंचकष्टम् ॥ ३७ ॥ क्रूरःखगोयोऽस्तमितोऽथ-  
वक्रीक्रूरस्यवर्गेयदिलग्ननाथः ॥ क्रूरस्तदाभग्न-  
मुशान्तितज्ञाः पुरंचवैरंपुरतोविनाशम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—मुंथा स्वामी यदि शत्रुघरमें हो और रविमंडलमें ( अस्तंगत ) होतो भी पूर्वोक्त फल कहना, वर्षस्वामी छठे, आठवें स्थानमें स्थितहोतो प्राणि-  
योद्वारा महाभय और कष्ट होवै ॥ ३७ ॥ जो क्रूर ग्रह अस्तहो, वक्री हो  
अथवा क्रूर ग्रहके वर्गमें यदि लग्न स्वामी हो तो वह क्रूर ग्रह रोग करताहै  
और पुरसे शत्रुता व पुरसे विनाश करताहै ऐसा पण्डितजन वर्णन  
करतेहैं ॥ ३८ ॥

लग्नेशेऽष्टमगेषेशेतनुस्थेवाकुजेक्षिते ॥ ज्ञजीव-  
योरस्तगयोः शस्त्रघातोविपन्मृतिः ॥ ३९ ॥  
अब्दलग्नेशरन्ध्रेशौव्ययाष्टहिबुकोपगौ ॥ मथु-  
हासंयुतौमृत्युप्रदौतद्धातुकोपतः ॥ ३४० ॥

अर्थ—लग्नेश आठवें हो वा अष्टमेश लग्नमें हो मंगलकी उसपर दृष्टिहो  
और बुध, गुरु अस्तंगतहोतो किसी हथियारके लगनेसे विपत् और मृत्यु  
प्राप्त होवै ॥ ३९ ॥ वर्षलग्नेश और अष्टमेश ये दोनों बारहवें, आठवें वा  
चौथे घरमें हो और मुंथायुक्त होतो जो ग्रह अरिष्टजनकहों उनके धातु-  
कोपसे मृत्यु होवै ॥ ३४० ॥

यहां सम्बन्ध पापग्रहोंकी कुछ संज्ञा वर्णन करतेहैं ॥

मार्गवेन्दूजलचरौज्ञजीवौग्रामचारिणौ ॥ राहुक्षितिज-  
मन्दार्कान्ध्रुवतेऽरण्यचारिणः ॥ ४१ ॥ प्रभातमिन्दुज-



गुरुमध्यान्हंरविभूमिजौ ॥ अपराण्हंभार्गवेन्दू सन्ध्या-  
 म्प्रमदभुजङ्गमौ ॥ ४२ ॥ पित्तप्रभाकरक्षमाजौ श्लेष्मा-  
 भार्गवशीतगू ॥ जगुरुसमधातूचपवनौराहुमन्दगौ ॥  
 ॥ ४३ ॥ कुजाकौकडुकौजीवोमधुरस्तुवरोबुधः ॥ क्षा-  
 राम्लौचन्द्रभृगुजौ तीक्ष्णौसूर्यार्कनन्दनौ ॥ ४४ ॥ स्थू-  
 लइन्दुःसितः खण्डश्चतुरस्रौकुजोष्णगू ॥ वर्तुलसौम्य-  
 धिषणौ दीर्घौशनिभुजंगमौ ॥ ४५ ॥ ( खण्डोर्ध्वचन्द्रा-  
 कारः ) ॥ विप्रौशुक्रगुरुक्षत्री कुजाकौशुद्रइन्दुजः ॥ इ-  
 न्दुर्वैश्यस्मृतोम्लेच्छौ सैहिकेयशनैश्चरौ ॥ ४६ ॥ र-  
 क्तवर्णःकुजःप्रोक्तो धिषणःकनकद्युतिः ॥ शुकपिच्छ-  
 समस्सौम्यो गौरकान्तिरनुष्णगुः ॥ ४७ ॥ युवाकुज-  
 शिशुस्सौम्यश्शशिशुकौचमध्यगौ ॥ मार्तण्डमन्ददेवे-  
 ज्यफणिनःस्थविराग्रहाः ॥ ४८ ॥ जीवमंगलमार्तण्ड  
 मुशान्तिपुरुषान्बुधाः ॥ सोमसोमजमन्दाहिभृगुपुत्रा-  
 हियोषितः ॥ ४९ ॥ शुक्रेचन्द्रेभवेद्रौप्यं बुधेस्वर्णमुदाह-  
 तम् ॥ गुरोरनयुतंहेमसूर्येभौक्तिकमुच्यते ॥ ३५० ॥  
 भौमेत्रपुशनौलौहंराहावस्थीनिकीर्तयेत् ॥ जीवेन्दु-  
 सौम्यशुक्राःस्युः सौम्याःक्रूराग्रहाःपरे ॥ क्षीणेन्दुःक्रूर-  
 युक्तोज्ञो राहुःक्रूराःप्रकीर्तिताः ॥ ५१ ॥ त्वङ्मांससो-  
 म्णांमन्दोथं मज्जास्थनांभास्करःप्रभुः ॥ कुजोरक्तस्यशु-  
 क्रस्य भार्गवोमेदसः शशी ॥ ५२ ॥ रविशुक्रोधरासूनुः  
 स्वर्भानुःसूर्यनन्दनः ॥ चन्द्रोबुधःसुरंगुरुः प्रागादिदि-



गधीश्वरः ॥ ५३ ॥ सूर्येन्दुजीवाःसत्त्वाख्या ज्ञशुक्रौ-  
चरजोगुणौ ॥ स्वर्भानुभौमरविजास्तमोगुणमयाः-  
स्मृताः ॥ ५४ ॥

अर्थ—शुक्र, चन्द्रमा जलचारी, बुध, गुरु, ग्रामचारी और राहु, मंगल शनि, सूर्य ये वनचारी कहेहैं ॥ ४१ ॥ बुध, गुरु ये दोनों प्रातःकालमें सूर्य, मंगल ये दोनों मध्याह्नमें, शुक्र, चन्द्र ये दोनों अपराह्न कालमें, शनि, राहु ये दोनों सन्ध्यासमयमें बली जानना ॥ ४२ ॥ सूर्य, मंगल पित्तधातुके और शुक्र, चन्द्रमा श्लेष्म ( कफ ) धातुके तथा बुध गुरु सम धातु ( वात, पित्त, कफ ) के, व राहु, शनि वातधातुके स्वामी जानना ॥ ४३ ॥ मंगल, सूर्य कटुक रसके और बृहस्पति मधुर रस, तथा बुध कसैला रस और चन्द्रमा, शुक्र, क्षार ( खारी ), अम्ल ( खट्टा ) रस और सूर्य, शनि तीव्र रसके स्वामी हैं ॥ ४४ ॥ चन्द्रमा स्थूल, शुक्र खंड, मंगल, सूर्य चौकोन, बुध, बृहस्पति वर्तुलाकार, शनि, राहु दीर्घाकार हैं ॥ ४५ ॥ खण्ड अर्ध चन्द्राकारको कहतेहैं, शुक्र, गुरु ब्राह्मण और मंगल, सूर्य क्षत्री, बुध, शूद्र और चन्द्रमा वैश्य, तथा राहु, शनैश्वर म्लेच्छसंज्ञक जानना ऐसा कहा है ॥ ४६ ॥ लालरंग मंगलका कहाहै, बृहस्पतिका सुवर्णकी झलककेसमान और बुधका सुआकी पुच्छके समान, तथा चन्द्रमाकी गोरी कांति कही है ॥ ४७ ॥ मंगल युवा और बुध बालक, चन्द्रमा, शुक्र मध्यम, सूर्य, शनि, गुरु, राहु ये ग्रह वृद्धअवस्थावाले जानना ॥ ४८ ॥ गुरु, मंगल, सूर्य इनको पण्डित जन पुरुषग्रह कहतेहैं और चन्द्र, बुध, शनि, शुक्र स्त्रीग्रहहैं ॥ ४९ ॥ शुक्र, चन्द्रमें चांदीका, बुधसे सुवर्णका विचार करना. गुरुसे रत्नसहित सुवर्ण, सूर्यसे मोतीका विचार कहाहै ॥ ५० ॥ मंगलसे रांगा, शनि से लोहा, राहुसे हड्डीका विचार करना, गुरु, चन्द्र, बुध, शुक्र ये ग्रह शुभसंज्ञकहैं, शेष सूर्य, मंगल, शनि, क्रूर ग्रहहैं और क्षीण चन्द्रमा,



कूर ग्रहयुक्त बुध, राहु येभी कूर ग्रह केहैं ॥ ५१ ॥ त्वचा, मांस, राम इनका शनि स्वामी हैं. मज्जा हड्डीका सूर्य प्रभुहैं. रक्तका मंगल वीर्यका शुक्र, मेदाका चंद्रमा स्वामीहैं ॥ ५२ ॥ सूर्य पूर्व दिशाका, शुक्र अग्निकोणका, मंगल दक्षिण दिशाका और राहु नैऋत्यकोणका और शनि पश्चिम दिशाका, तथा चन्दमा वायव्य दिशाका, बुध उत्तर दिशाका, बृहस्पति ईशान दिशाका स्वामी जानना ॥ ५३ ॥ सूर्य, चन्द्र, गुरु ये सतोगुणी, बुध, शुक्र ये दोनों रजोगुणी, तथा राहु, मंगल, शनि ये तीनों तमोगुणभय केहैं ॥ ५४ ॥ इस प्रकार ग्रहोंकी संज्ञा वर्णन करी, जहां जैसा प्रयोजन बुद्धि अनुसार जानपड़े वहां सूक्ष्मबुद्धिसे विचार करलेना. विस्तारभयसे प्रयोजनको सविस्तर नहीं लिखाहै ॥

जन्मलग्नाधिपोऽवीर्यो मृतीशोब्देऽद्रिगोयदा ।

सूर्यदृष्टो मृतिं दत्ते कुष्ठकण्डू तथापदः ॥ ५५ ॥

अस्तंगौ मुन्थहालग्ननाथौ मन्देक्षितौ यदा ॥

सर्वनाशो मृतिः कष्टमाधिव्याधिभयं रुजः ५६ ॥

अर्थ—जन्मलग्नस्वामी वर्षकालमें निर्बलहो, और वर्षलग्नसे अष्टम स्थानका स्वामी जो वर्षमें सातवें घरमेंहो, सूर्यकी दृष्टिहो तो प्राणीको मृत्यु, कुष्ठ, खाज, तथा आपदाको देताहै ॥ ५५ ॥ जो मुखहास्वामी वर्षलग्नस्वामी ये दोनों अस्तंगतहों और शनिकी दृष्टिहो तो सर्व ( स्त्री धन पुत्रादिकका ) नाश, मृत्यु, कष्ट, आदि ( चिन्ता ) व्याधि ( रोग ) भय, रोग ये होतेहैं ॥ ५६ ॥

कूरवीर्याधिकाः सौम्या निर्बलारिपुरन्धगाः ॥

तदाधिव्याधिभीतिः स्यात्कलिहानिस्तथावि

पत् ॥ ५७ ॥ नीचेशुक्रोगुरुः शत्रुभागे सौरव्ल

वोऽपि न ॥ लग्नेशेऽष्टमगेष्टेशे तनौ वामृतिमा-

दिशेत् ॥ ५८ ॥



अर्थ- जो क्रूरग्रह अधिकबलीहों और शुभग्रह बलहीनहों, छठे, आठवें स्थानमें स्थितहो तो आधि, व्याधि, कलह, हानि, तथा विपत्त यह अशुभ-फल होतेहैं ॥ ५७ ॥ शुक्र नीच राशिमें हो, गुरु, शत्रु, नवांशकमें हो तो लवमात्रभी सुख नहीं मिले, तथा वर्षलग्नस्वामी आठवें हो अथवा आठवें घरका स्वामी लग्नमें हो तो उस प्राणीकी मृत्यु कह देवै ॥ ५८ ॥

निर्बलौघर्मविच्छेसौ दुष्टखेटास्तनौस्थिताः ॥ लक्ष्मी-  
श्विरार्जितानश्येद्यदिशक्रोऽपिरक्षिता ॥ ५९ ॥ नीचेच-  
न्द्रेऽस्तगाःसौम्या वियोगःस्वजनैस्सहः ॥ शरीरपीडा-  
मृत्युर्वासाधिव्याधिभयंदुतम् ॥ ६० ॥ जन्मन्यष्टमगः  
पापो वर्षलग्नरुगाधिदः ॥ चन्द्राऽब्दलग्नपौनष्टबलौ-  
चेत्स्यात्तदामृतिः ॥ ६१ ॥

अर्थ-वर्षमें नवम और द्वितीय भावकास्वामी, यदि बलहीनहो, पाप-ग्रह लग्नमें स्थितहोवै, तो बहुतकाल की संचय कीहुई लक्ष्मीका नाशहो यदि इन्द्रभी रक्षा करै तोभी उस लक्ष्मीकी रक्षानहीं होसकतीहै ॥ ५९ ॥ यदि चन्द्रमा नीच राशिमें हो और शुभग्रह अस्तंगतहो, तो अपने जनोसे वियोग होवै, अथवा शरीरपीडासं मृत्यु होवै, अथवा वह प्राणी चिन्ता व रोगयुक्त होकर शीघ्र भयको प्राप्त होवै ॥ ६० ॥ जन्मकालमें जो पापग्रह आठवें स्थितहो वह पापग्रह वर्षलग्नमें होनेसे रोग और चिन्ताको देताहै और चन्द्रमा तथा वर्षलग्नस्वामी हीन बली हो अथवा चन्द्रराशि और वर्षलग्न-स्वामी ये दोनों पंचवर्गी बलसे नष्ट बलीहों तो उस प्राणीकी मृत्यु होवै ॥ ६१ ॥

अब्दलग्नाद्ज्वनूव्ययार्थस्थौरुजातदा ॥ एवंवर्षाब्दल-  
ग्नेशजन्मेशैरपिबन्धनम् ॥ ६२ ॥ क्रूरान्वितेक्षितयुतो  
शानिमेन्ध्याधिव्याधिप्रदाजनुषिरिण्फसुखारिन्द्रे ॥



घूनेचवर्षतनुनैधनगामृतिसादत्तेखलेक्षितयुतेत्यपिचि  
न्त्यमार्यैः ॥ ६३ ॥

॥ इत्यरिष्टविचारः ॥

अर्थ—वर्षलग्नसे मार्गी व वक्रीग्रह वर्षलग्नसे बारहवें व दूसरे हों अर्थात् बारहवें मार्गी पापग्रहहो और दूसरे स्थानमें वक्री पापग्रहहो तो शरीरमें रोगोंकी उत्पत्ति होतीहै, इसी प्रकार वर्षस्वामी और वर्षलग्नस्वामी, व जन्मलग्नस्वामी ये पापी होकर दूसरे बारहवें स्थितहों तो बन्धन ( जेलखाना ) होवें ॥ ६२ ॥ अब एकश्लोकसे मुथहाकृत अरिष्टयोग कहतेहैं, कि जिसके वर्षमें पापग्रहयुक्त मुंथाको शनि देखताहो वा युक्तहो तो उसको चिन्ता व रोग करतीहै, तथा मुंथा जन्ममें बारहवें, चौथे, छठे, आठवें और सातवें इनमेंसे कहीं होकर वर्षलग्नसे आठवें घरमें होवें और विशेषकरके उसको पापग्रह देखतेहों वा युक्तहों तो वह मुंथा उस प्राणीकी मृत्युको देतीहै, यहभी श्रेष्ठ पण्डितों करके चिन्तवन करना ॥ ६३ ॥ यह अरिष्टफलविचार कहा आगे अरिष्टभंगयोग लिखतेहैं ॥

## अरिष्टभंगविचारः

रिष्टानिचेद्धर्षफलेभवन्ति तदावृथावर्षविचार-  
णास्यात् ॥ सभङ्गरिष्टस्यविनिर्णयोतशिष्या-  
वबोवायनिरूप्यतेत्र ॥ ६४ ॥

॥ अब अरिष्टभंग लिखतेहैं ॥

अर्थ—यदि वर्ष फलमें अरिष्ट ग्रह होतेहैं तो वर्ष विचारवृथा होताहै इस कारण यहां शिष्योंके बोध निमित्त अरिष्ट भंगका निरूपण किया जाताहै ॥ ६४ ॥

केन्द्रत्रिकोणोपगताशुभाख्यास्सलग्ननाथा-



निधनंनिहन्युः ॥ केन्द्रैसुरेन्द्रस्यगुरुर्बलीया  
नमङ्गलम्भङ्गलमातनोति ॥ ६५ ॥

अर्थ—जो शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० अथवा त्रिकोण ५।९ स्थानमें हो और लग्नस्वामी साथमें होतो सम्पूर्ण अरिष्ट दोष नाशकरै. और बृहस्पति यदि केन्द्रमें हो और बलवान् हो तो अमंगलको दूर करके मंगल ( शुभफल) का विस्तार करै ॥ ६५ ॥

होरायाश्चनिशाकराद्विविचरः क्रूरस्त्रिलाभारिगो नूनं-  
पापमपाकरोतिबुद्बुलंवाललग्नपालीवली ॥ सौम्यैस्स-  
म्मिलतःकरोतिदलनं रिष्टस्यदृष्टस्तथा सौम्यैर्जन्म-  
निदेवदेवसचिवोवाभार्गवःकेन्द्रगः ॥ ६६ ॥

अर्थ—यदि लग्न वा चन्द्रमासे क्रूरग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छठे स्थित होतो निश्चय अरिष्टका नाश करताहै, अथवा लग्नस्वामी वलीहो तोभी अरिष्टका नाश जानना, अथवा शुभ ग्रहों करके युक्तहो, तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्टहो अथवा जन्ममें बृहस्पति, शुक्र केन्द्र १।४।७।१० में हो तोभी अरिष्टका नाश जानना, ॥ ६६ ॥

विलग्नपे सौम्ययुतेक्षितेतद्विलीयतेयत्खलुदि-  
ष्टमुक्तम् ॥ बलोपपन्नेनतनुस्थितेन निहुयते-  
वाक्पतिनापिरिष्टम् ॥ ६७ ॥

अर्थ—यदि वर्षलग्नका स्वामी शुभग्रहों करके युक्तहो अथवा शुभग्रहों करके देखा जाताहो तो पूर्वोक्त अरिष्ट फलको नाश करताहै और बलवान् बृहस्पति लग्नमें स्थितहो तोभी अरिष्ट फलको दूर करताहै ॥ ६७ ॥

वर्षप्रवेशेवचसामधीशे लग्नेविलग्नै जनिलग्न-  
नाथः ॥ पराक्रमायाम्बुगतःकरोति क्षितिंरि-  
पूणांद्रविणोपलब्धिः ॥ ६८ ॥



अर्थ—यदि वर्षप्रवेशसमय गुरु वर्षलग्नमेंहो और जन्मलग्नका स्वामी लग्नमेंहो, अथवा तीसरे, ग्यारहवें चौथे स्थानमेंहो तो शत्रुनाश और द्रव्य-  
लाभ करैहै ॥ ६८ ॥

लग्नाधिपबलयुतः शुभेक्षितयुतोपिवा ॥ केन्द्रत्रि-  
कोणकोऽरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ ६९ ॥ गुरुः  
केन्द्रेत्रिकोणेवापापादृष्टःशुभेक्षितः ॥ लग्नचन्द्रेन्थि-  
हाऽरिष्टंविनाशयार्थसुखंदिशेत् ॥ ३७० ॥

अर्थ—यदि लग्नस्वामी बलीहो और शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्तहो, केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ में प्राप्तहो तो सम्पूर्ण अरिष्टताको नाशकरै और सुख व धनको देवै ॥ ६९ ॥ गुरु केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ५।९ में हो उसको पापग्रह न देखताहो, और शुभग्रह देखताहो तो ऐसा गुरु, लग्न चन्द्रमा व मुंथा इन तीनोंसे उत्पन्न अरिष्ट फलको नाशकरके पीछेसे धन व सुखको देताहै ॥ ३७० ॥

सुखं स्वामियुतंसद्भिर्दृष्टंसौख्ययशोऽर्थदम् ॥ लग्नेतृ-  
तीयेऽथगुरुर्जन्मेद्सौख्यार्थदःसुखे ॥ ७१ ॥ शुक्र-  
ज्ञजीवाहद्वेस्वे पापाश्रयायगतायदि ॥ स्वबाहुबल-  
तोहेमसुखकीर्तिनरोश्रुते ॥ ७२ ॥

अर्थ—यदि चतुर्थ स्थान अपने स्वामीसे युक्तहो, और शुभ ग्रहोंकसे देखा जाताहो, तो सौख्य, यश व धनका देनेवाला होताहै, तथा बृहस्पति लग्नमें अथवा तीसरे स्थानमेंहो, वा चतुर्थस्थानमें जन्मलग्नका स्वामी विद्यमानहो तो सौख्य व धनका देनेवाला होताहै ॥ ७१ ॥ यदि शुक्र, गुरु अपने हृदयमेंहो, और पापग्रह तीसरे, ग्यारहवें स्थानमें स्थितहों तो मनुष्य अपने बाहुबलसे सुवर्ण, सुख, कीर्तिको प्राप्त होताहै ॥ ७२ ॥

लग्नेद्युनेशस्तनुगःसुरेज्यःकूरैदृष्टः शुभमित्रद-



ष्टः ॥ रिष्टं निहन्त्य यशःसुखामिं दिशेत्स्वपा-  
केनृपतिप्रसादम् ॥ ७३ ॥

अर्थ—वर्षलग्नमें सप्तम स्थानका स्वामी स्थित हो, उसी लग्नमें गुरुहो और दोनों ( सप्तमेश व बृहस्पति ) को पापग्रह न देखते हों किंतु शुभग्रह व मित्रग्रह देखते हों तो अरिष्ट दूर करके अपनी दशामें राजाकी प्रसन्नतासे धन, यश व सुखकी प्राप्ति इन सब शुभ फलोंको देते हैं ॥ ७३ ॥

बलान्वितो धर्मधनाधिनाथो क्रूरैरदृष्टौ तनु-  
गौयदास्ताम् ॥ राज्यं गजाश्चाम्बररत्नपूर्णं  
रिष्टस्थनाशोन्यतुल्यशश्च ॥ ७४ ॥ यदा स-  
वीर्यो मुथहाऽधिनाथो लग्नाधिपोजन्मवि-  
लग्नपोवा ॥ केन्द्रत्रिकोणाय धनस्थितास्ते  
सुखार्थहेमाम्बर लाभदाः स्युः ॥ ७५ ॥

अर्थ—जिसके वर्षमें नवम व धनस्थानका स्वामी बली होकर पापग्रहों करके नहीं देखते हुये लग्नमें स्थित हों तो वह मनुष्य हाथी, घोड़े, कपड़े व रत्नोंसे परिपूर्ण राज्यको प्राप्त हो और अरिष्टनाश होकर लोकमें अतुल यशको प्राप्त होवे ॥ तथा जो मुंथास्वामी वा वर्षलग्नस्वामी, जन्मलग्नस्वामी ये तीनों बलिष्ठ होकर केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ ग्यारहवें और दूसरे इन स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें स्थित हों तो सुख, धन, सुवर्ण और वस्त्रको देते हैं ॥ ७५ ॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैकेन्द्रत्रिकोणाय गतैश्चसौम्यैः ॥  
रत्नाम्बरस्वर्णयशस्सुखामिर्नाशोप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः ॥ ७६ ॥

अर्थ—जो तीसरे, छठे, ग्यारहवें पापग्रह हों और केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ ग्यारहवें शुभग्रह हों, तो रत्न, वस्त्र, सुवर्ण, यश, सुखकी प्राप्ति हो, अरिष्टका नाश हो और शरीरकी पुष्टि हो ॥ ७६ ॥



सुथहायाउपचये सूर्योवाधरणीसुतः ॥ तस्मिन्वर्षे  
शुभंसर्वं सफलं भद्रदायकम् ॥ ७७ ॥ चन्द्ररा-  
शीश्वरोलग्नराशिपश्वखलैर्वियुक् ॥ रिष्टं तदा  
लयं याति यथान्याधिस्सदौषधैः ॥ ७८ ॥

अर्थ—सुंथासे उपचय ३६।१०।११ स्थानमें सूर्य अथवा धरणीसुत  
( मंगल ) हो तो उस वर्षमें सम्पूर्ण शुभफल मंगलदायक जानना ॥ ७७ ॥  
चन्द्रमाकी राशिका स्वामी और लग्नराशी ये दोनों पापग्रहोंसे रहितहों तो  
अरिष्टफल नाशहोजाताहै, जैसे रोग औषधियोंसे दूर हो जाताहै ॥ ७८ ॥

यदिशुभाशुभकण्टककोणगा यदथवाङ्गपतिर्ब-  
लिकेन्द्रगः ॥ हरतिष्टगणङ्गणपार्चनं तनुभृ-  
तान्नमतामिवविघ्नजम् ॥ ७९ ॥

अर्थ—यदि वर्षमें शुभग्रह पापग्रह केन्द्र १।४।७।१० कोण ५।९ हों अ-  
थवा लग्नस्वामी बलवान् होकर केन्द्र १।४।७।१० में हो, तो अरिष्टफलको  
नाश करनेवाले जानने, जैसे गणेशजीका पूजन व नमन मनुष्योंके समस्त  
विघ्नोंको नाश करैहै ॥ ७९ ॥

जीवेविलग्नतनुपस्सएव त्रैराशिकेशोनभवत्यरिष्टम् ॥  
मन्दस्तनोःकेन्द्रगतस्सएव मुशलहेशस्त्वशुभंविन-  
श्येत् ॥ ३८० ॥

अर्थ—गुरु वर्षलग्नमेंहो और वही वर्षलग्नमेंहो, और त्रैराशिपहो, तो अ-  
रिष्ट नहीं होताहै और शनि वर्षलग्नसे केन्द्र गतहो वही नवांशेशहो तो  
अशुभफलको विनाश करताहै ॥ ३८० ॥

यदिखलोऽब्दतनोऽशशिनोऽथवा त्रिरिपुलाभगतः  
सबलःशुभैः ॥ बलिभिरीक्षितयुक्चतथाहरेदशुभमा-  
मयमायजंभयम् ॥ ८१ ॥

अर्थ—यदि पापग्रह वर्षलग्नसे अथवा चन्द्रमासे तीसरे छठे, ग्यारहवें



स्थानमें हो और शुभग्रह बलवान् हो और बलवान् ग्रहोंकरके दृष्ट तथा युक्तहों तो वह पापग्रह अथवा शुभग्रह सम्पूर्ण अरिष्टफल और रोग व रोगसे उत्पन्न भयको हरण करताहै ॥ ८१ ॥

तनुपतिर्यदिवाऽब्दपतिः शुभश्शुभविलोकितयुग्यदि-  
केन्द्रगः ॥ भृगुसुतोऽथहरेदशुम्बहु कुलमशीलमि-  
वार्यजनैस्तुतम् ॥ बलिभिसौम्यखगेप्यबलेऽशुभेभ-  
वतिसर्वशुभन्तनुधारिणाम् ॥ ८२ ॥

॥ इत्यरिष्टभंगविचारः ॥

अर्थ—यदि लग्नस्वामी वा वर्षस्वामी शुभग्रहहो और शुभग्रहसे दृष्ट व युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें प्राप्तहो अथवा शुक्र शुभग्रह दृष्ट युक्त होकर केन्द्रमें हो तो अरिष्टको नाश करताहै जैसे श्रेष्ठ जनोकरके प्रशंसित दुःशील कुल सुधर जाताहै और शुभग्रह बली व पापग्रह बलहीनहों तो तनुधारियोंके शुभफल होताहै ॥ ८२ ॥

॥ यह अरिष्टभंगविचार लिखा ॥

## मासप्रवेशदिनप्रवेशसाधन.

मासप्रवेशोऽतिशयेनसूक्ष्मफलं प्रवक्तुन्नहिशक्यतेऽत्र ॥

तेनाऽधुनासद्गुणकोपयुक्तं तत्साधनेऽहंकथयाम्युपायम् ८३

अर्थ—मासप्रवेशमें अतिशय करके सूक्ष्म फल विनामास स्पष्ट किये नहीं कहा जासकता है, इस कारण अब सज्जनपण्डितोंके उपकार हेतु मैं मासप्रवेशसाधनोपाय वर्णन करता हूँ ॥ ८३ ॥

एकैकभान्वितजनुर्भवमानुतुल्ये भानौऽभवत्स्फुटतरःखलुमासवेशः ॥ एकैकभागयुतमानुसमानभागैःघस्रप्रवृत्तिरथतन्नयनं वदामः ॥ ८४ ॥

अर्थ—अब मासप्रवेश दिनप्रवेश साधनवर्णन करतेहैं एकएकराशि जो-



इनेसे जन्मकालीन सूर्यके समान सूर्यमें स्पष्ट मास प्रवेश होता है, अर्थात् वर्षप्रवेश समयमेंही पहले मासका प्रवेश होता है, वहां जन्मकालीन सूर्यके समान सूर्य रहते हैं, यदि दूसरे मासका प्रवेश जानना होवै, तो उसमें एकराशि जोड़ देवै, उसीसे अंश कला विकलाओंका समत्त्व रहेगा, राशिके युक्त होतेपर उस पूर्वके बराबर सूर्य जिस समयमेंहो तभी दूसरेमासका प्रवेश होता है, ऐसेही एकएक बढ़ानेपर आगेआगेके मासोंका प्रवेश जानो और एकएक अंश जोड़नेसे सूर्य समान अंश कला, विकलाओंसे दिनप्रवेश होता है, अर्थात् अंशोंमें एकएक जोड़ता जावै, उसीसे कला, विकलाओंका समत्त्व जिस समयमें हो तभी दिनका प्रवेश होता है अब मासप्रवेश, दिनप्रवेशके ल्यावनेका प्रकार कहते हैं ॥ ८४ ॥

मासद्युवेशजदिवाकरयोस्समीपंपक्तिस्थसूर्यविव  
रस्यकलाजवामा ॥ लब्धदिनाद्यवधिवारमुखे  
धनर्णहीनेऽधिकेऽवधिरवौसमयःस्फुटःस्यात् ॥ ८५ ॥

अर्थ—मासप्रवेश और दिनप्रवेशसे उत्पन्न सूर्यके समीप पंक्तिमें स्थित सूर्यमें अंतरकी कलाओंकोसूर्यकी कलात्मक गतिसे भाग लेनेपर लब्ध दिनादिकको अवधि ( पंक्ति ) स्थ वारादिमें धन ऋण चालनके अनुसार घटाने बढ़ानेपर मासप्रवेश व दिनप्रवेश होता है, इसका उदाहरण आगे लिखते हैं ॥ ८५ ॥

**मासप्रवेश दिनप्रवेश साधनोदाहरण.**

अब मासप्रवेश और दिनप्रवेशका उदाहरण लिखते हैं.

वर्षप्रवेशसमय स्पष्ट सूर्य राश्यादि ६।२२।१९।३३ यही प्रथम मास प्रवेश रहा, अब दूसरा मासप्रवेश बनाना है तो एकराशि जोड़नेसे दूसरे मासके प्रवेशका सूर्य राश्यादि ७।२२।१९।३३ यह भया, इसके समीपवर्ती मार्ग शुक्र तृतीया भौमवारकी अवधि ( पंक्ति ) में स्थितसूर्य राश्यादि ७।२०।५१।४२ है, यहां पंक्तिस्थ सूर्यसे मास सूर्य आगे है इस कारण



कारण पंक्तिस्थ सूर्यको घटाया अर्थात् दोनोंका अन्तर किया, तो धनात्मक अंशादि १२७।५१ हुये, अब १ अंशको ६० से गुणके २७ जोड़ दिये तो कलात्मक अंक ८७ हुये, ८७ को ६० से गुणा तो ५२२० विकलात्मक अंक हुये ५१ विकला जोड़ दिये तो ५२७१ विकलात्मक भाज्य अंक जानना और पंक्तिस्थ सूर्यकी गतिविगति ६१।११ यहां ६१ को ६० से गुणाकर ११ जोड़देनेपर विकलात्मक ३६७१ यह भाजक हुआ, इसी करके भाज्यमें भाग लिया तो लब्ध १ इसको वार समझो, शेष १ ६०० को ६० से गुणा तो ९६००० हुये इसमें भाजकसे भाग लिया तो लब्ध २६ घड़ी जानो, शेष ५५४ को ६० से गुणा करनेपर ३३२४० हुये इसमें भाजकसे भाग लेनेपर लब्ध ९ पल जानो, अब यह विचार करोकि मासप्रवेशके सूर्यसे पंक्तिस्थ सूर्य कमतीहै इस कारण लब्ध वारादि १२।६।९ को धन चालन समझकर, पंक्तिस्थ वार आदि ३।४२।५९ में जोड़ दिया तो ५।०९।८ हुये यह मासप्रवेश वारादि भया, अर्थात् मार्ग शुक्ल पंचमी गुरुवार ९ घटी ८ पलपर द्वितीयमासका प्रवेश संसिद्ध हुआ, इसी प्रकार अन्य तीसरा चौथा आदि मास बनाना, और ऐसेही एक एक अंश बढ़ाते जाना, और कला समान रहें पूर्वोक्त घटी पलको संसिद्ध करते जाना, तो दिनप्रवेश बनते जावेंगे, मासप्रवेश, दिनप्रवेश, कालमें ग्रहों और भावोंको साधन करै और पंचवर्गोबल साधन करके पंचाधिकारी रखकर मासपति दिनपतिभी जानकर पूर्वोक्त अनुसार फल कहना, मासप्रवेश व दिनप्रवेशका सविस्तर फलग्रन्थ विस्तार भयसे यहां नहीं लिखागया, और मासदशा प्रकार पूर्व लिखचुके हैं यहां अन्य प्रकारभी लिखदेतेहैं ॥

अर्कन्नागताऽब्देस्वीयजन्मभागतमासयोः संख्या ॥  
दृग्नांसंयोज्य नन्दतष्टेक्रमान्मासेदशास्थात् ॥ ८६ ॥

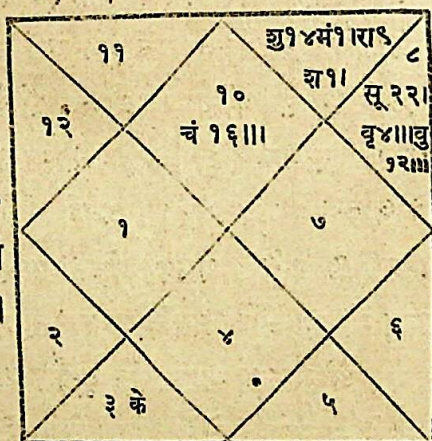
अर्थ-बाह्यो गुणा किये हुये गताब्दमें अपना जन्मनक्षत्र व गतमास



संख्यामें दो घटाकर जोड़ देनेसे नवका भाग लेनेपर शेष मास दशा सूर्यादि गणनासे होती है, यहां दूसरे मासमें दशा ल्यावनाहै तो गताब्द संख्या ३६ को बारहसे गुणा किया, ४३२ हुये फिर गतमास १ जन्मनक्षत्र उत्तरा-फाल्गुनीकी संख्या १२ मिलाय १३ में २ घटाय ११ को पूर्वोक्त ४३२ में जोड़ दिया तो ४४३ हुये इसमें ९ का भाग दिया तो शेष २ से दूसरी चन्द्र-माकी मासदशा हुई ॥ यह क्रम मासदशाका कहा, मासदशा प्रमाण आदि पूर्व लिख चुके हैं, दिनदशाका क्रम यहां ग्रन्थ बढ जानेके कारण नहीं लिखाहै ॥ ८६ ॥

### द्वितीय मास प्रवेशलग्नम्.

श्री सम्बत् १९५६ शाके १८०१  
मार्गैमासि शुक्ले पक्षे पंचम्यां तिथौ  
गुरुवासरेष्टम घट्यादि ९।८ सूर्यरा-  
श्यादि ७।२२।१९।३३ तदामकर ल-  
ग्नोदयेशगत १५ सप्तत्रिंशति तमे वर्षे  
द्वितीयमासप्रवेशः २ गतनासः॥ १ ॥



मासप्रवेश साधन करनेके उपरोक्त रीति बहुत श्रेष्ठ है और यद्यपि ग-णितसे सिद्ध करनेकी रीति सर्व मान्य है, तथापि जिन व्यक्तियोंको विशेष गणित नहीं आता, उनके लिये आगे मासप्रवेशसारणी लिखतेहैं, यह मास-प्रवेश सारणी एकदंशीय पंचांगपरसे मासप्रवेश साधन रीत्यानुसार बनाकर लिखीगई है, इस कारण पलोंमें कुछ अन्तर आवैगा सो विद्वानजन अपनी सूक्ष्म बुद्धिसे विचारकर हमारी इस अशुद्धिकी और ध्यान न देंगे और हमारे अपराध को क्षमाकरेंगे, क्योंकि साधारणश्रेणीके पण्डितोंकी प्रार्थनासे यह सारणी बनाकर लिखी गई है, कि जिनको गणितमें बहुतही कम अभ्यास है।



## मासप्रवेशसारणी.

| श्री ० | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  | ११  | १२  | १३  | १४  | १५  | १६  | १७  | १८  | १९  | २०  | २१  | २२  | २३  | २४  | २५  | २६  | २७  | २८  | २९  |
|--------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| श्रा:  | २   | २   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   | ३   |
| मे     | ५७  | ५८  | ५९  | ६०  | ६१  | ६२  | ६३  | ६४  | ६५  | ६६  | ६७  | ६८  | ६९  | ७०  | ७१  | ७२  | ७३  | ७४  | ७५  | ७६  | ७७  | ७८  | ७९  | ८०  | ८१  | ८२  | ८३  | ८४  | ८५  |
| ष      | १३  | १४  | १५  | १६  | १७  | १८  | १९  | २०  | २१  | २२  | २३  | २४  | २५  | २६  | २७  | २८  | २९  | ३०  | ३१  | ३२  | ३३  | ३४  | ३५  | ३६  | ३७  | ३८  | ३९  | ४०  | ४१  |
| स      | २६  | २७  | २८  | २९  | ३०  | ३१  | ३२  | ३३  | ३४  | ३५  | ३६  | ३७  | ३८  | ३९  | ४०  | ४१  | ४२  | ४३  | ४४  | ४५  | ४६  | ४७  | ४८  | ४९  | ५०  | ५१  | ५२  | ५३  | ५४  |
| म      | ३९  | ४०  | ४१  | ४२  | ४३  | ४४  | ४५  | ४६  | ४७  | ४८  | ४९  | ५०  | ५१  | ५२  | ५३  | ५४  | ५५  | ५६  | ५७  | ५८  | ५९  | ६०  | ६१  | ६२  | ६३  | ६४  | ६५  | ६६  | ६७  |
| मि     | ५२  | ५३  | ५४  | ५५  | ५६  | ५७  | ५८  | ५९  | ६०  | ६१  | ६२  | ६३  | ६४  | ६५  | ६६  | ६७  | ६८  | ६९  | ७०  | ७१  | ७२  | ७३  | ७४  | ७५  | ७६  | ७७  | ७८  | ७९  | ८०  |
| श्र    | ६५  | ६६  | ६७  | ६८  | ६९  | ७०  | ७१  | ७२  | ७३  | ७४  | ७५  | ७६  | ७७  | ७८  | ७९  | ८०  | ८१  | ८२  | ८३  | ८४  | ८५  | ८६  | ८७  | ८८  | ८९  | ९०  | ९१  | ९२  | ९३  |
| न      | ७८  | ७९  | ८०  | ८१  | ८२  | ८३  | ८४  | ८५  | ८६  | ८७  | ८८  | ८९  | ९०  | ९१  | ९२  | ९३  | ९४  | ९५  | ९६  | ९७  | ९८  | ९९  | १०० | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ |
| क      | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ |
| क      | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | १४९ | १५० | १५१ | १५२ | १५३ | १५४ | १५५ | १५६ | १५७ | १५८ | १५९ |
| सि     | १६१ | १६२ | १६३ | १६४ | १६५ | १६६ | १६७ | १६८ | १६९ | १७० | १७१ | १७२ | १७३ | १७४ | १७५ | १७६ | १७७ | १७८ | १७९ | १८० | १८१ | १८२ | १८३ | १८४ | १८५ | १८६ | १८७ | १८८ | १८९ |
| ह      | १९१ | १९२ | १९३ | १९४ | १९५ | १९६ | १९७ | १९८ | १९९ | २०० | २०१ | २०२ | २०३ | २०४ | २०५ | २०६ | २०७ | २०८ | २०९ | २१० | २११ | २१२ | २१३ | २१४ | २१५ | २१६ | २१७ | २१८ | २१९ |
| क      | २२१ | २२२ | २२३ | २२४ | २२५ | २२६ | २२७ | २२८ | २२९ | २३० | २३१ | २३२ | २३३ | २३४ | २३५ | २३६ | २३७ | २३८ | २३९ | २४० | २४१ | २४२ | २४३ | २४४ | २४५ | २४६ | २४७ | २४८ | २४९ |
| ला     | २५१ | २५२ | २५३ | २५४ | २५५ | २५६ | २५७ | २५८ | २५९ | २६० | २६१ | २६२ | २६३ | २६४ | २६५ | २६६ | २६७ | २६८ | २६९ | २७० | २७१ | २७२ | २७३ | २७४ | २७५ | २७६ | २७७ | २७८ | २७९ |



[illegible]



## सारणीपरसे मासप्रवेशसाधन.

सारणीपरसे मासप्रवेशसाधनकी रीती यह है, कि तीस अंश और मे-  
पादि बारहाराशि लिखी हैं, जिस राशिके जितने गतांश सूर्यके वर्षप्रवेशहों,  
उनके नीचेके वार घटी पलोंमें वर्षप्रवेशसमय वार घटी पलको जोड़नेसे  
द्वितीयमासप्रवेश वार घटी पल जानना, जैसे वर्षप्रवेश वारादि ३।३४।५९  
में तुलाके सूर्यके ३२ गत अंशके नीचेके वारादि १।३४।९ को युक्त किया  
तो ५।९।८ बृहस्पतिवारको घटी ९ पल ८ पर द्वितीयमास जानना ॥

## जन्मलग्नाद्वर्षलग्नज्ञान.

समाख्यात्रिनिघ्नाद्विधाशून्यरामैरवासंफलं  
चाद्धराशीषुयुक्तम् ॥ ततोभानुभिर्भक्तशेषेण  
वाच्यं ततो जन्मलग्नाद्भवेदब्दलग्नम् ॥ ८६ ॥

अर्थ—जन्मलग्नसे वर्षलग्नज्ञान वर्णन करते हैं, वर्तमान वर्षसंख्याको ती-  
नसे गुणाकरके दो स्थानमें स्थापित करना, प्रथम स्थानवालेमें तीसका  
भाग देकर लब्ध फल द्वितीय स्थानवाले अंकोंमें युक्त करदेना और बारहका  
भाग देकर शेष जो अंकहो उस संख्याकी लग्न जन्मलग्नसे गणना करनेपर  
होती है, अर्थात् शेष अंक जन्मलग्नसे गिनकर जो हो वह वर्षलग्न कहना,  
जैसे वर्तमान वर्ष ३७ को ३ से गुणाकिया तो १११ हुये इसको दो स्था-  
नमें रखवा, पहले वालेमें ३० का भाग देकर लब्ध फल ३ को दूसरे स्था-  
नवाले १११ में युक्त करनेपर ११४ हुये इसमें १२ का भाग दिया तो  
शेष ६ यहां जन्मलग्न मकर है, मकरसे छटी मिथुन वर्षलग्न हुई ॥ ८६ ॥  
परन्तु यह रीति सामान्य है, क्योंकि अंशोंकी न्यूनता व अधिकतासे एक-  
राशि आगे पीछेभी हो जाती है ॥ ८६ ॥



## पूर्ववर्षादाग्रिमवर्षप्रवेशसाधनः

शशीबाणचन्द्रैः कुरामैः खरामैर्युतं पूर्ववर्षोद्भववासराद्यम् ॥  
भवेदग्रिमो वर्षप्रवेशस्तदानीं तिथेर्योजितं शंकरैर्जायतेऽत्र ॥ ८७ ॥

अर्थ—अब पूर्ववर्षसे आगेके वर्षप्रवेशका साधन करते हैं, पूर्ववर्षके वार आदिकमें १।१५।३१।३० जोड़नेसे आगेवाली वर्षका वारादि होता है, अर्थात् वारमें १ और घटीमें ९५ पलोंमें ३१ और विपलोंमें ३० जोड़ देना, तिथिमें ११ जोड़ना, यहां योगमें १० नक्षत्रमें १० और लग्नमें ३॥ जोड़नेका मत किसी किसी पण्डितका है ॥ ८८ ॥ उदाहरण— पूर्ववर्ष वारादि ३।३४।५९ है, अब आगेका वर्ष इसीपरसे लियावना है तो वारादि १।१५।३१।३० युक्त करदिये, युक्त करनेपर ४।५०।३०।३० यह आगेका वर्षप्रवेश वारादि हुआ, अर्थात् सम्बत् १९५७ मार्गकृष्ण प्रतिपदा बुधवारको घटी ५० पल ३० विपल ३० पर आगेवाला वर्षप्रवेश हुआ, पूर्ववर्ष चतुर्थीगत पंचमीमें प्रवेश हुआ था तो ५ में ११ जोड़नेसे १६ सोलहवीं तिथि शुक्ल प्रतिपदासे गणनापर प्रतिपदा कृष्ण पक्षकी हुई, इसी दिन तुलाके सूर्यके २२ अंशगत हैं, योग आदिमें अंक जोड़नेका मत सामान्य है ॥ ८७ ॥

## प्रश्नोपरिवर्षप्रवेशसाधनः

जननसमयलग्नाज्ञातभावे सुधीभिर्विधिबद्धमलपृच्छा-  
काललग्नं प्रसाध्यम् ॥ शुभफलमशुभं वा कीर्तयेत्सर्व-  
मस्मान्निगदितवदुदाराच्छास्त्रबुद्धेर्विचारात् ॥ ८८ ॥

अर्थ—अब जिसका जन्मसमय ज्ञात न हो उसका वर्षसाधन प्रश्न लिखते हैं, कि यदि जन्मसमयकी लग्न अज्ञात हो, तो विधिपूर्वक प्रश्न